भारतीय गाय माता और भारतीय ज्योतिष एवं वास्तु

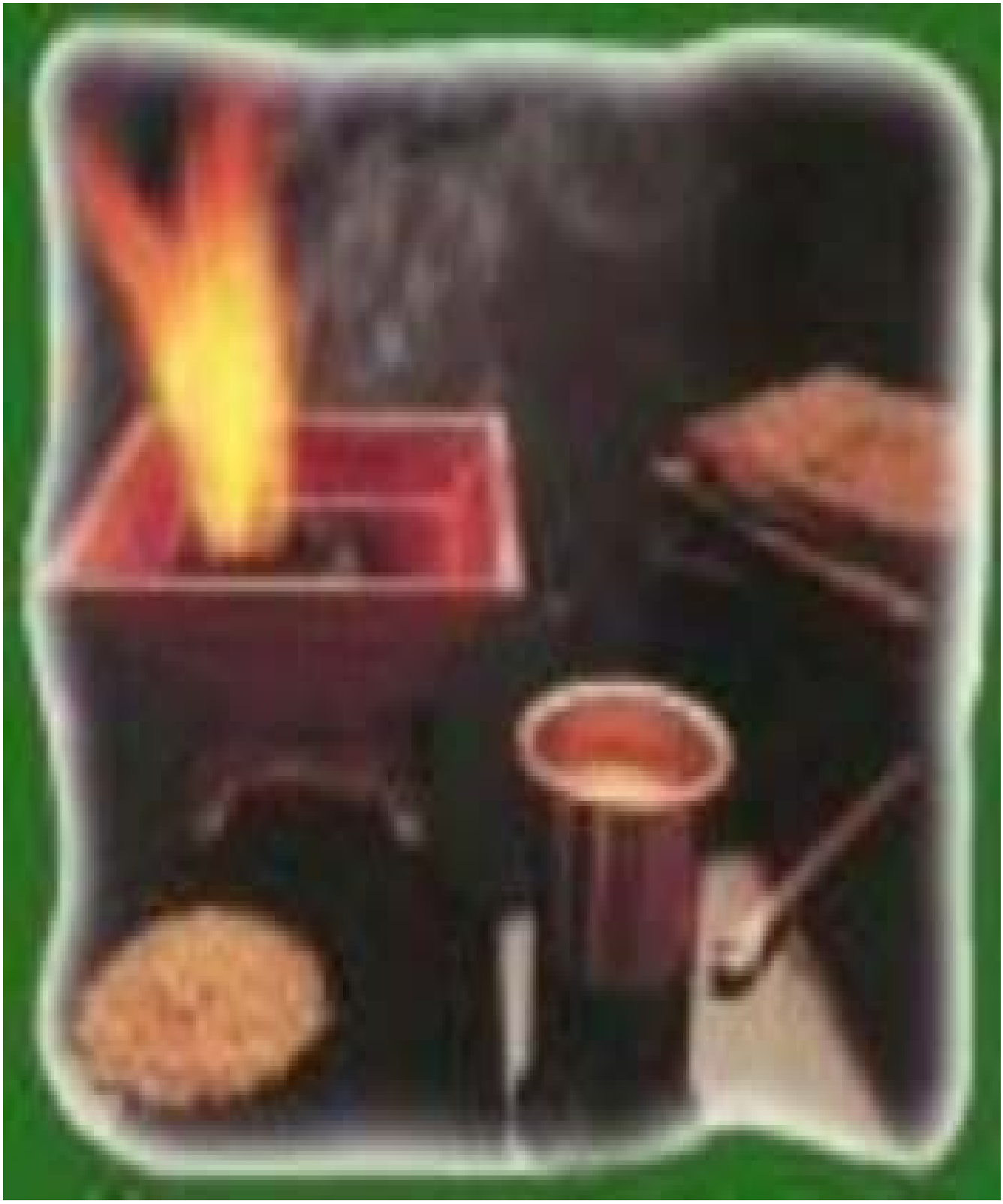

गोवंश सेवक सहदेव भाटिया
विद्युत अभियंता, योगाचार्य, प्राकृतिक चिकित्सक, महापंचगव्य चिकित्सक, विपश्यना, जीवन विद्या के जानकार 21 सी, जयराज कोम्पलेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग अहमदाबाद गुजरात 382415 मोबाइल 9662407242, 8733008557

वर्तमान समय तेजी से हो रहे परिवर्तनों का है. 2011 से परिवर्तन स्प-ट दिखाई दे रहे हैं. परिवर्तनों के कारण आज हर व्यक्ति परेशान है. हर किसी को अब अपने भवि-य के बारे में चिंता हो रही है. वर्तमान में हो रहे परिवर्तनों के कारण हर व्यक्ति संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन चाहता है. अपने आपको दूर रखकर व्यक्ति परिवर्तन चाहता है. गोवंश के सम्मान के कारण ही विश्व में भारत की पहचान है.

ज्योति-षों के द्वारा 100 सालों तक चलने वाले परिवर्तनों के बारे में बहुत पहले ही मानव को विस्तार से बता दिया गया है. आदिकाल से ज्योति-षों की गरिमा है.

100 सालों तक चलने वाले परिवर्तनों में ज्योति-षों की जिम्मेदारी सबसे अधिक होगी. ज्योति-ा की भूमिका बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है इसलिए ज्योति-ा की समाज में विशे-ा प्रति-ठा है.

समाज का हर व्यक्ति ज्योति-ा को आदर देता है. ज्योति-ा विशे-ा क्षमताएं रखता है क्योंकि ज्योति-ा ईश्वर का प्रतिनिधि है. ज्योति-ा ईश्वर की ज्योति को जानता है.

भूत का भार और भवि-य की चिंता के कारण ही व्यक्ति अपना वर्तमान बिगाड़ रहा है इसलिए ज्योति-ा पर समाज सबसे अधिक विश्वास करता है.

35 सालों के मेरे ज्योति-ा के अनुभव के कारण मेरे हस्तरेखा, मुखाकृति विज्ञान, हस्ताक्षर विज्ञान, भवि-यवक्ता जैसे अनेकों सोफटवेयर लोकप्रिय हुए हैं.

14 सालों से गोवंश के द्वारा नवग्रहों का समाधान को अंतरा-ट्रीय ज्योति-ा सम्मेलनों में विद्वान लोगों ने बहुत ही अधिक पसंद किया है. मेरे प्रयत्न को पदकों से सम्मानित कर प्रोत्साहित किया है. आकाशवाणी, दूरदर्शन, चेनल, इंटरनेट पर विश्व ने भी साथ दिया है.

मैं गोवंश के द्वारा नवग्रहों का संपूर्ण समाधान करने के लिए यह पुस्तक ओफसेट पर लाने की तैयारियां कर रहा हूं. मेरा लक्ष्य विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पुस्तक पहुंचाने का है.

भारत में हिंदी बोलने वालों की संख्या बहुत ही अधिक है इसलिए हिंदी में पुस्तक प्रस्तुत की जा रही है. विश्व में अंग्रेजी में पुस्तक प्रकाशित कर गोवंश के महत्व को ज्येति-षों के माध्यम से रखने का है. गोवंश विश्व में हर देश में मौजूद है.

वीडियो सीडी गोवंश के द्वारा नवग्रहों के प्रभावों के संपूर्ण समाधान करने के लिए सरल हिंदी में तैयार की जा रही है. वीडियो सीडी की अधिक से अधिक प्रतियां कर लोगों को दें.

आप मेरी प्रस्तावना पढ़ कर यदि कोई भी प्रश्न मुझसे करना चाहते हैं तो आपका स्वागत है एवं मुझे आपके प्रश्न के उत्तर देने में बहुत ही अधिक प्रसन्नता होगी.

मेरी पुस्तक को अपने सभी मित्रों तथा रिश्तेदारों को भेट देकर मेरे सहयोगी बन सकते हैं. आप अपने व्यक्तिगत विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग कर सकते हैं.

मैं नवग्रहों के समाधान को गोवंश से करने के लिए एक प्रतियोगिता कौन बनेगा गोवंश सेवक? तैयार कर रहा हूं. प्रत्येक प्रश्न के 4 वैकल्पिक उत्तर मेरे द्वारा तैयार किये गये हैं. प्रतियोगी को सही उत्तर का चयन करना है. प्रतियोगिता बहुत ही अधिक लोकप्रिय है. आप चाहें तो प्रतियोगिता को आयोजित कर सकते हैं. विजेताओं को अच्छे पुरुस्कारों से सम्मानित कर सकते हैं.

प्रतियोगिता की पूर्व तैयारियां करने के लिए कामधेनु साहित्य विस्तार से उपलब्ध है. कामधेनु साहित्य की सूची उपलब्ध है.

वर्तमान में पुस्तक में ज्योति-ा के वस्तुनि-ट प्रश्नों को सबसे पहले प्रस्तुत कर रहा हूं.

हमारे समस्त प्रकाशन

- कामधेनु इतिहास कामधेनु के इतिहास पर वीडियो सीडी तैयार की गयी है. साहित्य के रुप में श्रीमद भागवत, नारद संहिता के आधार पर प्राचीनतम जानकारी दी गयी है.

- कौन बनेगा गोवंश सेवक? 320 पन्नों की 8000 वस्तुनि-ठ प्रश्नों पर आधारित एकमात्र लोकप्रिय प्रतियोगिता भारत के 10 लाख बच्चों में की जा रही है 1 जनवरी 2013 से चेनल पर प्रसारण. फोटोस्टेट स्पायरल बायडिंग में उपलब्ध है. सहयोग राशि 1000 रु.

  विश्व प्रसिद्ध प्रजातियां, दूध, गोबर गोमूत्र पर 200 200 प्रश्नों की वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

- कामधेनु का दूध अमृत है में मौजूद 5300 अदभुत एवं दिव्य रसायनों का वैज्ञानिक आधार पर वर्णन किया गया है. दूध के रसायनों पर वीडियो सीडी 1 1 घटे की 4 तैयार की गयी हैं.

  श्री चंद्रभान जी मोटवानी अध्यक्ष पीपुल फोर एनिमल्स सिरोही राजस्थान के द्वारा चेनल पर प्रसरित करवाने के लिए हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी में दूध के विज्ञापन पर 15, 30, 45, 60 सैकेंड की वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

- दूग्ध कल्प स्वर्गीय श्री विठठलदास मोदी जी आरोग्य मंदिर गोरखपुर के अनुसार गोमाता के अमृत के समान धारो-ण दुग्ध से मानव का कम से कम 40 दिनों में तथा अधिकतम 180 दिनों का काया कल्प कर निरोगी तथा दीर्घायु जीवनयापन करना संभव है. 64 पन्नों की पुस्तक प्रकाशित की गयी है.

- गोवंश पालन से रोजगार दूध के उत्पादों पर 1 घंटे समय अवधि की वीडियो सीडी उपलब्ध है तथा साहित्य में मलाई, क्रीम, योगहर्ट, मीठी दही, केसर दूध, मेवा दूध, मसाला दूध, तक्र यानी छाछ, मही, मसाला छाछ, लस्सी, मक्खन, धी, पंचगव्य तथा महापंचगव्य घी, जड़ीबूटी वाले घी, श्रीखंड, बासुंदी, खूरचन, रसमलाई, मिल्ककेक, दूध का हलवा, छप्पनभोग, दूध पावडर, कंडेन्स मिल्क, चोकलेट, मिल्कशेक, दूधपाक, खीर, आइसक्रीम, कुल्फी, छन्ने की मिठाइयां रसगुल्ला, संदेश, खोवे से बनने वाली मिठाइयों पेड़ा, बरफी, गुलाबजामुन, कालाजामुन, काजू बरफी, मोहनथाल, कलाकंद, रबड़ी, पर डेयरी टेक्नोलोजी के पाठयक्रम के अनुसार संपूर्ण जानकारी दी गयी है.

- गोमय वस्ते लक्ष्मी गोवंश के गोबर से तैयार होने वाले सभी उत्पादों पर श्री सुनील अग्रवालजी के द्वारा वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

  गोबर के रस, गोमूत्र, दूध, दही, घी से पंचगव्य तथा 24 जड़ीबूटियां मिलाकर महापंचगव्य घी, दांत साफ करने का मंजन, अंगराग पावडर, चर्मरोग निवारक साबुन, नहाने का साबुन, बाल काले रखने का साबुन, अगरबत्ती, नवग्रह धूप, देवधूप, मच्छर मारने की कोइल, डिस्टेम्पर, चर्मरोग निवारक मलहम, फेस पैक, क्रीम, दर्द निवारक तेल, आंखों के दर्द निवारक बूंद, अग्निहोत्र के कंडे, हवन सामग्री, बर्तन मांजने की राख, गोपाल नस्य, के बनाने की संपूर्ण जानकारी दी गयी है.

- जैविक खेती कामधेनु के गोबर से नेडेप खाद, केचुआ खाद, मटका खाद, तुरत फुरत खाद, समाधि खाद, इंदौर विधि खाद, चार गढढा विधि खाद, गोबर गैस स्लरी, सींग खाद 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508 बनाने की संपूर्ण विधि दी गयी है.

  एग्रो इंडिया पुणे महारा-ट्र के द्वारा जैविक खेती पर 1 घंटे की वीडियो सीडी तैयार की गयी है.
  नेडेप खाद पर पुसद महारा-ट्र के द्वारा एक वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

भोपाल के जेल में श्रीकृ-ण गोशाला में 2800 कैदियों के द्वारा 40 एकड़ भूमि पर जैविक खेती पर वीडियो सीडी तैयार की गयी है.

- **कामधेनु का संतुलित जैविक आहार** गोवंश को नियमित रुप से दिये जाने वाले संतुलित आहार में कामधेनु के लिए आवश्यक पौ-टिक रसायनों का वैज्ञानिक विश्ले-ाण किया गया है. वीडियो सीडी उपलब्ध है.

- **गोबर गैस** गोबर से पर्यावरण को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए गांव में सामुहिक गोबर गैस बनाने के लिए संयंत्र की संपूर्ण जानकारी, सरकारी अनुदान पर पूरे भारत के सभी राज्यों की जानकारी दी गयी है. अंग्रेजी तथा गुजराजी में वीडियो सीडी के माध्यम से किसानों को गोबर गैस के लिए प्रेरित किया गया है.

- **अंकोल तथा अंकोल वाटसी** 7000 साल पुरानी लंबे सींग वाली भारतीय नस्ल 2000 सालों से आफ्रीका में जंगलों में आदिवासियों के द्वारा सुरक्षित रखा गया है तथा अमेरिका में अधिकतम वसा के करण विकास किया गया है. वीडियो सीडी उपलब्ध है. कामधेनु डायरेक्ट्री के मुख पृ-ठ पर अंकोल नस्ल के सांढ का चित्र दिया गया है. इंटरनेट पर विश्व का ध्यान आकर्ि-त करने के कारण अब चर्चा में हे. वर्तमान में भारत में लुप्त हो गयी है जिसके दूध में 10 प्रतिशत वसा है दुर्लभ रंगीन चित्रों सहित साहित्य तैयार है.

- **गीर**

वर्तमान में सबसे अधिक गीर लगभग 70 लाख ब्राजील में मौजूद है. ब्राजील की अर्थव्यवस्था गीर गोवंश पर पूरी तरह से आधारित हे. ब्राजील में गीर के विकास करने के लिए जो प्रयत्न किये गये हैं वह वहां की भा-ा में 22 खंडों में डीवीडी में बताया गया है. सहयोग राशि 300 रु. 1992 में एक दिन में रुपा नाम की गीर गाय ने 120 किलो दूध देकर गीनिज बुक ओफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवाया है.

श्री घनश्याम जी व्यास भूनेश्वरी पीठ गोंडल के द्वारा गीर पर वीडियो सीडी तैयार की गयी है. मदर इंडिया फादर ब्राजील अंग्रेजी में 50 रु. मूल्य पर 100 रु. में गुजराती में गीर पर पुस्तक का प्रकाशन किया गया है. गीर पर संपूर्ण जानकारी रंगीन चित्रों के साथ में साहित्य के रुप में उपलब्ध है.

- **कांकरेज** ब्राजील में गुजराती के नाम से यह नस्ल दूध के लिए विकसित की गयी है. ब्राजील में सबसे अधिक यह नस्ल मोजूद हे. गुजरात में भूज के आसपास कांकरेज नस्ल बैलों के लिए लोकप्रिय है.

- **साहीवाल** 19 देशों में दूध के उत्पादन, खेती करने, परिवहन करने के लिए यह नस्ल विकसित की गयी है. भारत में साहीवाल नस्ल वर्तमान में खतरे में है. पाकिस्तान के साहीवाल क्षेत्र में पायी जाने वाली यह नस्ल अधिक दूध देने के लिए पाली जाती है.

- **लाल सींधी** पाकिस्तान में सिंध में पायी जाने वाली लाल रंग की यह नस्ल वर्तमान में तेजी के साथ में भारत में समाप्त होने की कगार पर है. वीडियो सीडी तथा रंगीन चित्रों के साथ में साहित्य उपलब्ध है. कम खाकर अधिक दूध देने के कारण लाल सींधी विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय है. दूध, खेती, परिवहन करने के लिए 33 देशों में पायी जाती है.

- **हरियाणा** भारत की सबसे लोकप्रिय नस्ल परिवहन, खेती तथा दूध के लिए उपयोगी है. वीडियो सीडी तथा साहित्य उपलब्ध है. विश्व में हरियाणा नस्ल की विशे-ा पहचान है. हरियाणा की सर्वश्रे-ठ नस्ल कतल करने के कारण खतरे में है.

- **थारपारकर** जैसलमेर राजस्थान को थारपारकर नस्ल के कारण ही विश्व में स्वर्णभूमि के नाम से पहचाना जाता है. वीडियो सीडी तथा साहित्य उपलब्ध है. वर्तमान में भारत में थारपारकर नस्ल समाप्त हो रही है. विश्व में थार मरुस्थल में विकसित यह नस्ल दूध बढ़ाने के लिए लोकप्रिय है.

थारपारकर के कारण विश्व में गोवंश का सम्मान हुआ है.

- नागोरी घोड़े के समान हवा में बात करने वाले बैल विश्व में अपनी तेज चाल के लिए प्रसिद्ध हें. वीडियो सीडी तथा साहित्य उपलब्ध है. राजस्थान में नागोर में पाये जाने वाले बैल भारत में समाप्त होने पर हैं.

- वैचूर विश्व की सबसे कम खाकर मात्र 1 किलो धान का पुवाल सबसे अधिक वसा अधिकतम वसा 8 प्रतिशत वाला अधिकतम 3.5 लीटर चमत्कारिक औ-धि गुणों से परिपूर्ण दूध देने वाली विश्व की सबसे कम भार मात्र 100 किलो तथा सबसे कम उंचाई मात्र 91 सेन्टीमीटर वाली गाय जो बकरी से आधे खर्च में पल रही है निरोगी रहकर निरन्तर सक्रिय रहती है. साक्षात कामधेनु भारत में लुप्त होने की स्थिति में है इंटरनेट पर वैचूर कंजरवेशन ट्रस्ट के द्वारा विश्व का ध्यान आकर्-ित किया गया है. रंगीन चित्रों सहित संपूर्ण साहित्य तथा रामचंद्रपुरम के द्वारा तैयार अंग्रेजी में वीडीयो सीडी 100 रु. में उपलब्ध है.

- लाल कंधारी

- अमृतमहाल हैदरअली तथा टीपू सुल्तान के समय में 60,000 अमृतमहाल नस्ल तोपों के उबड़ खाबड़ रास्ते पर सबसे तेज परिवहन करने के लिए मोजूद थी. मैसूर राज्य के गन पैक बैल सवायी चाल के कारण विश्व में प्रसिद्ध थे. अंग्रेजी में वीडियो सीउी तैयार की गयी है.

  श्री रामचंद्रपुरम मठ में अमृतमहाल नस्ल को बचाने के लिए कर्नाटक में श्री राघवेश्वर भारतीजी के द्वारा 20 लाख लोगों को एकत्रित कर 2007 में 9 दिनों का विश्व गो सम्मेलन किया गया था.
  इजीप्ट के पाशा के पास में यह नस्ल सुरक्षित रखी गयी हे. दूध के खजाने के लिए राजघराने में पहचानने वाली नस्ल वर्तमान में भारत में लगभग समाप्त हो रही है.

- हल्लीकर अमृतमहाल नस्ल की ही महत्वपूर्ण शाखा है. भारत में यह नस्ल खतरे में है. वीडियो सीडी तथा साहित्य उपलब्ध है. हल्लीकर गायें अमृतमहाल से अधिक दूध देती हैं.

- खिल्लार

  अपनी तेज गति के लिए बैल पहचाने जाते हें. गायें दूध कम देती हें. अधिकतम 4 लीटर दूध देती हैं. सांगली एवं आसपास के क्षेत्रों में खिल्लार बैलों की दौड़ होती है. खेती तथा परिवहन करने के लिए खिल्लार बैल उपयोगी हैं. भारत में खिल्लार नस्ल समाप्त होने जा रही है.
  वर्तमान में गिने चुने बैल होने के कारण ढेड़ लाख रु. में बैल मिल रहा है.
  14 लीटर दूध के लिए खिल्लार तथा थारपारकर सांढ से खिल्लारधारी नस्ल सतारा जिले के धोकसोंड गांव में तैयार की गयी है.

- डांगी डांग गुजरात का आदिवासी क्षेत्र है. डांगी नस्ल यहां पर पायी जाती है. बैल भारी बारिश में अच्छी तरह से कार्य करते हें. गायें दूध कम देती हें इसलिए वर्तमान में डांगी लुप्त होने जा रही है.

- ब्राहमण अमेरिका में मांस तथा दूध के लिए यह नस्ल विकसित की गयी है. इंटरनेट पर ब्राहमण नस्ल पर बहुत सारी वेबसाइट तैयार है. भारत से चिड़ियाघर, सर्कस के माध्यम से चोरी से अमेरिका ले जाकर तथा भारत में गाय का मांस न खाने के कारण ब्राहमण नाम रखकर विकसित की गयी है.

- इंडो ब्राजील ब्राजील में गीर नस्ल से यह नयी नस्ल अधिक दूध के लिए विकसित की गयी है. 2004 में ब्राजील में एक दिन में 214 लीटर दूध देने का नया किर्तीमान बनाया गया हे.

- अंगोल विश्व में नेलोर के नाम से यह नस्ल प्रसिद्ध है. भगवान शंकर के नंदी के दर्शन अंगोल में होते हें. वीडियो सीडी 1 घंटे की तैयार की गयी है. कृत्रिम गर्भाधान के लिए

पूरी तरह अनुकूल है. साहित्य रंगीन चित्रों के साथ में उपलब्ध है. आंध्रप्रदेश के अंगोल में यह नस्ल मोजूद है. ब्राजील में सबसे अधिक लगभग 10 लाख अंगोल नस्ल दूध तथा मांस के लिए मोजूद हे.

- केनवारिया
- मालवी मालवा में पायी जाने वाली यह नस्ल समाप्त होने जा रही है.
- निमाड़ी
- कंगायम
- गंगातीरी गंगा के तीर यानी किनारे पर पायी जाने वाली दूध देने वाली यह नस्ल वर्तमान में समाप्त हो रही है.
- गावलाव
- धन्नी
- दज्जल
- बचौर
- भगनाड़ी
- पोनवार
- लोहानी
- देवनी देवनी को डोंगरी यानी पहाड़ पर रहने वाली कहा जाता है. वर्तमान में देवनी नस्ल खतरे में है. वीडियो सीडी तथा साहित्य तैयार किया गया हे. देवनी को गीर से ही अधिक दूध देने के लिए विकसित किया गया है इसलिए देवनी में गीर से कई समानताएं हैं. देवनी नस्ल के बैल बहुत ही मजबूत और परिश्रमी होते हें. भारी सामान ढोने के लिए उपयोग किये जाते हैं. गायें 1650 लीटर दूध एक ब्यात में देती हे.
- बरगुर
- राठी
- कृ-णावल्ली
- हांसी हिसार
- सीरी
- तंजोर
- आलमबादी गायें कम दूध देती हैं. वीडियो सीडी तथा साहित्य उपलब्ध है. वर्तमान में आलमबादी नस्ल भारत में लुप्त होने की कगार पर है. बैल मजबूत, सुंदर, आज्ञाकारी तथा खेती, परिवहन करने के लिए बहुत ही उपयोगी हैं.
- बंगाली पश्चिम बंगाल में बंगाली नस्ल कामधेनु के नाम से जानी जाती है.
- मेवाती
- बैल से चलने वाला कामधेनु संयंत्र श्री लक्ष्मी नारायण जी मोदी तथा कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा बैल से चलने वाले संयंत्र पर वीडियो सीडी तैयार की गयी है. वर्तमान में बेल से चलने वाला संयंत्र सफल नहीं है. इंटरनेट पर भी विश्व का ध्यान आकर्-ित किया गया है. साहित्य रंगीन चित्रों के साथ में तैयार किया गया है.
- गोवंश रक्षा कामधेनु की रक्षा करने में सफलता नहीं मिल रही है. कामधेनु की पहचान करना चुनौती है. कामधेनु रक्षा एक प्रश्न है? लगभग 1 घंटे की पेटा, विश्व हिंदू परि-ाद, भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के द्वारा तैयार वीडियो सीडी 100 रु. देकर उपलब्ध है तथा स्वर्गीय श्री राजीव जी दीक्षित के ओजस्वी प्रवचनों का संग्रह गोवंश रक्षा पर ओडियो डीवीडी समय 48 धंटों में उपलब्ध है.
- अग्निहोत्र

माधव आश्रम के द्वारा तैयार 1 घंटे की वीडियो सीडी अग्निहोत्र के बारे में बहुत ही अच्छी तरह से वैज्ञानिक आधार के साथ में वर्णन कर रही है. अग्निहोत्र कृ-ि की जानकारी किसानों को श्री रामाश्रय मिश्रा जी के द्वारा खेतों में प्रत्यक्ष दी गयी है. 300 रु. सहयोग राशि देने पर अग्निहोत्र वीडियो सीडी माधव आश्रम से मंगवा कर देना संभव है. माधव आश्रम के द्वारा तैयार साहित्य हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी में उपलब्ध है. अग्निहोत्र यानी अग्नि में सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय पिरामिड आकार के तांबे या मिटटी के निर्धारित पात्र में गोबर के कंडों पर बिना टूटे हुए चावल यानि अक्षत एवं गोमाता के बिलोने के धी की वेद मंत्रों के साथ में आहूति देना है.

- अग्निहोत्र चिकित्सा माधव आश्रम के द्वारा मात्र 8 रु. में पुस्तक प्रकाशित की गयी है. 1974 से पश्चिमी जर्मनी में अग्निहोत्र की भस्म पर वैज्ञानिक अनुसंधान कर औ-धियां विकसित की गयी हैं.
- अग्निहोत्र से नवग्रह एवं 27 नक्षत्रों का समाधान नवग्रहों तथा 27 नक्षत्रों का मानव के जीवन में जन्म से मरने तक अनुकूल एवं घातक प्रभाव एवं मानव पर भारतीय ज्योति-ा के अनुसार गोवंश के द्वारा उत्पन्न तरंगों का प्रभाव वैज्ञानिक आधार पर वर्णन किया गया है. अग्निहोत्र आम आदमी के लिए जिज्ञासा का वि-ाय है. अमेरिका अग्निहोत्र विश्वविद्यालय खोलकर पूरी तरह से अपना चुका है. ज्योति-ा पर प्रश्न एवं उत्तर तैयार किये गये हैं. वीडियो सीडी तैयार की गयी है.
- अग्निहोत्र से बिना तोड़फोड़ के वास्तु दो-ों को पूरी तरह से दूर करना आम आदमी के समझ के बाहर है. वड़ोदरा के जितेंद्र भटट वर्तमान में आम आदमी के साथ में अग्निहोत्र से वास्तु दो-ों के दूर करने में सफल हैं. भारत में आज भी अग्निहोत्र लोकप्रिय नहीं है.
- अग्निहोत्र प्रश्न एवं उत्तर मानव में अग्निहोत्र के बारे में अनेक जिज्ञासाओं के कारण तथा भारत में अग्निहोत्र लोकप्रिय नहीं हे इसलिए पहली बार अग्निहोत्र, अग्निहोत्र कृ-ि, अग्निहोत्र चिकित्सा पर बहुत ही सरल वस्तुनि-ठ प्रश्न एवं उत्तर तैयार किये गये हें.
- अग्निहोत्र कृ-ि माधव आश्रम के द्वारा किसानों के लिए धर्मसूर्य त्रैमासिक पत्रिका में अग्निहोत्र कृ-ि की जानकारी दी गयी है. श्री रामाश्रय मिश्रा जी कृ-ि वेज्ञानिक माधव आश्रम के साथ में किसानों के लिए कार्य कर रहे हैं. स्मारिका का प्रकाशन माधव आश्रम के द्वारा किया गया है. अग्निहोत्र कृ-ि 25 रु. में पुस्तक तैयार की गयी है. किसानों में अग्निहोत्र कृ-ि लोकप्रिय नहीं है. अमेरिका अग्निहोत्र कृ-ि 1979 से अपना चुका है.
- अग्निहोत्र से गोवंश के रोगों का संपूर्ण उपचार इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीटयूट नैनीताल के निदेशक के अनुसार अग्निहोत्र से गोवंश के रोगों का उपचार करना संभव है. 7 वीडियो सीडी रोगों के उपचार पर तैयार की गयी हें.
- अग्निहोत्र से मधुमेह का संपूर्ण उपचार
  असाध्य रोग मधुमेह का गारंटी के साथ में उपचार करने के लिए साहित्य तथा 1 घंटे की वीडियो सीडी तैयार की गयी है.
- अग्निहोत्र से एडस का संपूर्ण उपचार पश्चिमी जर्मनी के द्वारा 1974 से अग्निहोत्र भस्म पर अनुसंधान कर औ-धियां तैयार की गयी हैं. वीडियो सीडी 1 घंटे अवधि की तैयार की गयी है. साहित्य वैज्ञानिक अनुसंधान कर तैयार है.
- अग्निहोत्र से कब्ज का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से उच्च रक्तचाप का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से ह्रदय रोगों का संपूर्ण उपचार

- अग्निहोत्र से रक्तप्रदर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से ब्रेन कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से यकृत कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से फेफड़े के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से रक्त कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से गर्भाशय के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से रसौली के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से मुंह के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से होठ के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से लसीका ग्रंथि के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से आमाशय कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से आंत के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से मूत्राशय के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से स्तन कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से जीभ के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से आंख के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से गुर्दे के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से गुदा के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से प्रोस्टेट कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से लिंग कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से गले के कैंसर का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से रक्त की कमी का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से मोटापे का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से आंख के 72 रोगों का संपूर्ण उपचार
- अग्निहोत्र से चर्मरोगों का संपूर्ण उपचार

वि-ाय सूची

1. वस्तुनि-ठ प्रश्न
2. प्रस्तावना
3. सूर्य
4. चंद्र
5. मंगल
6. बुध
7. गुरु
8. शुक
9. शनि
10. राहू
11. केतु

ज्योति-ा

ईश्वर

1 सूर्य को क्या माना गया है?

अ. ईश्वर ब. अंतरिक्ष का राजा

स. आत्मा का प्रतीक द. ज्ञान

सृ-ि के आरम्भ में

2 सूर्य की उत्पत्ति कब हुई है?

अ. सृ-ि के प्रारम्भ में ब. आदिकाल से

स. देवताओं के समय में द. ब्रहमांड के निर्माण के समय

अग्निहोत्र

3 सूर्य को प्रसन्न करने के लिए क्या करना चाहिए?

अ. अग्निहोत्र ब. पूजन

स. नमस्कार द. व्रत

6 साल

4 सूर्य की महादशा कितने समय की होती है?

अ. 6 साल ब. सात साल

स. आठ साल द. नौ साल

रविवार

5 सूर्य का दिन कौन सा है?

अ. रविवार ब. नित्य

स. कोई एक दिन द. कोई भी दिन

1

6 सूर्य का अंक कौन सा है?

अ. 1 ब. 2

स. 3 द. 4

सुनहरा

7 सूर्य का रंग क्या है?

अ. सुनहरा ब. पीला

स. चमकीला द. कोई भी

सिंह

8 सूर्य किस राशि का स्वामी है?

अ. सिंह ब. किसी भी राशि का

स. किसी का नहीं द. पता नहीं

सात्विकता

9 सूर्य का संबंध किससे है?

अ. सात्विकता ब. देवत्व

स. प्रकाश द. तेज

दिमाग

10 सूर्य का प्रभाव मानव पर कहां पड़ता है?

अ. दिमाग ब. आत्मा

स. चेहरे द. आंखों

1 माह

11 सूर्य एक राशि में कितने दिन रहता है?

अ. 1 माह ब. 1 दिन

स. 1 सप्ताह द. 1 घंटे

सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं

12 सूर्य अंतरिक्ष का राजा क्यों है?

अ. सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं ब. केंद्र में है

स. तेजस्वी है द. देवता

माणिक्य

13 सूर्य का रत्न कौन सा है?

अ. माणिक्य ब. हीरा

स. पन्ना द. मोती

मदार

14 सूर्य की वनस्पति कौन सी है?

अ. मदार ब. नीम

स. तुलसी द. पीपल

14 तारीख

15 सूर्य कब राशि बदलता है?

अ. 14 तारीख को ब. किसी भी दिन

स. कभी भी द. निश्चित नहीं है

पुरु-ा ग्रह

16 सूर्य क्या है?

अ. पुरु-ा ग्रह ब. गतिशील

स. जीवन द. देवता

विद्या प्राप्ति

17 सूर्य से क्या संभव है?

अ. विद्या प्राप्ति ब. देवत्व

स. वाणी में ओज द. सात्विकता

सूर्योदय

18 सूर्य का दर्शन कब करना चाहिए?

अ. सूर्योदय ब. सूर्यास्त

स. कभी भी द. मन अनुसार

12

19 सूर्य के कितने नाम हैं?

अ. 12 ब. बहुत सारे

स. एक द. पता नहीं

शनि

20 सूर्य किसका पिता है?

अ. शनि ब. मंगल

स. बुध द. गुरु

निरोगी

21 सूर्योदय का क्या महत्व है?

अ. निरोगी ब. दीर्घायु

स. जीवन द. प्रकाश

परिवर्तन

22 सूर्यास्त का क्या महत्व है?

अ. परिवर्तन ब. प्रगति

स. जीवन द. गति

रोगकारक

23 सूर्य के गोचर में कमजोर होने पर क्या होता है?

अ. रोगकारक ब. प्राणघातक

स. बुद्धि नाशक द. पतन

यश

24 सूर्य के प्रसन्न होने पर मानव को क्या मिलता हे?

अ. यश ब. किर्ती

स. मान द. सम्मान

पराबैंगनी तरंगे

25 सूर्य को नंगी आंखों से क्यों नहीं देखना चाहिए?

अ. पराबैंगनी तरंगे ब. तेज

स. प्रकाश द. गरमी

ओजोन परत

26 सूर्य की पराबैंगनी तरंगे कैसे रुक सकती हैं?

अ. ओजोन परत ब. ओक्सीजन परत

स. प्रदू-ाण द. गरमी

चर्मरोग

27 सूर्य का त्वचा पर क्या प्रभाव पड़ता हे?

अ. चर्मरोग ब. चमकदार त्वचा

स. कैंसर द. दाग

सूर्यकेतु नाड़ी जाग्रत होती है

28 सूर्य की तरंगों का गोवंश पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. सूर्यकेतु नाड़ी जाग्रत होती है ब. आयु वृद्धि

स. प्रसन्नता द. निरोग

8 मिनट

29 सूर्य की तरंगों को धरती पर पहुंचने में कितना समय लगता है?

अ. 8 मिनट ब. 1 मिनट

स. तुरन्त द. बहुत देर

गोपूजन

30 सूर्य का वरदान कैसे मिलता है?

अ. गोपूजन ब. नंदीपूजन

स. गोवंश पूजन द. देवपूजन

वायुमंडल में परिवर्तन होता है

31 सूर्य की तरंगों के वायुमंडल में प्रवेश करने पर क्या होता है?

अ. वायुमंडल में बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन होता है

ब. विद्युत चुम्बकीय तरंगे धरती की ओर बहने लगती हैं

स. सूक्ष्म तरंगे बहने लगती हैं

द. ईथर तरंगे धरती की ओर बहने लगती हैं

मन

32 सूर्य की तरंगों का सबसे अधिक प्रभाव मानव के किस पर पड़ता है?

अ. मन ब. इंद्रिय

स. अंतःकरण द. आत्मा

पीनियल ग्रंथि के अंतःस्त्राव पर प्रभाव पड़ता है

33 मन के कारण दिमाग में क्या होता है?

अ. पीनियल ग्रंथि के अंतःस्त्राव पर प्रभाव पड़ता है

ब. बुद्धि बदल जाती है

स. दिमाग में उठापटक होती है

द. भ्रम

संवदेनशील

34 सूर्य के कारण मन क्या होता है?

अ. संवेदनशील ब. भ्रम

स. दू-ित द. स्थिर

परिवर्तन

35 सूर्य के कारण मानव देह में क्या होता है?

अ. परिवर्तन ब. वृद्धि

स. प्रदू-ाण द. बीमारी

राक्षसीपन

36 सूर्य के प्रसन्न होने पर मानव की किस पर नियंत्रण होता है?

अ. राक्षसीपन ब. देवत्व

स. उदारता द. साहस

रवि

37 सूर्य के अन्य नाम क्या हैं?

अ. रवि ब. भानू

स. आदित्य द. प्रभाकर

दिवाकर

38 सूर्य के प्रमुख नाम क्या हैं?

अ. दिवाकर ब. दिनकर

स. मित्राय द. हिरण्यगर्भ

सविता

39 सूर्य के महत्वपूर्ण नाम क्या हैं?

अ. सविता ब. भास्कर

स. मार्तड द. वि-णु

मस्ति-क ज्वर

40 सूर्य के गोचर में कमजोर होने के कारण दिमाग के कौन से रोग हो रहे हैं?

अ. मस्ति-क ज्वर ब. माइग्रेन

स. मिरगी द. मूर्छा

स्मृतिनाश

41 सूर्य के गोचर में कमजोर होने पर कौन से रोग सबसे अधिक संभव हैं?

अ. स्मृतिनाश ब. ह्रदय रोग

स. कब्ज द. रक्तचाप

मंदबुद्धि

42 सूर्य के गोचर में कमजोर होने पर सबसे खतरनाक मस्ति-क रोग कौन सा संभव है?

अ. मंद बुद्धि ब. मानसिक विकलांगता

स. उनमाद द. हिस्टीरिया

अ-टोतरी

43 108 साल की आयु मानकर कौन सी गणना की जाती है?

अ. अ-टोतरी ब. विमशोतरी

स. योगिनी द. रागिनी

विमशोतरी

44 120 साल की आयु मानकर कौन सी गणना की जा रही है?

अ. विमशोतरी ब. कृ-णमूर्ति

स. अ-टोतरी द. योगिनी

अंतरदशा

45 सूर्य की कौन सी दशा महादशा के बाद देखनी आवश्यक है?

अ. अंतरदशा ब. प्रत्यांतरदशा

स. सूक्ष्मदशा द. प्राणदशा

शरीर में जलन

46 सूर्य के मानव पर तीव्र प्रभाव पड़ने के कारण क्या होता है?

अ. शरीर में जलन ब. ह्रदय रोग

स. रक्तपित्त द. आंख की बीमारी

पागलपन

47 सूर्य के धातक होने के कारण मानव के दिमाग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. पागलपन ब. मानसिक असंतुलन

स. मिर्गी द. उत्तेजना

दुश्मनों से भय

48 सूर्य के कारण मानव को क्या खतरा है?

अ. दुश्मनों से भय ब. दुश्मनों से नुकसान

स. दुश्मनों से सर्वनाश द. दुश्मनों से पीड़ा

हडडी के खसक जाने का खतरा

49 सूर्य के कारण मानव को क्या खतरा है?

अ. हडउी के खसक जाने का खतरा ब. हडडी के टूटने का भय

स. हडडी का चूरा होना ब. हडडी का गलना

चार पैर वाले जीवों से खतरा

50 सूर्य के धातक होने पर मानव को क्या खतरा है?

अ. चार पैर वाले जीवों से खतरा ब. लकड़ी से मार पड़नी

स. आग से खतरा द. बिजली का झटका

ह्रदय रोग

51 सूर्य के धातक होने के कारण मानव को क्या खतरा है?

अ. ह्रदय रोग ब. ह्रदयघात

स. ह्रदय बंद होना द. ह्रदय में खराबी

सर्प से खतरा

52 सूर्य के कमजोर होने पर मानव को क्या परेशानी है?

अ. सर्प से खतरा ब. स्त्री से परेशानी

स. आग से भय द. लकड़ी से मार

यमराज का भय

53 सूर्य के कमजोर होने पर मानव को क्या परेशानी है?

अ. यमराज का भय ब. मृत्यु

स. अकाल मृत्यु द. दुर्घटना

अग्नि से भय

54 सूर्य के गोचर में कमजोर होने के कारण मानव को क्या खतरा है?

अ. अग्नि से भय ब. यम का भय

स. मृत्यु द. दुर्घटना

यश

55 सूर्य यदि मे-ा लग्न में हे तो मानव को क्या होता है?

अ. यश ब. किर्ती

स. मान द. सम्मान

वैवाहिक जीवन अस्थिर

56 सूर्य मे-ा लग्न में है तो उसकी सातवी दृ-ि का वैवाहिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. अस्थिर होता है ब. मधुर होता है

स. मंगल के कारण अहंकार द. मंगल के कारण परेशानी

तेजस्वी

57 सूर्य के मे-ा में रहने पर वाणी कैसी रहती है?

अ. तेजस्वी ब. प्रभावशाली

स. सम्मोहक द. तीव्र

तेजस्वी

58 सूर्य यदि मे-ा लग्न में है तो चेहरा कैसा रहता है?

अ. तेजस्वी ब. प्रभावशाली

स. मनमोहक द. सुंदर

नंदी का दान

59 सूर्य के वृ-ाभ लग्न में रहने पर अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. नंदी का दान ब. गोचर भूमि का दान

स. सवत्स गउ का दान द. गो ग्रास

अशुभ

60 सूर्य यदि वृ-ाभ लग्न में है तो मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. अशुभ ब. अच्छा नहीं हे

स. मन में अस्थिरता द. मन में विचार

कपिला का गोचर भूमि के साथ में दान

61 मिथुन लग्न में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. कपिला गोचर भूमि सहित दान ब. कामधेनु

स. सुरभि द. गो ग्रास

अशुभ

62 सूर्य यदि मिथुन लग्न में है तो मानव पर क्या प्रभाव है?

अ. अशुभ ब. खतरनाक

स. प्राणघातक द. तीव्र

धन भाव का स्वामी

63 सूर्य यदि कर्क लग्न में है तो मानव पर क्या प्रभाव है?

अ. धन भाव का स्वामी ब. शुभ

स. प्रगतिशील द. अच्छा

शुभ

64 सूर्य यदि सिंह लग्न में हे तो मानव पर क्या प्रभाव है?

अ. शुभ ब. पराक्रमी

स. राजयोग द. प्रभावशाली

बुध उच्च का

65 सूर्य यदि कन्या लग्न में है तो क्या होता हे?

अ. बुध उच्च का ब. बुद्धिमान

स. विद्वान द. पंडित

कपिला दान

66 तुला लग्न में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. कपिला गोमाता का दान ब. सुरभि

स. कामधेनु द. गो ग्रास

अशुभ

67 सूर्य यदि तुला लग्न में है तो क्या होता है?

अ. अशुभ ब. हानिकारक

स. पतन द. विनाश

दसवे भाव का स्वामी है

68 सूर्य यदि वृश्चिक लग्न में हे तो क्या होता है?

अ. दसवे भाव का स्वामी है ब. तेजस्वी

स. तीव्र द. गतिवान

भाग्यभाव का स्वामी

69 सूर्य यदि धनु लग्न में है तो क्या होता है?

अ. भाग्यभाव का स्वामी ब. उदार

स. दानवीर द. वीर

आठवे भाव का स्वामी

70 सूर्य यदि मकर लग्न में है तो क्या होता है?

अ. आठवे भाव का स्वामी ब. ऐश्वर्यवान

स. वीर द. पराक्रमी

सातवे भाव का स्वामी है

71 सूर्य यदि कुंभ लग्न में है तो क्या होता है?

अ. सातवे भाव का स्वामी हैब. विश्वव्यापी

स. परमात्मा द. देव

6वे भाव का स्वामी है

72 सूर्य यदि मीन लग्न में है तो क्या होता है?

अ. 6वे भाव का स्वामी है ब. सदाचारी

स. विद्यावान द. विवेकी

नंदी सहित गोचर भूमि का दान

73 दूसरे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. नंदी सहित गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास

स. गो चिकित्सा द. गो वत्स दान

अशुभ

74 सूर्य यदि धन स्थान पर है तो क्या होगा?

अ. अशुभ ब. वाणी कर्कश

स. विवेकहीन द. अस्थिर

कपिला दान

75 पराक्रम भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए ब्राहमण को क्या देना है?

अ. कपिला दान ब. चांदी दान

स. सोने का दान द. रथ का दान

अशुभ

76 सूर्य यदि तृतीय यानी पराक्रम स्थान पर है तो व्यक्ति का क्या होगा?

अ. अशुभ ब. डरपोक

स. कायर द. नंपूसक

गोचर भूमि का दान

77 चौथे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या दान करना है?

अ. गोचर भूमि का दान ब. नंदी का दान

स. गो दान द. चांदी दान

अशुभ

78 सूर्य यदि चतुर्थ स्थान पर है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. कठोर

स. सम्पत्तिहीन द. गरीब

बछड़े का दान

79 पांचवे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. बछड़े का दान ब. गो दान

स. गोचर दान द. सोने का दान

अशुभ

80 सूर्य यदि पाचवे भाव में है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. कंजूस

स. चोर द. बदमाश

कपिला दान

81 सातवे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. कपिला दान ब. गो ग्रास

स. गोचर भूमि का दान द. गो वत्स दान

अशुभ

82 सूर्य यदि सातवे भाव में हे तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. नंपुसक

स. ब्रहमचारी द. एकांतप्रेमी

सवत्स गउ का दान

83 आठवे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. सवत्स गउ का दान ब. गोचर भूमि का दान

स. गो ग्रास द. गो चिकित्सा

अशुभ

84 सूर्य यदि आठवे भाव में है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. अल्पायु

स. बीमार द. चरित्रहीन

पिता के साथ में विरोध

85 सूर्य यदि नवमें भाव में है तो कैसा है?

अ. पिता के साथ में विरोध ब. सत्यवक्ता

स. उदार द. विद्यावान

शुभ

86 सूर्य यदि दसवे भाव में है तो कैसा है?

अ. शुभ ब. तेजस्वी

स. उदार द. देव

शुभ

87 सूर्य यदि ग्यारवे भाव में है तो कैसा है?

अ. शुभ ब. प्रगतिशील

स. विद्यावान द. असाधारण

गोचर भूमि का दान

88 बारहवे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना हे?

अ. गोचर भूमि का दान ब. गो वत्स दान

स. गो ग्रास द. कपिला का दान

अशुभ

89 सूर्य यदि बारहवे भाव में है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. बदनामी

स. तेजहीन द. बलहीन

1000

90 सूर्य की कितनी रश्मियां हैं?

अ. 1000 ब. 12

स. 300 द. 400

300

91 सूर्य की कितनी रश्मियां गरमी करती हैं?

अ. 300 ब. 400

स. 1000 द. 100

300

92 सूर्य की कितनी रश्मियां शीत करती हैं?

अ. 300 ब. 400

स. 1000 द. 100

400

93 सूर्य की कितनी रश्मियां व-र्ा करती हैं?

अ. 400 ब. 300

स. 100 द. 1000

अमृता

94 सूर्य की व-र्ा करने वाली रश्मियों को क्या कहते हें?

अ. अमृता ब. निदाघ

स. चन्द्रा द. दृश्या

वातावरण की शुद्धि

95 सूर्य की बारह रश्मियां क्या करती हैं?

अ. वातावरण की शुद्धि ब. पर्यावरण की पवित्रता

स. चमत्कार द. जादू

मास

96 सूर्य की रश्मियों को क्या कहते है?

अ. मास ब. माह

स. महिना द. समय

ऋतु

97 सूर्य की रश्मियां क्या बनाती हैं?

अ. ऋतु ब. मास

स. अयन द. दिन

सात

98 सूर्य की रश्मियों के कितने रंग होते हैं?

अ. सात ब. दो

स. तीन द. चार

निदाघ

99 सूर्य की रश्मियों में गर्मी की रश्मियों का नाम क्या है?

अ. निदाघ ब. शुक्ला

स. चंद्रा द. दृश्या

चन्द्रा

100 सूर्य की रश्मियों में शीत की रश्मियों का नाम क्या है?

अ. चन्द्रा ब. अमृता

स. हलादिन्या द. मेध्या

रोग समाप्ति

101 सूर्य की रश्मियों से क्या होता है?

अ. रोग समाप्ति ब. अज्ञान का नाश

स. असुरत्व का नाश द. अंधकार का नाश

प्रदू-ाण नाश

102 सूर्य की रश्मियों के सात रंग क्या करते हैं?

अ. प्रदू-ाण नाश ब. अविद्या नाश

स. मृत्यु नाश द. भय नाश

आकाशीय विद्युत

103 सूर्य की रश्मियां सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय किसकों नियंत्रित करती हैं?

अ. आकाशीय विद्युत ब. इंद्र

स. तड़ित द. ईथर

संतुलन

104 सूर्य की रश्मियां यज्ञ से क्या करती हैं?

अ. संतुलन ब. चमत्कार

स. परिवर्तन द. गति

यज्ञ

105 सूर्य की रश्मियों का संबंध किससे है?

अ. यज्ञ ब. मंत्र

स. आहूति द. समिधा

खेती

106 सूर्य की रश्मियों का प्रभाव किस पर पड़ता है?

अ. खेती ब. भूमि

स. बीज द. खाद

वेद

107 सूर्य का सबसे अधिक उल्लेख कहां पर है?

अ. वेद ब. सूर्य पुराण

स. श्रीमद भागवत द. गीता

108

2 दिन

109 चंद्रमा एक राशि में कितने दिन रहता है?

अ. 2 दिन ब. 1 दिन

स. 3 दिन द. 4 दिन

10

110 चंद्रमा की महादशा कितने साल की होती है?

अ. 10 ब. 1

स. 2 द. 3

बहुत ही नजदीक

111 चंद्रमा मानव को सबसे अधिक क्यों प्रभावित करता है?

अ. बहुत ही नजदीक है ब. उपग्रह

स. गहरा संबंध द. तेज

मन विचलित करता है

112 अमावस्या के दिन चंद्रमा मानव पर क्या प्रभाव डालता है?

अ. मन विचलित करता है ब. आत्महत्या

स. हत्या द. पागलपन

बढ़ना

113 चंद्रमा की कला एकम से पूर्णिमा तक लगातार क्या होता है?

अ. बढ़ना ब. कम

स. सामान्य द. असामान्य

कम

114 एकम से अमावस्या तक चंद्रमा की कला क्या होती है?

अ. कम ब. बहुत ही कम

स. सामान्य द. बढ़ती

चंद्रमा

115 मानव के जन्म के समय मानव का नाम किसके अनुसार रखा जाता है?

अ. चंद्रमा ब. सूर्य

स. मंगल द. बुध

चरण

116 मानव के जन्म के समय में नाम का अक्षर किसके अनुसार रखा जाता है?

अ. चरण ब. नक्षत्र

स. राशि द. पक्ष

अंधकारमय

117 बारहवे भाव में यदि चंद्रमा है तो मानव के भवि-य की क्या संभावनाएं हैं?

अ. अंधकारमय ब. मन अस्थिर

स. पतन द. बेरोजगारी

अग्निहोत्र

118 चंद्रमा के बारहवे भाव में अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए मानव को प्रतिदिन क्या करना चहिए?

अ. अग्निहोत्र ब. गोदान

स. सोने का दान द. चांदी का दान

अशुभ

119 मानव के लिए चंद्रमा बारहवे भाव में कैसा है?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. असाधारण द. नुकसानदायक

चंद्रमा

120 मानव का मन सदैव चंचल क्यों रहता हे?

अ. चंद्रमा ब. नवग्रह

स. तारे द. नक्षत्र

परेशानीकारक

121 बारहवा चंद्रमा मानव के लिए कैसा रहता है?

अ. परेशानी कारक ब. पतन

स. विनाश द. उन्नति

शुभ

122 ग्यारहवे भाव में यदि चंद्रमा रहता है तो भवि-य कैसा है?

अ. शुभ ब. उत्तम

स. सर्वश्रे-ठ द. उज्जवल

उत्तम

123 ग्यारहवे भाव में चंद्रमा मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. सामान्य

स. अशुभ द. ठीक ठीक

शुभ

124 दसवे भाव में यदि चंद्रमा है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. अशुभ

स. सामान्य द. असामान्य

शुभ

125 नवमें भाव में यदि चंद्रमा है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. सामान्य

स. असामान्य द. अशुभ

गोदान

126 आठवे भाव में चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए मानव को क्या करना चाहिए?

अ. गोदान ब. गोवत्स का दान

स. नंदी दान द. गोचर भूमि दान

अशुभ

127 आठवे भाव में चंद्रमा है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. सर्वश्रे-ठ

शुभ

128 सातवे भाव में चंद्रमा है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. बुरा

स. सामान्य द. अज्ञात

शुभ

129 पांचवे भाव में चंद्रमा है तो कैसा है?

अ. शुभ ब. सामान्य

स. बुरा द. असामान्य

शुभ

130 चौथे भाव में यदि चंद्रमा है तो कैसा है?

अ. शुभ ब. बुरा

स. सामान्य द. असामान्य

हवन

131 तीसरे भाव में चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए क्या उपाय करना है?

अ. हवन ब. अग्निहोत्र

स. यज्ञ द. होम

अशुभ

132 तीसरे भाव में यदि चंद्रमा है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. अच्छा

स. सामान्य द. असामान्य

शुभ

133 दूसरे भाव में यदि चंद्रमा है तो कैसा है?

अ. शुभ ब. बुरा

स. सामान्य द. असामान्य

पूर्णिमा

134 चंद्रमा का सबसे अधिक प्रभाव कब पड़ता है?

अ. पूर्णिमा ब. अमावस्या

स. एकादशी द. हर दिन

मन

135 चंद्रमा किसे सबसे अधिक प्रभावित करता है?

अ. मन ब. रक्त

स. जल द. वीर्य

सबसे तेज

136 चंद्रमा की गति कैसी है?

अ. सबसे तेज ब. तेज

स. सामान्य द. मंद

पृथ्वी का उपग्रह

137 चंद्रमा क्या है?

अ. पृथ्वी का उपग्रह ब. ग्रह

स. नक्षत्र द. राशि

2

138 चंद्रमा का अंक क्या है?

अ. 2 ब. 3

स. 1 द. 4

मोती

139 चंद्रमा का रत्न क्या है?

अ. मोती ब. हीरा

स. पन्ना द. मूंगा

सांस

140 किसके साथ में चंद्रमा का सीधा संबंध है?

अ. सांस ब. धड़कन

स. मन द. रक्त

सफल

141 गोवंश के संवर्धन करने के लिए अश्वनी नक्षत्र के प्रथम चरण वाला व्यक्ति कैसा है?

अ. सफल ब. सहयोगी

स. उत्साही द. उर्जावान

परिणाम तुरन्त

142 गोवंश के संवर्धन करने के लिए अश्वनी नक्षत्र के प्रथम चरण के व्यक्ति का चुनाव क्यों किया जाये?

अ. परिणाम तुरन्त ब. संकल्पित

स. कठोर परिश्रमी द. दूरदर्शी

अश्व के समान ताकत

143 यदि चंद्रमा अश्वनी नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. अश्व के समान ताकत ब. सक्रिय
स. दूरदर्शी द. सुंदर

बहुत ही अच्छा

144 अश्वनी नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्मे व्यक्ति का चयन गोवंश संवर्धन करने के लिए किया जाये तो कैसा रहेगा?
अ. बहुत ही अच्छा ब. उत्तम
स. सर्वोत्तम द. सामान्य

मन चंचल

145 यदि चंद्रमा अश्वनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में रहता है तो जन्म के समय मे क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. मन चंचल रहता है ब. स्त्री लक्षण
स. कोमल स्वभाव द. कल्पनाशील

हिम्मती

146 गोवंश संवर्धन करने के लिए अश्वनी नक्षत्र के तीसरे चरण वाले व्यक्ति को क्यों जिम्मेदारी दी जाये?
अ. हिम्मती ब. बलवान
स. विद्वान द. वैभवी

हिम्मती

147 यदि चंद्रमा अश्वनी नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. हिम्मती ब. आगे पीछे करने वाला
स. सम्पन्न द. वीर

शत्रुविजयी

148 गोवंश संवर्धन करने के लिए अश्वनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण के व्यक्ति का चयन क्यों किया जाये?
अ. शत्रुविजयी ब. तुफानी
स. हिम्मती द. स्थिर मन वाला

यशस्वी

149 यदि चंद्रमा अश्वनी नक्षत्र के चौथे चरण में रहता है तो जन्म के समय क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. यशस्वी ब. वीर
स. सर्वगुण सम्पन्न द. अवसरवादी

मनचाहा परिणाम लाने वाला

150 गोवंश सेवा के क्षेत्र में भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण वाले व्यक्ति का चयन क्यों किया जाये?
अ. मनचाहा परिणाम लाने वाला ब. मेहनती
स. दूरदर्शी द. विजयी

एकत्र करने वाला

151 यदि चंद्रमा भरणी नक्षत्र में प्रथम चरण में रहता हे तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. एकत्र करने वाला ब. मन अस्थिर रहता है
स. मन दू-ित रहता है द. मन प्रसन्न रहता है

दानी एवं महत्वकांक्षी

152 गोवंश संवर्धन तथा संरक्षण करने के लिए भरणी नक्षत्र के दूसरे चरण वाले व्यक्ति का चयन क्यों किया जाये?
अ. दानी ब. महत्वकांक्षी
स. आनंदी द. विजयी

विजयी

153 यदि चंद्रमा भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव रहता है?
अ. विजयी ब. लोभी
स. कंजूस द. दु-ट

आनंदी

154 गोपा-टमी जैसे महत्वपूर्ण उत्सव के आयोजन करने के लिए भरणी नक्षत्र के तीसरे चरण के व्यक्ति का चयन क्यों किया जाये?
अ. आनंदी ब. रंगीन
स. उदार द. दूरदर्शी

रंगीन

155 यदि चंद्रमा भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?
अ. रंगीन ब. सोनी
स. ग्वाल द. शौकीन

काम बिगड़ सकता है

156 गोवंश सेवा के क्षेत्र में यदि भरणी नक्षत्र के चौथे चरण का व्यक्ति है तो क्या खतरा है?
अ. काम बिगड़ सकता है ब. परिणाम में देरी
स. नुकसान द. काम बंद होगा

क्रोधी

157 यदि चंद्रमा भरणी नक्षत्र के चौथे चरण में रहता हे तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. क्रोधी ब. द्वे-ाी

स. विजयी द. उर्जावान

उर्जावान

158 यदि चंद्रमा कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. उर्जावान ब. असाधारण

स. उत्तम द. सर्वश्रे-ठ

परिणाम लाने वाला

159 कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण वाले व्यक्ति को गोवंश रक्षण के कार्य में क्यों चयन करना चाहिए?

अ. परिणाम लाने वाला ब. मिलनसार

स. अवसरवादी द. सफल

शत्रुविजयी

160 यदि चंद्रमा कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. शत्रुविजयी ब. मानवतावादी

स. स्वार्थी द. सर्वगुण सम्पन्न

कार्य बंद हो सकता है

161 गोवंश सेवा के क्षेत्र में यदि कृतिका नक्षत्र के तीसरे चरण के व्यक्ति की उपस्थिति है तो क्या खतरा है?

अ. कार्य बंद हो सकता है ब. भयंकर नुकसान

स. विश्वासघात द. बदनामी

अप्रमाणिक

162 यदि कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. अप्रमाणिक ब. स्वार्थी

स. नीच द. प्राणघातक

दानी

163 चुनौती वाले गोवंश सेवा के कार्य में कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण वाले व्यक्ति की भूमिका क्या होगी?

अ. दानी ब. धनवान

स. अप्रमाणिक द. विश्वासघाती

दानी

164 यदि चंद्रमा कृतिका के चौथे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. दानी ब. धनवान

स. मानवतावादी द. उदार

मधुरवाणी

165 असफल गोवंश सेवा का कार्य सही करने के लिए रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण वाले व्यक्ति की आवश्यकता क्यों है?

अ. मधुरवाणी ब. विवेकी

स. वीर द. लड़ने वाला

मधुर वाणी वाला

166 यदि चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. मधुरवाणी ब. मनमोहक

स. आक-र्क द. जाग्रत

दयालु

167 असफल गोवंश सेवा के कार्य में अच्छे परिणाम लाने के लिए रोहिणी नक्षत्र के दूसरे चरण के व्यक्ति की भूमिका क्या है?

अ. दयालु ब. परोपकारी

स. उदार द. सेवाभावी

आक-र्क

168 यदि चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. आक-र्क ब. प्रभावशाली

स. मनमोहक द. उदार

नुकसान

169 संवेदनशील गोवंश सेवा के कार्य में यदि रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण के व्यक्ति से क्या परेशानियां हैं?

अ. नुकसान ब. रुकावटें

स. गति धीमी द. पतन

स्वार्थी

170 यदि चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता हे?

अ. स्वार्थी ब. चोर

स. मक्कार द. पापी

आक-र्क

171 यदि चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र के चौथे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. आक-र्क ब. सुंदर

स. मनमोहक द. प्रभावशाली

असंतुलित

172 संवेदनशील गोवंश सेवा के कार्य में मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण के व्यक्ति से खतरा क्यों है?

अ. असंतुलित ब. अस्थिर

स. स्वार्थी द. कामी

स्वार्थी

173 यदि चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. स्वार्थी ब. दूरदर्शी

स. असाधारण द. सर्वश्रे-ठ

सनकी

174 यदि चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. सनकी ब. धूनी

स. पागल द. मस्त

प्रभावशाली

175 यदि चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. प्रभावशाली ब. आक-र्क

स. मनमोहक द. सर्वगुण सम्पन्न

उत्साही

176 यदि चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. उत्साही ब. जल्दबाज

स. मनमोहक द. सनकी

पापी

177 यदि चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. पापी ब. अविश्वासी

स. दु-ट द. क्रूर

झगड़ालू

178 यदि चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. झगड़ालू ब. आक्रामक

स. दु-ट द. क्रूर

क्रियाशील

179 यदि चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. क्रियाशील ब. सक्रिय

स. टीकाकार द. अवसरवादी

चतुर

180 यदि चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. चतुर ब. विनोदी

स. मिलनसार द. अवसरवादी

उदार

181 यदि चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. उदार ब. समझदार

स. विद्वान द. विनोदी

उदार

182 यदि चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. उदार ब. मानवतावादी

स. चतुर द. अवसरवादी

बुद्धिशाली

183 यदि चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. बुद्धिशाली ब. महत्वकांक्षी

स. अदभुत स्मरणशक्तिवाला द. भाग्यशाली

प्रमाणिक

184 यदि चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. प्रमाणिक ब. सत्यप्रेमी

स. दयालु द. क्षमावान

आत्मविश्वासी

185 यदि चंद्रमा पु-य नक्षत्र के पहले चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. आत्मविश्वासी ब. मितव्ययी

स. उत्साही द. सफल

परस्त्रीगमन

186 यदि चंद्रमा पु-य नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. परस्त्री गमन ब. झगड़ालू

स. लोभी द. बुद्धिशाली

शांत स्वभाव वाला

187 यदि चंद्रमा पु-य नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. शांत स्वभाव वाला ब. मिलनसार

स. उत्साही द. सफल

झगड़ालू

188 यदि चंद्रमा पु-य नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. झगड़ालू ब. कंजूस

स. चोर वृति द. अवसरवादी

सत्कर्मी

189 यदि चंद्रमा आश्ले-ा नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. सत्कर्मी ब. नकल करने में होशियार

स. पढ़ने में होशियार द. ग्रहण करने की शक्ति अच्छी

व्यसनी

190 यदि चंद्रमा आश्ले-ा नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. व्यसनी ब. तुफानी

स. धन उड़ाने वाला द. संगीत का प्रेमी

ठग

191 यदि चंद्रमा आश्ले-ा नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता हे तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. ठग ब. बातूनी

स. पापी द. क्रोधी

लिखने पढ़ने का प्रेमी

192 यदि चंद्रमा आश्ले-ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. लिखने पढ़ने का प्रेमी ब. यात्रा का प्रेमी

स. सफल द. उदार

सुखी

193 यदि चंद्रमा मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता हे तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. सुखी ब. स्वतंत्र

स. कामुक द. झगड़ालू

दानी

194 यदि चंद्रमा मघा नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. दानी ब. एकांतवासी

स. सुधारक द. स्वतंत्र

वफादार

195 यदि चंद्रमा मघा नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. वफादार ब. विद्वान

स. न्यायी द. बुद्धिशाली

विवेकी

196 यदि चंद्रमा मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. विवेकी ब. वफादार

स. नरम द. सफल

आनंदी

197 यदि चंद्रमा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. आनंदी ब. विवेकी

स. विनयी द. सुखी

साहसिक

198 यदि चंद्रमा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. साहसिक ब. वैभवशाली

स. आनंदी द. मिलनसार

कसरत प्रेमी

199 यदि चंद्रमा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. कसरत प्रेमी ब. गणित का प्रेमी

स. रुढ़ीवादी द. सफल

वैरागी

200 यदि चंद्रमा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. वैरागी ब. एकांतप्रेमी

स. कसरत प्रेमी द. सफल

तुफानी

201 यदि चंद्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. तुफानी ब. उतावला

स. अभय द. स्वतंत्र

धर्मवान

202 यदि चंद्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के दूसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. धर्मवान ब. अभियंता

स. सफल द. उदार

अभिमानी

203 यदि चंद्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के तीसरे चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. अभिमानी ब. झगड़ालू

स. पाखंडी द. पापी

अच्छे स्वभाव वाले

204 यदि चंद्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. अच्छे स्वभाव वाले ब. सुगंध प्रेमी

स. संगीत प्रेमी द. सफल

काल्पनिक विचारों वाला

205 यदि चंद्रमा हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में रहता है तो जन्म के समय में क्या प्रभाव पड़ता है?

अ. काल्पनिक विचारों वाला ब. स्वस्थ

स. युवान द. सक्रिय

206 कौन सी राशि चंद्रमा की है?

अ. कर्क ब. सिंह

स. तुला द. मिथुन

विचारों में परिवर्तन

207 क्या प्रभाव मानव पर चंद्रमा का पड़ता है?

अ. विचारों का परिवर्तन ब. व्यवहार में परिवर्तन

स. वाणी में बदलाव द. मूत्र का रंग बदलना

16

208 कितनी कलाएं चंद्रमा की हैं?

अ. 16 ब. अनगिनत

स. 64 द. 1

धरती

209 किसका पुत्र है चंद्रमा?

अ. धरती ब. सूर्य

स. बलि द. वि-णु

9

210 मंगल का अंक कितना है?

अ. 9 ब. 8

स. 1 द. 2

लाल

211 मंगल का रंग क्या है?

अ. लाल ब. पीला

स. हरा द. नीला

सेनापति

212 मंगल ग्रहों का क्या है?

अ. सेनापति ब. गुप्तचर

स. को-ाध्यक्ष द. सचिव

रक्त

213 मंगल किसको सबसे अधिक प्रभावित करता है?

अ. रक्त ब. जल

स. वीर्य द. थूक

7

214 मंगल की महादशा कितने साल की होती है?

अ. 7 ब. 1

स. 2 द. 3

आठवे भाव में मंगल है

215 मंगली कब बनता है?

अ. मंगल यदि 8 वे भाव में है ब. मंगल 12 वे भाव में है

स. प्रथम भाव में हे द. सातवे भाव में हे

मंगलवार

216 मंगल का दिन कौन सा है?

अ. मंगलवार ब. वीरवार

स. बृहस्पतिवार द. हर दिन

45 दिन

217 एक राशि में मंगल कितने समय रहता है?

अ. 45 दिनों ब. 1 दिन

स. 2 दिन द. 3 दिन

शुभ

218 मंगल मे-ा राशि में रहने पर मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. अच्छा

स. अनुकूल द. वरदायी

साहसी

219 मंगल व्यक्ति को क्या बनाता है?

अ. साहसी ब. वीर

स. पराक्रमी द. लड़ाकू

अनुकूल

220 मे-ा लग्न में मंगल मानव के लिए कैसा है?

अ. अनुकूल ब. उच्च

स. नीच द. सुनहरा

अ-टम

221 मानव के लिए मंगल बाधक कब बनता है?

अ. अ-टम ब. 12 वे भाव

स. लग्न द. सप्तम

अच्छा

222 मंगल यदि प्रथम भाव में है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. अच्छा ब. वरदायी

स. अति प्रसन्न द. कृपालू

मंगली

223 यदि व्यक्ति मंगली है तो विवाह के समय में क्या सावधानी आवश्यक है?

अ. मंगली ब. अमंगली

स. कुंडली मिलान द. पूजा

विवाह में देरी

224 व्यक्ति यदि मंगली है तो क्या परेशानी संभव है?

अ. विवाह में देरी ब. विवाह संबंध में दरार

स. विवाह टूटना द. विवाहित जीवन घातक

उग्र स्वभाव

225 यदि व्यक्ति मंगली है तो क्या परेशानियां हैं?

अ. स्वभाव उग्र ब. हत्यारा

स. उन्मादी द. आक्रमक

अस्थिर

226 यदि व्यक्ति मंगली है तो मन कैसा रहता है?

अ. असंतुलित ब. अस्थिर

स. चंचल द. गतिवान

शुभ

227 लग्न में यदि मंगल है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. शुभ ब. सामान्य

स. घातक द. बुरा

कपिला का दान

228 धन भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. कपिला का दान ब. सुरभि का दान
स. कामधेनु का दान द. गो वत्स दान
अशुभ
229 धन भाव यानी दूसरे भाव में मंगल रहता है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. मंगलमय
स. सामान्य द. दिव्य
सवत्स गउ
230 पराक्रम भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या दान करना चाहिए?
अ. सवत्स गउ ब. कपिला
स. सुरभि द. कामधेनु
अशुभ
231 पराक्रम भाव में यदि मंगल है तो मानव के लिए कैसा है?
अ. अशुभ ब. अदभुत
स. दिव्य द. सामान्य
गोचर भूमि का दान
232 चौथे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. गोचर भूमि का दान ब. गोदान
स. सवत्स गउ का दान द. नंदी दान
अशुभ
233 चौथे भाव में यदि मंगल है तो मानव के लिए कैसा है?
अ. अशुभ ब. मंगलमय
स. मधुर द. उत्तम
सवत्स गउ का दान
234 पांचवे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए क्या करना है?
अ. सवत्स गउ का दान ब. गोचर भूमि का दान
स. नंदी का दान द. गो वत्स का दान
अशुभ
235 पांचवे भाव में मंगल है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. असामान्य
स. उत्तम द. मंगलमय
नंदी दान
236 सातवे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?
अ. नंदी दान ब. गो वत्स दान
स. गोचर भूमि दान द. सुरभि दान
अशुभ
237 सातवे भाव में मंगल है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. उत्तम
स. मंगलमय द. सामान्य
गोचर भूमि सहित गो दान
238 आठवे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?
अ. गोचर भूमि सहित गो दान ब. गो वत्स दान
स. गो दान द. सोने का दान
अशुभ
239 आठवे भाव में मंगल है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. उत्तम
स. सामान्य द. सर्वश्रे-ठ
कपिला का दान
240 नवमें भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. कपिला का दान ब. गोचर भूमि का दान
स. सवत्स गउ का दान द. नंदी दान
अशुभ
241 नवमें भाव में मंगल है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. मंगलमय
स. उत्तम द. सामान्य
शुभ
242 दसवे भाव में मंगल हे तो कैसा है?
अ. शुभ ब. मंगलमय
स. उत्तम द. दिव्य
सवत्स गउ
243 ग्यारहवे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या दान करना है?
अ. सवत्स गउ ब. कपिला
स. लाल गाय द. युवा गाय
अशुभ
244 ग्यारहवे भाव में मंगल है तो कैसा है?
अ. अशुभ ब. बुरा
स. मंगलमय द. उत्तम
गोचर भूमि का दान

245 बारहवे भाव में मंगल के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या दान करना चाहिए?

अ. गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास

स. नंदी का दान द. हरा घांस

अशुभ

246 बारहवे भाव में मंगल है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. बुरा

स. मंगलमय द. उत्तम

5

247 बुध ग्रह का अंक क्या है?

अ. 5 ब. 4

स. 3 द. 2

हरा

248 बुध का रंग कौन सा है?

अ. हरा ब. लाल

स. पीला द. नीला

पन्ना

249 बुध ग्रह का रत्न क्या है?

अ. पन्ना ब. हीरा

स. मोती द. नीलम

1 माह

250 एक राशि में बुध कितने समय रहता है?

अ. 1 माह ब. 1 दिन

स. 1 घंटा द. 1 मिनट

17 साल

251 बुध की महादशा कितने समय की होती है?

अ. 17 साल ब. 1

स. 2 द. 3

कन्या राशि

252 बुध उच्च किस राशि में होता है?

अ. कन्या राशि में ब. हर राशि में

स. स्वग्रही द. तुला

नपुंसक

253 बुध क्या है?

अ. नपुंसक ब. अनुकूल

स. अशुभ द. क्रूर

बुधवार

254 बुध का दिन कौन सा है?

अ. बुधवार ब. सभी दिन

स. पूनम द. अमावस्या

मन में भ्रम

255 बुध का प्रभाव गोचर में कमजोर रहने पर मानव पर कैसा रहता है?

अ. मन में भ्रम ब. बुद्धि दूषित

स. बहुत ही घातक द. मृत्यु

स्मृतिनाश

256 बुध यदि गोचर में कमजोर है तो कौन सी बीमारी हो सकती है?

अ. स्मृतिनाश ब. भ्रम

स. मंदबुद्धि द. विकलांग

गरीबी

257 बुध यदि गोचर में कमजोर है तो क्या संभावनाएं हैं?

अ. गरीबी ब. कायरता

स. नपुंसकता द. चरित्रहीन

बैंकिग

258 बुध का संबंध किससे है?

अ. बैंकिग ब. व्यापार

स. विद्या द. धन

उत्तम

259 बुध यदि दूसरे भाव में है तो कैसा है?

अ. उत्तम ब. सर्वश्रे-ठ

स. मंगलमय द. शुभ

उत्तम

260 बुध यदि तीसरे भाव में है तो कैसा है?

अ. उत्तम ब. कल्याणकारी

स. वृद्धिकारक द. बुद्धिदायक

गोचर भूमि का दान

261 चौथे भाव में बुध के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास

स. गोशाला खोलना द. नंदीशाला

अशुभ

262 बुध यदि चौथे भाव में है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. अनर्थकारी

स. विनाशकारी द. सत्यानाशी

उन्नतिकारक

263 पांचवे भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. उन्नतिकारक ब. भाग्यवर्धक

स. बुद्धिवर्धक द. क्रांतिकारी

सवत्स गउ का दान

264 सातवे भाव में बुध के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. सवत्स गउ का दान ब. गो वत्स का दान

स. नंदी का दान द. गो ग्रास

अशुभ

265 सातवे भाव में बुध है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. नुकसानदायक

स. सामान्य द. उत्तम

कपिला का दान

266 आठवे भाव में बुध के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. कपिला का दान ब. सवत्स गउ

स. कामधेनु द. सुरभि

अशुभ

267 आठवे भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. मंगलमय

स. आनन्दकारी द. मधुर

उत्तम

268 नवमें भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. उत्तम ब. अच्छा

स. शुभ द. प्रगतिशील

अच्छा

269 दसवे भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. अच्छा ब. उत्तम

स. उन्नतिकारक द. सर्वश्रे-ठ

अच्छा

270 ग्यारहवे भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. अच्छा ब. बुरा

स. सामान्य द. उत्तम

गोचर भूमि गोवंश सहित दान

271 बारहवे भाव में बुध के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. गोचर भूमि गोवंश सहित दान ब. गोचर भूमि

स. गो ग्रास द. नंदी का दान

अशुभ

272 बारहवे भाव में यदि बुध है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. व्ययकारक

स. मंगलमय द. उत्तम

3

273 गुरु का अंक क्या है?

अ. 3 ब. 4

स. 5 द. 6

पीला

274 गुरु का रंग क्या है?

अ. पीला ब. सुनहरा

स. सफेद द. चमकीला

पुखराज

275 गुरु का रत्न क्या है?

अ. पुखराज ब. हीरा

स. मोती द. मूंगा

16

276 गुरु की महादशा कितने साल की होती है?

अ. 16 ब. 6

स. 7 द. 8

सात्विकता

277 गुरु ग्रह मानव को क्या देता हे?

अ. सात्विकता ब. विद्या

स. धन द. राज

1 साल 1 माह

278 गुरु एक राशि में कितने समय के लिए रहता है?

अ. 1 साल 1 माह ब. 1 माह

स. 1 दिन द. 1 मिनट

कर्क

279 किस राशि में गुरु उच्च का होता है?

अ. कर्क ब. तुला

स. सिंह द. कन्या

गुरुवार

280 सप्ताह में गुरु का दिन कौन सा है?

अ. गुरुवार ब. वीरवार

स. बृहस्पतिवार द. हर दिन

पतन

281 गोचर में यदि गुरु कमजोर है तो मानव पर क्या संभावनाएं हैं?

अ. पतन ब. भ्रम

स. चरित्रहीन द. कैंसर

सत्युग

282 किस युग में गुरु सबसे अधिक अच्छा है?

ाअ. सत्युग ब. त्रेता

स. द्वापर द. कलियुग

बहुत अधिक महत्वपूर्ण

283 कलियुग में गुरु की भूमिका क्या है?

अ. बहुत अधिक महत्वपूर्ण ब. सामान्य

स. असामान्य द. शुभ

गुरु

284 देवत्व में वृद्धि किसके कारण संभव है?

अ. गुरु ब. धर्म

स. सत्य द. सदाचार

गुरु

285 उदारता किसके कारण संभव है?

अ. गुरु ब. शुक्र

स. शनि द. सूर्य

गुरु

286 सात्विकता किसके कारण संभव हे?

अ. गुरु ब. राहू

स. केतु द. मंगल

गुरु

287 उच्च शिक्षा किसके कारण संभव है?

अ. गुरु ब. सूर्य

स. राहू द. केतु

गुरु

288 मानव की आयु में वृद्धि किसके कारण संभव है?

अ. गुरु ब. सूर्य

स. चंद्र द. मंगल

गुरु

289 दान की वृत्ति किसके कारण उत्पन्न होती है?

अ. गुरु ब. बुध

स. सूर्य द. राहू

उत्तम

290 धन भाव में यदि गुरु है तो मानव को क्या परिणाम मिलेगा?

अ. उत्तम ब. शुभ

स. अच्छा द. बुरा

गोवंश सहित गोचर भूमि का दान

291 तृतीय भाव में गुरु के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?

अ. गोवंश सहित गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास

स. गोशाला प्रारम्भ करना द. सोने का दान

अशुभ

292 तृतीय भाव में यदि गुरु है तो क्या संभावनाएं हें?
अ. अशुभ ब. उत्तम
स. अच्छा द. मंगलमय

शुभ

293 चतुर्थ भाव में यदि गुरु है तो मानव के लिए कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

294 पंचम भाव में यदि गुरु है तो फल कैसा मिलेगा?
अ. शुभ ब. मंगलमय
स. उत्तम द. बुरा

शुभ

295 सातवे भाव में यदि गुरु है तो परिणाम कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. मंगलमय
स. बुरा द. उत्तम

शुभ

296 आठवे भाव में यदि गुरु है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. उत्तम
स. मंगलमय द. बुरा

शुभ

297 नवमें भाव में यदि गुरु है तो फल कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. मंगलमय
स. सर्वश्रे-ठ द. उत्तम

शुभ

298 दसवे भाव में यदि गुरु है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. बुरा
स. अशुभ द. हानिकारक

शुभ

299 ग्यारहवे भाव में यदि गुरु है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. उत्तम
स. बुरा द. गलत

उत्तम संपत्ति

300 ग्यारहवे भाव में यदि गुरु है तो व्यक्ति की उन्नति कैसे संभव है?
अ. उत्तम संपत्ति ब. अपार ऐश्वर्य
स. देवहंडा द. अनायास प्राप्ति

गोवंश सहित गोचर भूमि का दान

301 बारहवे भाव में गुरु के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?
अ. गोवंश सहित गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास
स. सवत्स गउ द. नंदी

अशुभ

302 बारहवे भाव में यदि गुरु है तो परिणाम क्या मिलेगा?
अ. अशुभ ब. अच्छा
स. बहुत अच्छा द. उत्तम

6

303 शुक्र का अंक क्या है?

अ. 6 ब. 7

स. 8 द. 9

सफेद

304 शुक्र का रंग क्या हे?

अ. सफेद ब. काला

स. पीला द. लाल

हीरा

305 शुक्र का रत्न क्या है?

अ. हीरा ब. मोती

स. मूंगा द. पन्ना

20 साल

306 शुक्र की महादशा कितने साल की होती है?

अ. 20 साल ब. 1

स. 2 द. 3

सेक्स संबंध

307 कलियुग में शुक्र क्यों महत्वपूर्ण है?

अ. सेक्स संबंध ब. ऐश्वर्य

स. भौतिक सुख द. मनोरंजन

मूत्र रोग

308 गोचर में यदि शुक्र कमजोर है तो क्या बीमारी मानव को संभव है?

अ. मूत्र रोग ब. नपुंसकता

स. चरित्रहीन द. एडस

स्वग्रही

309 कलियुग में मानव को सबसे अधिक मदद कब शुक्र करता है?

अ. स्वग्रही ब. गुरु के साथ

स. सूर्य के साथ द. मंगल के साथ

हवन

310 कलियुग में मानव शुक्र के प्रभाव को अनुकूल करने के लिए क्या उपाय करता है?

अ. हवन ब. पूजन

स. व्रत द. जप

शुक्रवार

311 सप्ताह में कौन सा दिन शुक्र का है?

अ. शुक्रवार ब. कोई भी दिन

स. हर दिन द. पता नहीं

30

312 एक राशि में शुक्र कितने दिन रहता है?

अ. 30 ब. 20

स. 10 द. 1 दिन

शुक्र

313 कामुकता के लिए कौन सा ग्रह प्रमुख है?

अ. शुक्र ब. गुरु

स. बुध द. मंगल

शुक्र

314 मंत्रों के लिए कौन सा ग्रह प्रमुख है?

अ. शुक्र ब. सूर्य

स. चंद्र द. मंगल

शुक्र

315 कलियुग में धनवान बनने के लिए किस ग्रह का महत्व है?

अ. शुक्र ब. गुरु

स. बुध द. मंगल

शुक्र

316 कलियुग में भौतिक उन्नति के लिए किस ग्रह की भूमिका महत्वपूर्ण है?

अ. शुक्र ब. सूर्य

स. मंगल द. बुध

शुक्र

317 तुला राशि का मुख्य ग्रह कौन है?

अ. शुक्र ब. बुध

स. मंगल द. चंद्र

शुक्र

318 वृ-ा राशि का मुख्य ग्रह कौन हे?

अ. शुक्र ब. सूर्य

स. चंद्र द. बुध

स्वग्रही

319 तुला राशि में शुक्र क्या होता है?

अ. स्वग्रही ब. उच्च

स. नीच द. मुख्य

शुक्र

320 स्त्री का मुख्य कारक कौन है?

अ. शुक्र ब. चंद्र

स. बुध द. केतु

शुभ

321 धन भाव में यदि शुक्र है तो मानव को क्या परिणाम मिलेगा?

अ. शुभ ब. अशुभ

स. उत्तम द. मंगलमय

नंदी सहित गोचर भूमि का दान

322 तृतीय भाव में शुक्र के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए क्या करना है?
अ. नंदी सहित गोचर भूमि का दान ब. गो ग्रास
स. कपिला द. सुरभि

अशुभ

323 तृतीय भाव में यदि शुक्र है तो क्या संभावनाएं हैं?
अ. अशुभ ब. शुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

324 चतुर्थ भाव में यदि शुक्र है तो मानव के लिए कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

325 पंचम भाव में यदि शुक्र है तो फल कैसा मिलेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

मन के अनुकूल

326 सातवे भाव में यदि शुक्र है तो जीवन साथी की क्या संभावना है?
अ. मन के अनुकूल ब. अच्छा
स. सुंदर द. गुणवान

शुभ

327 सातवे भाव में यदि शुक्र है तो परिणाम कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

328 आठवे भाव में यदि शुक्र है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

329 नवमें भाव में यदि शुक्र है तो फल कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

330 दसवे भाव में यदि शुक्र है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

शुभ

331 ग्यारहवे भाव में यदि शुक्र है तो कैसा रहेगा?
अ. शुभ ब. अशुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

अशुभ

332 बारहवे भाव में यदि शुक्र है तो परिणाम क्या मिलेगा?
अ. अशुभ ब. शुभ
स. उत्तम द. मंगलमय

पुलिस

333 किससे गहरा संबंध शनि से है?

अ. पुलिस ब. न्यायधीश

स. सेना द. सुरक्षा

कठोर दंड

334 गोमांस के सेवन करने पर शनि क्या करता है?

अ. कठोर दंड ब. मृत्यु

स. फांसी द. जेल

रासायनिक नमक

335 क्या सेवन करने पर शनि का कठोर दंड मिलता है?

अ. रासायनिक नमक ब. रासायनिक खाद

स. रासायनिक कीटनाशक द. चाय

कठोर दंड

336 खतरनाक नशीली वस्तुओं के सेवन करने पर शनि के द्वारा क्या होता है?

अ. कठोर दंड ब. मृत्यु

स. बीमारी द. दुर्घटना

8

337 शनि का अंक क्या है?

अ. 8 ब. 1

स. 2 द. 3

क्रूर

338 शनि ग्रह क्या है?

अ. क्रूर ब. नीच

स. दु-ट द. पापी

लंगड़ी

339 शनि की चाल कैसी है?

अ. लंगड़ी ब. धीमी

स. मंद द. शने शने

रोम छिद्रों में

340 शनि विराट पुरु-ा के किस स्थान में है?

अ. रोम छिद्रों में ब. हर जगह

स. सांस द. सिर

संचित कर्म

341 शनि किस आधार पर दंड देता है?

अ. संचित कर्म ब. पाप

स. गलती द. दो-ा

पनौती

342 सबसे अधिक किस समय में शनि दंड देता है?

अ. पनौती ब. महादशा

स. हर समय द. कर्म के अनुसार

मंद गति

343 मानव शनि के कारण क्या करता है?

अ. मंद गति ब. धीमा

स. आलस द. प्रमाद

काला

344 शनि का रंग क्या हे?

अ. काला ब. सफेद

स. पीला द. लाल

नीलम

345 शनि का रत्न कौन सा है?

अ. नीलम ब. हीरा

स. मोती द. मूंगा

गो दान

346 महादशा में प्रायश्चित करना कैसे संभव है?

अ. गोदान ब. नंदी दान

स. गो वत्स दान द. गोचर भूमि का दान

एक बार

347 मानव के जीवन में कितनी बार शनि की महादशा आती है?

अ. एक बार ब. कभी नहीं

स. पता नहीं द. कभी भी

परेशानियां

348 महादशा में क्या होता है?

अ. परेशानियां ब. आक्रमण

स. विश्वासघात द. कपट

अग्निहोत्र

349 अंतिम बड़ी पनौती में प्रायश्चित कैसे करें?

अ. अग्निहोत्र ब. पंचगव्य सेवन

स. गो ग्रास द. गोचर भूमि का दान

मृत्यु

350 अंतिम बड़ी पनौती में क्या हो सकता है?

अ. मृत्यु ब. अंत

स. आत्महत्या द. हत्या

19 साल

351 शनि की महादशा कितने समय की है?
अ. 19 साल ब. 1 साल
स. 2 साल द. 3 साल

न्याय

352 शनि किसका कारक है?
अ. न्याय ब. दंड
स. भाग्य द. कर्म

यम

353 शनि किसका भाई है?
अ. यम ब. देवता
स. राक्षस द. मृत्यु

सूर्य

354 शनि किसका पुत्र है?
अ. सूर्य ब. वि-णु
स. ब्रहमा द. महाकाल

ढाई

355 शनि एक राशि में कितना समय रहता है?
अ. ढाई साल ब. 1 साल
स. 2 साल द. 3 साल

वक्री

356 शनि कैसे देखता है?
अ. वक्री ब. तिरछी
स. दोनों ओर द. सीधा

पापी

357 शनि कैसा ग्रह है?
अ. पापी ब. क्रूर
स. कठोर द. धीमा

बुद्धि

358 शनि किसको सबसे अधिक प्रभावित करता है?
अ. बुद्धि ब. मन
स. चित्त द. रक्त

कृ-ण

359 शनि किसका भक्त है?
अ. कृ-ण ब. ब्रहमा
स. सूर्य द. देवी

कृ-ण

360 शनि किसकी भक्ति करने पर प्रसन्न होता है?
अ. कृ-ण ब. यमुना जी
स. गोमाता द. कामधेनु

नीच

361 शनि मे-ा राशि में कैसा होता है?
अ. नीच ब. उच्च
स. शांत द. स्थिर

उच्च

362 शनि तुला राशि में कैसा होता है?
अ. उच्च ब. नीच
स. वक्री द. तीव्र

कैंसर

363 बड़ी पनौती में किसकी संभावना है?
अ. कैंसर ब. रक्त का गाढ़ा होना
स. पैरों में परेशानी द. कोढ़

नौकरों

364 बड़ी पनौती में किससे सबसे अधिक परेशानी होती है?
अ. नौकरों से परेशानी ब. संतान
स. पत्नी द. मित्र

शनि

365 बड़ी पनौती किसकी होती है?
अ. शनि ब. सूर्य
स. मंगल द. बुध

शनि

366 पनौती किसकी मानी जाती है?
अ. शनि ब. सूर्य
स. मंगल द. बुध

शनि

367 छोटी पनौती किसकी मानी जाती है?
अ. शनि ब. बुध
स. सूर्य द. राहू

साढ़े सात साल

368 शनि की बड़ी पनौती कितने साल की होती है?
अ. साढ़े सात साल ब. पांच साल
स. ढाई साल द. 1 साल

3

369 शनि की बड़ी पनौती मानव के जीवन में कितनी बार आती है?
अ. 3 ब. 2
स. 1 द. बहुत बार

मुंह

370 100 दिन बड़ी पनौती में शनि कहां पर रहता है?
अ. मुंह ब. पैर
स. कंधा द. सिर

अच्छा

371 400 दिनों तक शनि बड़ी पनौती में कैसा रहता है?

अ. अच्छा ब. उत्तम

स. शुभ द. श्रे-ठ

पैर

372 600 दिनों तक बड़ी पनौती में शनि कहां पर रहता है?

अ. पैर ब. पैर

स. सिर द. कंधा

यात्रा

373 पैरों पर शनि मानव को क्या करता है?

अ. यात्रा ब. गति

स. एकांतवास द. गमन

पेट

374 500 दिनों तक बड़ी पनौती में शनि कहां पर रहता है?

अ. पेट ब. मुंह

स. पैर द. कंधा

बाये कंधे

375 400 दिनों तक शनि कहां पर रहता है?

अ. बाये कंधे ब. पैर

स. पेट द. सिर

सिर

376 300 दिनों तक शनि कहां पर रहता है?

अ. सिर ब. पैर

स. पेट द. मुंह

देर से धन मिलता है

377 धन भाव में यदि शनि है तो क्या होता है?

अ. देर से धन मिलता है ब. मेहनत बेकार है

स. बाधाएं द. आलस

काली गो का दान

378 धन भाव में यदि शनि है तो मानव को अपना प्रायश्चित कैसे किया जाये?

अ. काली गो का दान ब. काले नंदी का दान

स. गोचर भूमि का दान द. गोमूत्र सेवन

अशुभ

379 धन भाव में यदि शनि है तो मानव को क्या परिणाम मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सर्वोत्तम द. मंगलमय

अशुभ

380 तृतीय भाव में यदि शनि है तो क्या संभावनाएं हैं?

अ. अशुभ ब. मंगलमय

स. उत्तम द. अच्छा

अशुभ

381 चतुर्थ भाव में यदि शनि है तो मानव के लिए कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. अच्छा द. मंगलमय

अशुभ

382 पंचम भाव में यदि शनि है तो फल कैसा मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. मंगलमय द. अच्छा

अशुभ

सातवे भाव में यदि शनि है तो परिणाम कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. अच्छा द. सर्वश्रे-ठ

अशुभ

383 आठवे भाव में यदि शनि है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. बहुत ही अच्छा

स. उत्तम द. अच्छा

अशुभ

नवमें भाव में यदि शनि है तो फल कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

384 दसवे भाव में यदि शनि है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

ग्यारहवे भाव में यदि शनि है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

385 बारहवे भाव में यदि शनि है तो परिणाम क्या मिलेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

पाप ग्रह

386 राहू क्या है?

अ. पाप ग्रह ब. छाया ग्रह

स. मायावी द. धोखा

नहीं

387 राहू का अस्तित्व ब्रहमांड में है या नहीं?

अ. नहीं ब. है

स. पता नहीं द. संदेह है

अशुभ

388 धन भाव में यदि राहू है तो मानव को क्या परिणाम मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. मध्यम द. सामान्य

शुभ

389 तृतीय भाव में यदि राहू है तो कलियुग में मानव के लिए भवि-य में क्या संभावनाएं हैं?

अ. शुभ ब. सामान्य

स. मध्यम द. उत्तम

अशुभ

390 चतुर्थ भाव में यदि राहू है तो मानव के लिए कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

391 पंचम भाव में यदि राहू है तो फल कैसा मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. मध्यम द. सामान्य

अशुभ

392 सातवे भाव में यदि राहू है तो परिणाम कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

393 आठवे भाव में यदि राहू है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. मध्यम द. उत्तम

अशुभ

394 नवमें भाव में यदि राहू है तो फल कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सर्वश्रे-ठ द. मध्यम

अशुभ

395 दसवे भाव में यदि राहू है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. मध्यम द. सामान्य

शुभ

396 ग्यारहवे भाव में यदि राहू है तो मानव के लिए कलियुग में कैसा रहेगा?

अ. शुभ ब. मध्यम

स. अशुभ द. बुरा

अशुभ

397 बारहवे भाव में यदि राहू है तो परिणाम क्या मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सर्वश्रे-ठ द. मध्यम

ढेड़ साल

398 एक राशि में राहू कितने समय रहता है?

अ. ढेड़ साल ब. पता नहीं

स. बहुत समय द. कम समय

18

399 राहू की महादशा कितने साल की होती है?

अ. 18 ब. 1

स. 2 द. 3

गरीब से अमीर

400 कलियुग में राहू मानव को क्या करता है?

अ. गरीब से अमीर ब. अमीर से गरीब

स. बीमार द. मायावी

छल कपट

401 कलियुग में मानव के लिए राहू कैसे मदद करता है?

अ. छल कपट ब. माया

स. प्रपंच द. झूठ

अशुभ

402 लग्न में केतु यदि है तो कैसे परिणाम मिलेंगे?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सर्वश्रे-ठ द. असाधारण

अशुभ

403 धन भाव में यदि केतु है तो मानव को क्या परिणाम मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सामान्य द. मध्यम

शुभ

404 तृतीय भाव में यदि केतु है तो क्या संभावनाएं हैं?

अ. शुभ ब. अशुभ

स. उत्तम द. मध्यम

अशुभ

405 चतुर्थ भाव में यदि केतु है तो मानव के लिए कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. मध्यम

स. सामान्य द. उत्तम

अशुभ

406 पंचम भाव में यदि केतु है तो फल कैसा मिलेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सामान्य द. मध्यम

अशुभ

407 छठवे भाव में यदि केतु है तो परिणाम कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. मध्यम

स. उत्तम द. सामान्य

अशुभ

408 सातवे भाव में यदि केतु है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. मध्यम द. उत्तम

अशुभ

409 आठवा भाव का केतु यदि है तो कैसा है?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. सामान्य द. मध्यम

अशुभ

410 नवमें भाव में यदि केतु है तो फल कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. सामान्य

स. मध्यम द. उत्तम

अशुभ

411 दसवे भाव में यदि केतु है तो कैसा रहेगा?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. मध्यम द. उत्तम

शुभ

412 ग्यारहवे भाव में यदि केतु है तो कैसा रहेगा?

अ. शुभ ब. उत्तम

स. बुरा द. मध्यम

शुभ

413 बारहवे भाव में यदि केतु है तो परिणाम क्या मिलेगा?

अ. शुभ ब. मध्यम

स. बुरा द. सामान्य

राहू का आधा भाग

414 केतु क्या है?

अ. राहू का आधा भाग ब. छाया

स. मायावी द. क्रूर

ढेड़ साल

415 केतु एक राशि में कितने समय तक रहता है?

अ. ढेड़ साल ब. 1 दिन

स. 1 घंटे द. 1 पल

काला

416 केतु का रंग कैसा है?

अ. काला ब. भूरा

स. नीला द. पीला

नीच

417 केतु मिथुन राशि में कैसा होता है?

अ. नीच ब. उच्च

स. असाधारण द. क्रांतिकारी

नीच

418 केतु वृ-ा राशि में कैसा होता है?

अ. नीच ब. उच्च

स. अशुभ द. उत्तम

उच्च

419 केतु वृश्चिक राशि में कैसा होता है?

अ. उच्च ब. नीच

स. अशुभ द. उत्तम

स्वग्रही

420 मीन राशि में केतु कैसा होता है?

अ. स्वग्रही ब. नीच

स. उच्च द. उत्तम

उच्च

421 धनु राशि में केतु कैसा होता है?

अ. उच्च ब. नीच

स. स्वग्रही द. अनुकूल

अशुभ

422 मे-ा लग्न में केतु कैसा होता है?

अ. अशुभ ब. उत्तम

स. उच्च द. नीच

पिता से असहयोग

423 केतु सूर्य के साथ में कैसा होता हे?

अ. पिता से असहयोग ब. पिता से मदद नहीं

स. पिता से मन मुटाव द. पिता से सहयोग

ग्रहणयोग

424 केतु चंद्र के साथ में है तो मानव के लिए कैसा है?

अ. ग्रहणयोग ब. उत्तम

स. सामान्य द. सर्वश्रे-ठ

धुमकेतु

425 केतु में प्रधान केतु को किस नाम से जाना जाता है?

अ. धुमकेतु ब. चित्रकेतु

स. अकेतु द. नचिकेता

भारतीय गाय माता और भारतीय ज्योतिष एवं वास्तु

भारतीय ज्योतिष विज्ञान और वैदिक चिकित्सा शास्त्र का संबंध प्राचीन समय से रहा है.

नारद संहिता के अनुसार सूर्यवंशी भगवान श्री राम ने 10 हजार करोड़ गोवंश का दान ब्राहमणों को किया था. गोमहाविज्ञान का विकास बहुत ही अच्छा हुआ था.

ज्योति-ा तथा गोवंश का बहुत अच्छा तालमेल भगवान श्री राम के समय में था. भगवान श्री राम के समय में गोवंश का विकास ज्योति-ा ज्ञान के कारण बहुत ही अच्छा हुआ था.

ज्योति-ा के ज्ञान से सूर्य के पुत्र अश्वनी कुमारों के वरदान से माद्री के पुत्र सहदेव ने युधि-ठिर के गोवंश की बहुत अच्छी सेवा की थी. सहदेव ने ज्योति-ा तथा गोवंश का सबसे पहले तालमेल बताया था. अश्वनी कुमारों ने सहदेव को जड़ीबूटियों का बहुत ही अच्छा ज्ञान दिया था.

देवताओं के समान बहुत ही सुंदर पांडूपुत्र सहदेव ने वनवास के समय में 1 साल के अज्ञातवास के समय में गोवंश के बहुत अच्छे जानकार राजा विराट के दरबार में कहा था कि युधि-ठिर के पास में गोवंश के वर्णन करते हुए कहा था कि 8 लाख गोवंश के 10,000 वर्ग थे. 2 लाख एवं 1 लाख के असंख्य वर्ग थे.

40 कोस के क्षेत्र में जन्म लेने वाले गोवंश की गणना तथा उनकी वृद्धि का ज्ञान ज्योति-ा की गणना से कर सकता हूं. उनके रोगों का उपचार मैं जड़ीबूटियों से कर लेता हूं. सहदेव के द्वारा सहदेव संहिता में अपने अनुभवों को बहुत ही विस्तार से लिखा गया है.

सहदेव ने बहुत ही आत्म विश्वास के साथ में विराट को कहा था कि मैं ऐसे उत्तम लक्षण वाले बैलों को जानता हूं जिनका मूत्र सूंध लेने पर बांझ स्त्री गर्भ धारण कर लेती है.

सूर्यपुत्र कर्ण सूर्य की पूजा करने के बाद में सूर्य के वरदान के कारण ही ब्राहमणों को प्रतिदिन असंख्य गोवंश का दान किया करता था.

त्रिकालदर्शी एवं परम ज्ञानी महर्ि गर्ग जी को वसुदेवजी के कुलगुरु होने के कारण ही कंस के त्रास से गुप्त रुप से नंदबावा के पास में भगवान श्री कृ-ण के नामकरण करने के लिए गोशाला में आना पड़ा था.

गर्ग संहिता के अनुसार नंदराय ने अपनी 1 करोड़ गायों में से भगवान श्री कृ-ण के जन्म पर ब्राहमणों को 20 लाख सोने के सींगों से मढी हुई तथा चांदी के खुर मढी हुई युवा एवं बहुत ही अधिक दूध देने वाली गायों का दान दूध दोहने के पात्रों के साथ में सुंदर वस्त्रों तथा सोने के आभू-णों के साथ में किया था.

बरसाना के वृ-ाभानुवर राधाजी के पिताजी थे. उनके पास में गर्ग सहिंता के अनुसार 50 लाख गोवंश तथा अपार ऐश्वर्य था. राधा-टमी के दिन राधाजी के जन्म के समय में राधाजी के पिता ने ब्राहमणों को भोजन करवाकर सुंदर वस्त्रों के साथ में असंख्य बहुत ही सुंदर, शांत, कपिला गायें बछड़ों के साथ में ब्राहमणों को दी थी.

वृ-ाभानु 6 भाई थे. वृ-ाभानुवर सबसे बड़े थे. प्रत्येक के पास में 10 लाख गोवंश था.

नंदगांव में 9 नंद थे. 9 उपनंद थे. प्रत्येक नंद के पास में 9 लाख गोवंश थे. उपनंद प्रत्येक के पास में 5 लाख गोवंश थे.

व्रज में करोड़ों गोप थे. प्रत्येक गोप के पास में 1 लाख गोवंश था. व्रज में 10,000 गोवंश का समूह गोकुल कहलाता था.

श्रीमद भागवत के अनुसार भगवान श्रीकृ-ण पूजा करने के बाद में द्वारका में प्रतिदिन चार लाख गायें ब्राहमणों को दान करते थे. 125 साल की आयु में भगवान श्रीकृ-ण ने असंख्य गायों का दान किया था.

अम्बरी-ा के समय में भारत की सम्पन्नता उल्लेखनीय थी. अम्बरी-ज्ञ के पास अपार ऐश्वर्य था. सातों द्वीप का राज अम्बरी-ा के पास था. अम्बरी-ा भगवान श्री कृ-ण का परम भक्त था. भगवान ने सुदर्शन चक्र अम्बरी-ा की रक्षा करने के लिए रखा था. अम्बरी-ा के पास में गोवंश चरम सीमा पर था.

इक्ष्वाकु के पुत्र नृग ने ब्राहमणों को 1 करोड़ से अधिक गोवंश का दान किया था. श्रीमद भागवत के अनुसार सम्राट अम्बरी-ा ने 60 करोड़ गोवंश ब्राहमणों को दान में दिया था.

ईसवी संवत 300 से 250 सालों तक गुप्त वंश के राजाओं के समय में भारतीय गोवंश एवं भारतीय चिकित्सा के विकास करने के कारण ही भारत सोने की चिड़िया के नाम से समृद्ध था.

महर्ि चरक, महर्ि सुश्रुत जैसे अनेको विद्वान अपने कार्य के लिए जाने जाते हैं. भारत में गोवंश के विकास करने के लिए अनेकों प्रतिभावान मौजूद थे.

आंध्रप्रदेश में विद्यानगर 1490 विक्रम संवत में भारतीय गोवंश तथा सामुद्रिक विज्ञान के लिए पूरे विश्व में जाना जाता था. वीर नरसिंहजी के समय में

विद्यानगर का विकास चरम सीमा पर था. कृ-णदेव राजा के द्वारा सात सौ मन सोने से श्री वल्लभाचार्य जी का कनकाभि-ोक किया गया था.

कृ-णदेव राजा के जन्म के समय में पौन धंटे तक विद्यानगर में सोने की बारिश हुई थी.

विद्यानगर में पूरे विश्व से अध्ययन करने के लिए लोग आते थे. विद्यानगर में राज्य की ओर से विशाल भवन विद्या अध्ययन करने वालों के निवास के लिए बनवाये गये थे.

विद्यानगर में 2000 पंडित राजमहल में नियमित पूजा के लिए राजा के द्वारा नियुक्त किये गये थे. राजा का ग्रंथालय भी था जिसकी व्यवस्था में 20 पंडित थे.

भारतीय गोवंश का भारतीय ज्योति-ा से गहरा संबंध है. आदिकाल से वास्तु के जानकार भी गोवंश के माध्यम से वास्तु के दो-ों का समाधान कर रहे हैं. इससे रोग निदान में सरलता होती थी. ज्योतिष शास्त्र के द्वारा रोग की प्रकृति, रोग का प्रभाव क्षेत्र, रोग का निदान और साथ ही रोग के प्रकट होने की अवधि तथा कारणों का भलीभांति विश्लेषण किया जा सकता है.

वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के द्वारा आधुनिक सूक्ष्म उपकरणों के द्वारा रोग की पहचान करने के लिये सटीक निष्कर्ष नहीं निकल पाता है वहीं रोगी का स्वास्थय, धन, समय, आदि का व्यर्थ व्यय क्लेशकारक हो सकता है. ज्योतिष के द्वारा सहजता से रोग दूर हो जाता है.

वर्तमान में विश्वप्रसिद्ध भारत के वैज्ञानिक डा. मदनमोहन बजाज जी ने गोवंश हत्या से उत्पन्न 1040 मेगावाट से अधिक ताकतवर सूक्ष्म तरंगों पर जो अनुसंधान 1995 से किए हैं उसे पूरे विश्व ने भी सर्व सम्मति से माना है. जाबाला के पुत्र सत्यकाम ने गोवंश की लगातार 12 साल सेवा कर ब्रहम ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक किया था.

बासी तथा झूठा खाना गोवंश को बहुत ही अधिक नुकसान करता है. बासी खाने के कारण गोवंश की मृत्यु हो जाती है. गोवंश गंदगी पसंद नहीं करता है. गोवंश को झूठा खिलाने से मानव अपराध में पड़ जाता है. कामधेनु झूठा पानी पीना भी पसंद नहीं करती है.

भगवान कृ-ण ने द्वापर में भूतल पर 125 साल मानव अवतार धारण कर गोग्रास के महत्व को समझाया था. गोग्रास से भगवान ने मानव को हर मनोकामना की पूर्ति करने के बारे में बताया है.

हर घर में गोवंश बहुत ही बड़ी संख्या में मौजूद था. गोग्रास के साथ में स्वच्छ जल की भी बहुत ही सुंदर व्यवस्था थी. वर्तमान में भी भारत में आज भी गांवों में गोवंश है. महानगरों में भी अधिकांश घरों में गोग्रास सबसे पहले ही निकाला जाता है. महानगरों में मानव को गोवंश न मिलने के कारण ही गोग्रास निकालना बंद हो चुका है. गोग्रास न निकालने के कारण मानव आज महानगरों में बहुत ही दुःखी है. गोग्रास के द्वारा ही मानव मन में निश्चित सुख प्राप्त कर सकता है.

गोग्रास से गाय में विराजमान 33 करोड देवताओं को भोजन प्राप्त होता है. गोवंश में मौजूद 33 करोड़ देवता मानव में भी देवत्व के गुण उत्पन्न करते हैं. प्रतिदिन नियम से गोग्रास खिलाने से नवग्रहों के द्वारा उत्पन्न सभी क-ट पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं. मानव को आज गोग्रास के लिए गंभीरता के साथ ध्यान देना अनिवार्य है. गोग्रास के अभाव में गोवंश नमक को प्राप्त करने के लिए सड़क पर पड़ा मल खाता है.

नियमित गोग्रास खिलाने से मानव पर पड़ने वाले वास्तु के गलत प्रभाव से उत्पन्न दोषों को भी दूर करना संभव है.

अंतरिक्ष विज्ञान के अनुसार धरती के आसपास का वायुमंडल जिसमें ओजोन तथा ओक्सीजन के साथ साथ कार्बन डाई ओक्साइड, नाइट्रोजन, अन्य बहुत सारी गैसे मौजूद हैं सूर्य की तरंगे बहुत अधिक उर्जा के साथ में जब वायुमंडल में प्रवेश करती हैं सूर्य से धरती तक सूर्य की तरंगों को पहुंचने के लिए 8 मिनट का समय लगता है तब वायुमंडल की गैसों में बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन होने लगता है तथा विद्युत चुम्बकीय तरंगे, ईथर एवं अन्य सूक्ष्म तरंगे तेजी के साथ में धरती की ओर प्रवाहित होती हैं तथा मानव का मन भी सूर्य के उदय तथा अस्त यानी संधिकाल में बहुत ही अधिक संवेदनशील होता है. मन के कारण ही दिमाग में मौजूद पीटयुटरी एवं पिनियल ग्रंथि के अंतःस्त्राव में भी परिवर्तन होने लगता है. मानव के देह में भी बहुत ही तेजी के साथ में परिवर्तन देखे गये हैं. मानव सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय दोनों नाक से सांस लेता है.

1400 से 1500 के बीच में दक्षिण भारत में आंध्रप्रदेश आकबीडू जिल्ले में व्योमस्तंभ पर्वत के नीचे कांकरवाड गांव में भारद्वाज गोत्र के तेलंग ब्राहमण साक्षात वेदमूर्ति श्री यज्ञनारायण भटजी के द्वारा 32 सोमयज्ञ किए थे. श्री यज्ञनारायण भटजी को भगवान ने दर्शन देकर आज्ञा की थी कि उनके परिवार में 100 सोमयज्ञ पूरे होने पर भगवान स्वयं उनके घर में जन्म लेंगें.

उनके सुपुत्र श्री गंगाधर भटट जी ने 28 सोमयज्ञ किए थे. श्री गंगाधर भटट जी के सुपुत्र श्री गणपति भटट जी ने 30 सोमयज्ञ किए थे.

श्री गणपति भटट के सुपुत्र श्री वल्लभ भटट जी ने 5 सोमयज्ञ किए थे. श्री वल्लभ भटट जी के सुपुत्र श्री लक्ष्मण भटट जी ने 5 सोमयज्ञ किए थे. इस तरह से कुल 100 सोमयज्ञ श्री लक्ष्मण भटट जी ने पूरे किये थे.

भगवान श्री कृ-ण के सभी अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी ने आचार्य के रुप में उनके परिवार में चम्पारण गांव में 1535 में जन्म लिया था. श्री लक्ष्मण भटट जी के यहां पर अग्निकुंड में से श्री वल्लभाचार्य जी ने साक्षात ईश्वर के रुप में जन्म लेकर 52 सालों में 3 बार खुले चरणों से धरती पर परिक्रमा कर अग्निहोत्र के महत्व को पूरी तरह से स्थापित किया है.

श्री महाप्रभुजी के 2 पुत्रों श्री गोपीनाथजी तथा श्री विठठलनाथजी ने अग्निहोत्र की दिव्य परम्परा को आगे बढ़ाया था. भारत के मुसलमान सम्राट अकबर ने गोकुल को श्री विठठलनाथजी को उनके दिव्य स्वरुप के कारण ही दान में देकर गोसाई के नाम से सम्मानित किया था.

आज भी वल्लभकुल के बालक अग्निहोत्र की परम्परा बराबर निभा रहे हैं.आज भी श्री विठठलनाथ जी के सुपुत्र गोस्वामी के नाम से ही प्रसिद्ध हैं.

बहुत ही अल्पकाल के समय में ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय में किए गये हवन को हम अग्निहोत्र कहते हैं.

भगवान परशुराम जी के द्वारा अग्निहोत्र दिया गया है. आज 128 देश सूर्य के घातक प्रभाव को कम करने के लिए नियमित अग्निहोत्र कर रहे हैं.

सूर्य के कमजोर होने के कारण अज्ञान का प्रभाव मन पर आता है. सूर्य का सीधा संबंध सिर यानी दिमाग से है. गोचर में कुंडली के प्रथम भाव में यदि मे-ा राशि में अग्नि तत्व के बारे में अध्ययन करने पर सिर के रोगों पिटयूटरी ग्लेड, पीनीयल ग्लैंड के बारे में पता चल जाता है.

सूर्य के कुंडली में गोचर में कमजोर होने पर सिर के दर्द की समस्या उत्पन्न होती है. सूर्य के कारण ही आत्मा को भी प्रभाव पड़ता है. रंगीन बोतलों में गोमूत्र को भरकर सूर्य के प्रकाश में रखना चाहिए. गोमूत्र में सूर्य की समस्त उर्जा मिलने पर बीमारी को नियंत्रित करने के लिए सूर्य की रंग चिकित्सा प्रभावशाली है.

रोग

वर्तमान समय में आधुनिक अनुसंधानों के फलस्वरुप यह बात पूरी तरह से स्प-ट है कि सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी तरंगे ओजोन की परत में 280 लाख वर्ग किलोमीटर छेद हो जाने के कारण तथा छेद बहुत तेजी से बढ़ने के कारण ही मानव के लिए त्वचा तथा आंखों के लिए बहुत ही अधिक नुकसानदायी है.

सूर्य की पराबैंगनी तरंगों पर गहन चिंतन करने पर अग्निहोत्र नियमित ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय करने पर उसके प्रभाव पर विचार करना है. विश्व सूर्य की पराबैंगनी तरंगों के घातक प्रभाव के कारण सबसे अधिक चिंतित है. विश्व ओजोन की परत को बचाने के लिए बहुत सारे उपाय कर रहा है.

अमेरिका में गोमूत्र पर कैंसर पर चार पेटेंट लगातार चार सालों में भारत को मिलें हैं.

ऐलोपेथी में रोगों का समाधान नहीं है. गोवंश का नियमित पूजन करने के लिए हमारे निवास पर गोवंश होना अनिवाग्र है. हमारे वेदों के अनुसार गोवंश के अंदर दायीं आंख में सूर्य विराजमान है. सूर्यकेतु नाडी गोवंश में सदैव ही सक्रिय रहती है. गोवंश मानव का उद्धार करने के लिए गोलोक से आये हैं.

सूर्य

सूर्य अंतरिक्ष में नवग्रहों का राजा है. सूर्य को ईश्वर माना गया है. सूर्य ज्ञान का प्रतीक है. सूर्य का अंक 1 है. सूर्य से मानव को तेज मिल रहा है. सूर्य की उत्पत्ति सृ-ट के प्रारम्भ में हुई है. सूर्य को प्रसन्न करने के लिए बहुत सारे गोवंश को भरपेट खिलाने के बारे में बताया गया है.

सूर्य के गोचर में कमजोर पडने पर मानव में सात्विकता में कमी आ जाने के कारण ही सूर्य रोग कारक बनने पर मानव को मस्तिष्क रोग जिसमें सिरदर्द, मस्तिष्क कैंसर, मिर्गी, उन्माद, पागलपन, मानसिक विकलांगता, मंदबुद्धि, स्मृतिनाश, मस्तिष्क ज्वर, माइग्रेन, मूर्छा, चक्कर आना, उच्च रक्तचाप, पित्त, बुखार, शरीर में जलन, ह्रदय रोग, नेत्र रोग जिसमें नेत्र कैंसर, चर्म रोग जिसमें त्वचा कैंसर, हडडी के खसक जाने, दुश्मनों, लकडी, अग्नि, स्त्री, चोर, चार पैरों के जीवों, सर्प, राजा, यमराज से भय निश्चित है.

रविवार का दिन सूर्य का माना गया है. सूर्य के दिन लाल गाय को खिलाना चाहिए. सूर्योदय का समय बहुत ही अच्छा माना गया है. सूर्य पुत्र कर्ण सूर्य की पूजा कर ब्राहमणों को बहुत सारा दान दिया करता था. सूर्य की पूजा सभी ऋ-ि, गंधर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस, देवता सभी करते हैं.

सूर्य के प्रसन्न होने पर राक्षसी प्रवृति पर नियंत्रण मिलता है. सूर्य की महादशा 6 सालों की होती है. सूर्य की प्रसन्नता के लिए सवत्सा गाय का दान अग्निहोत्र करने वाले ब्राहमण को करनी चाहिए. सूर्य के बारह नाम हैं.

सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं तथा सूर्य को आत्मा का प्रतीक माना गया है. सूर्य स्वयं प्रकाशवान है. सूर्य जगत को गति देते हैं. सूर्य के चारों ओर अन्य ग्रह चक्कर लगाते हैं. सूर्य सात्विक, पुरुष ग्रह, क्षत्रिय धर्म का माना गया है.

मानव की जन्मकुंडली में सूर्य की स्थिति, बल, गोचर में सूर्य का भ्रमण, सूर्य की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यांतरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा आदि से सूर्य के मानव पर होने वाले गलत प्रभावों के बारे में सूक्ष्म एवं गहन विचार करना संभव है.

बारह राशियों में सूर्य अपना प्रभाव बहुत ही विचित्र देता है. हर माह सूर्य एक राशि में रहता है.

चैत्र माह में सूर्य मे-ा राशि में 14 तारीख को प्रवेश करता है. मे-ा का स्वामी मंगल सदैव ही अधिक उर्जा प्रदान करता है.

सूर्य के गोचर में कमजोर होने पर वर्तमान समय में सूर्य से संबंधित रत्नों को धारण करने की परम्परा भारत में लम्बे समय से चल रही है.

प्रथम भाव यानी लग्न में सूर्य का प्रभाव अवश्य ही ध्यान करना चाहिये. मे-ा लग्न में सूर्य उच्च का होता है. सूर्य त्रिकोण का स्वामी होता है. देवी सहायता प्राप्त होने के कारण उदारता के साथ में लोगों का कल्याण करता है. सूर्य से विद्या प्राप्ति संतान से सहयोग प्राप्त होता है. सूर्य व्यक्ति को यश एवं किर्ती देता है. बहुत ही अधिक धन शेयर से प्राप्त होता है.

मे-ा का स्वामी मंगल सूर्य के समान है. सूर्य की दृ-ट सातवे होने के कारण वैवाहिक बंधन में परेशानी आती है. जीवन साथी के साथ में अहंकार के कारण टकराहट होती है. गोवंश का अपराध होने के कारण उसका प्रायश्चित करना आवश्यक है. उच्च का सूर्य अपने प्रति अच्छे भाव प्रकट करता है.

वाणी में भी सूर्य का प्रभाव स्प-ट रहता है. आत्मा का कारक होने के कारण आशावादी सत्ता का शौकिन उच्च ध्येय यश प्राप्ति में सदैव प्रयत्नरत रहता है. सूर्य के समान प्रकाशवान देह रहती है. मानव को बहुत ही अच्छे परिणाम देता है.

गाय माता का धारोष्ण दूध तुरन्त पीने पर प्रत्येक कोष में जीवन होने पर मानव के शरीर और दिमाग पर विभिन्न प्रभाव डालता है.

सूर्य यदि वृ-ा लग्न में है तो अशुभ है. व्यक्ति के अंदर गोवंश के लिए विशे-ा रुप से चिड़ रहती है. गोवंश का अपराध होने के कारण प्रायश्चित करना अनिवार्य है.

नंदी के विकास करने पर प्रायश्चित करना संभव है. सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है. सूर्य शुक्र का शत्रु है व्यक्ति का चेहरा कम प्रभावित करता है. स्वभाव से गरम होने के कारण पित प्रकति रहती है. सत्ता का शौकिन रहता है. भागीदारी बहुत ही अच्छी रहती है. व्यक्ति वैवाहिक संबंध में सम रहेगा. गाय माता का धारोष्ण दूध मानव के अंदर की गर्मी को तुरन्त शांत करता है.

सूर्य यदि मिथुन लग्न में है तो अशुभ है. नंदी के लिए विशे-ा प्रयत्न करना अनिवार्य है. नंदी से प्रायश्चित करना संभव है. व्यक्ति के द्वारा गोवंश का अपराध करने के कारण गोवंश का भयंकर श्राप मिलता है. गोवंश के लिए मन में कठोरता बनी रहती है. गोवंश का दान नहीं कर पाता है. गोवंश के पतन में अप्रत्यक्ष सहयोग करता है.

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए अग्निहोत्र 1 साल तक अवश्य ही करना चाहिए. सूर्य तीसरे भाव का स्वामी होता है. गोमूत्र का पान करने से भी सूर्य का प्रभाव अनुकूल मिलता है.

सूर्य यदि कर्क लग्न में है तो धन भाव का स्वामी होता है. धारोष्ण दूध मानव के ओज को बढाता है तथा शरीर को मोटा करता है.

सूर्य यदि सिंह लग्न में है तो अत्यंत ही शुभ है. नंदी के संपूर्ण विकास करने के लिए प्रयत्नशील रहता है. गोवंश का आर्शीवाद जातक को प्राप्त है. संस्कारवान तथा परम तेजस्वी रहने के कारण समाज में यश किर्ती एवं सम्मान प्राप्त करता है. दैवी सहायता प्राप्त कर लोगों का कल्याण करता है.

जीवन में बहुत ही तेजी से परिवर्तन दिखाई देते हैं. जीवन में अग्निहोत्री ब्राहमणों को गोदान करता है. उत्तम दान करने के कारण सदैव ही प्रसन्नचित्त रहता है. आनन्द के साथ में अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करता है.

दूध विभिन्न धातुओं यानी सोने के बर्तन में दुहा हुआ दूध कफ को पूरी तरह से समाप्त करता है. सोने का बर्तन नहीं मिलने पर सोने का सिक्का या सोने का तार भी पर्याप्त है.

सूर्य यदि कन्या लग्न में है तो बुध उच्च का रहता है. गोवंश के अपराध करने के कारण ही दुःखी रहता है. अपराध का प्रायश्चित करना अनिवार्य है. नंदी का दान करने पर अपराध का प्रायश्चित करना संभव है. सूर्य व्यय भाव का स्वामी है. व्यक्ति को व्यय तथा बीमारी देता है.

मानव को भैंस का दूध, भैंस के दूध से तैयार दही, छाछ, मक्खन, चीज, पनीर, घी, खोवा उपयोग नहीं करना चाहिये.

सूर्य यदि तुला लग्न में है तो सूर्य अशुभ है. गोवंश के अपराध के लिए अप्रत्यक्ष रुप से जिम्मेदार है. नंदी के विकास करने के लिए प्रयत्न करना है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए 1 माह तक अग्निहोत्र करना चाहिए.

सूर्य की तरंगों को सूर्यकेतु नाडी अपनी ओर तेजी से खीचती है जिसके कारण ही स्वर्णक्षार उत्पन्न होता है जो दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, मूत्र, गोबर में पीलेपन के रुप में दिखाई देता है.

सूर्य यदि वृश्चिक लग्न में है तो दसमे भाव का स्वामी है. गोवंश के लिए उदासीन रहना बहुत ही धातक है. गोवंश के विकास के साथ ही व्यक्ति का विकास संभव है. गाय माता के थनों से तुरन्त ही दुहे गये स्वाभाविक गर्मी वाले दूध को धारोष्ण दूध कहते हैं.

सूर्य यदि धनु लग्न में है तो भाग्य भाव का स्वामी है. धारोष्ण दूध औषधियों और विषों के प्रभाव को पूरी तरह से समाप्त कर देता है.

सूर्य यदि मकर लग्न में है तो आठवे भाव का स्वामी है. शरद ऋतु में गाय माता का दूध गाढा हो जाता है और दूध में मक्खन की मात्रा बढ जाती है.

सूर्य यदि कुंभ लग्न में है तो सातवे भाव का स्वामी है. जर्सी या वर्णसंकर गाय भारत में बहुत अधिक हैं इसलिये वर्णसंकर जानवरों का दूध नहीं पीना चाहिये.

सूर्य यदि मीन लग्न में है तो 6ठवे भाव का स्वामी है. सूर्य के रत्न धारण करने पर मानव को अनुकूल परिणाम लम्बे समय तक नहीं मिल पा रहे हैं जिससे मानव गाय माता के द्वारा ही अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर रहा है.

सूर्य धन स्थान पर रहने पर अशुभ प्रभाव देता है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए 1 माह तक अग्निहोत्र अवश्य ही करना चाहिए.

सूर्य के कारण धन बहुत मेहनत के बाद में प्राप्त होता है. सूर्य के धन स्थान में रहने पर व्यक्ति की वाणी में बहुत ही अधिक कडवापन रहता है.

दाहिने नेत्र में अंधापन सूर्य के दू-ित होने पर रहता है.

सूर्य के कारण ही व्यक्ति को सरकार से सहयोग प्राप्त होता है. सूर्य के कारण व्यक्ति दानी होता है.

सूर्य का पूजन भी प्रातःकाल प्रतिदिन भारत में वेद मंत्रों के साथ में करते हैं.

सूर्य पराक्रम भाव में रहने पर अशुभ है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए अग्निहोत्र कम से कम 1 साल तक करना आवश्यक है.

व्यक्ति अपने पराक्रम से बहुत ही यशस्वी बनता है. अपने रिश्तेदारों को हमेशा धिक्कारता है. भाई का सहयोग बहुत ही कम करता है.

पत्रों के कारण प्रति-ठा में कमी आती है. पत्रों के व्यवहार में सावधान रहना आवश्यक है. गाय माता का सूर्य के साथ बहुत ही गहरा संबंध है इसलिये गोव्रती बनना अनिवार्य है.

सूर्य चौथे भाव में अशुभ एवं बाधक रहता है. सूर्य के कारण वाहन धन मकान प्राप्त न होने के कारण मानसिक अशांति देता है. रिश्तेदारों से सहयोग न प्राप्त होने के कारण व्यक्ति बैचेन रहता है.

सूर्य का मानव पर जीवन में सबसे अधिक गहरा प्रभाव पडता है. मंत्रविज्ञान सामुद्रिकशास्त्र गूढ विद्याओं की ओर रुचि रहती है. गोपूजन प्रतिदिन करना चाहिये.

संतान भाव में यानी पांचवे भाव में सूर्य अशुभ है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए गोवंश का दान अवश्य ही करना चाहिए.

सूर्य संतान भाव में सदैव कम संतान देता है.

प्रथम संतान के परेशानी रहने या मरने की संभावना रहती है.

स्त्री को प्रसूति के समय में ओपरेशन करवाने की परेशानी रहती है.

सूर्य के कारण व्यक्ति सरकार प्रिय बनता है.

व्यक्ति धन प्राप्त कर वन पहाड में भ्रमण कर सदैव ही अदभुत आनंद में रहता है.

वेदों के अनुसार गाय माता के दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर, पंचगव्य, गाय की सांस, गाय को स्पर्श करने वाली वायु में सूर्य की समस्त उर्जा मौजूद है.

सूर्य सातवे भाव में रहने पर अशुभ है. गोवंश के अपराध के कारण ही श्रापित है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए दान करना चाहिए. गो दान सर्वश्रे-ठ माना गया है. दो विवाह योग रहते हैं. आनंद के अभाव में स्वास्थय बिगडता रहता है. स्त्री के साथ में भोग करने की इच्छा बनी रहती है. स्त्री से हारता है. भागीदारी कोर्ट कचहरी में सूर्य के कारण यश रहता है.

सिर्फ गाय माता की रीढ की हडडी में ही सूर्य केतु नाडी है जिसके कारण गाय माता सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य के प्रकाश में रहना पसंद करती है.

आठमें भाव में सूर्य के कारण अशुभ है. गोवंश के विनाश के लिए सहयोग करने का अपराध व्यक्ति को अपराधी बना कर श्रापित करता है.

सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए ब्राहमणों को सोने के सींग वाली गायों का दान अवश्य ही करना चाहिए.

व्यक्ति अपने विचित्र स्वभाव के कारण मित्र भी शत्रु होते हैं. नेत्र की परेशानी रहती है. अंधापन की परेशानी होती है. सूर्य के घातक प्रभाव को कम करने के लिये मानव को गाय माता के मूत्र से प्रतिदिन स्नान करना अनिवार्य है.

सूर्य नवमें भाव में रहने पर व्यक्ति को पिता के साथ में विरोध रहता है. गोवंश की सेवा करने के कारण उनका आर्शीवाद प्राप्त करता है. सत्यवक्ता व्यक्ति धार्मिक बनता है. कानून में प्रवीणता रहती है. पत्नी तथा संतान की प्राप्ति होती है. बचपन में रोगी होता है. बचपन में धन की प्राप्ति होती है.

रविवार को कपिला गाय का दूध सुनहरे बर्तन में अवश्य पीना चाहिये.

दसवे भाव में सूर्य के कारण शुभ है. सूर्य के समान ही तेजस्वी तथा प्रभावशाली रहता है. पूर्व जन्म में किये गये अच्छे कर्म इस जन्म में मदद करते हैं. गोवंश की जीवन भर सेवा करता है. ब्राहमणों को गोवंश का दान करता है.

गोवंश के आर्शीवाद के कारण ही व्यक्ति को उसके पिता से सम्पत्ति प्राप्त होती है. सरकारी मान सम्मान के साथ में उच्च पद एवं मदद प्राप्त होती है.

कपिला गाय पहचानना चाहिये. कपिला गाय नहीं मिलने पर सुनहरे रंग की गाय का दूध पीना चाहिये. सुनहरे रंग की गाय नहीं मिलने पर श्यामा गाय का दूध पीना चाहिये.

11 वे भाव का सूर्य बहुत ही अच्छा है. सरकार का प्रिय बनने के कारण सरकार से मदद तथा पुरुस्कार मिलता है. विश्व में अपना पक्ष रखने का अवसर मिलता है. कार्बन क्रेडिट से धन मिलता है.

गोवंश की रक्षा करने के लिए व्यक्ति पूरी तरह से समर्पित रहता है. व्यक्ति जीवन भर गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणें को करता है. स्त्री एवं पुत्र की प्राप्ति होती है. अचानक ही फायदा होता है. उच्च अधिकारियों से परिचय होता है एवं मान सम्मान भी प्राप्त होता है. बहुत अधिक धन बिना परेशानी के प्राप्त होता है.

गाय माता का धारोष्ण दूध त्रिदोषनाशक यानी वात, पित्त और कफ का नाश करता है.

12 वे भाव का सूर्य अशुभ है. जीवन में गोवंश के अपराध के कारण श्रापित है. सूर्य के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के दुग्ध कल्प अवश्य ही करना चाहिए.

12 वा सूर्य व्यक्ति को बायें नेत्र की परेशानी देता है.

व्यक्ति को अधिक धन व्यय करने तथा भोगों में रत रहने के कारण भटकने में व्यस्त बनाता है.

सूर्य की वनस्पति मदार है. नवग्रह धूप का प्रयोग करना चाहिए. नवग्रह धूप आधे घंटे तक जल कर सूर्य के कारण उत्पन्न रोगों का नाश करता है.

सफेद मदार लेना चाहिए यदि सफेद मदार नहीं मिलता है तो लाल मदार लेना चाहिए. सूर्य के दो-नों को दूर करने के लिए छुईमुई को पानी में डालकर नहाना चाहिये. केले की जड़ सूर्य के दो-नों को दूर करने के लिए धारण करना चाहिए.

सूर्य के कमजोर पड़ने पर पंचगव्य एवं महापंचगव्य घी का प्रयोग नाक तथा नाभी में प्रतिदिन रात में सोते समय में अवश्य ही करना चाहिए. प्रतिदिन पंचगव्य स्नान करने से भी रोगों से मुक्ति मिलती है. पंचगव्य साबुन भी हमें आसानी से मिल रहे हैं. वर्तमान में ओजोन की परत में छेद हो जाने के कारण ही पराबैंगनी तरंगें उत्पन्न होने के कारण भारत में सूर्य के तीव्र प्रभाव के कारण ही मानव बहुत सारी बीमारियों के कारण परेशान है.

माणिक्य के बदले में बेल की जड़ धारण करना चाहिए. सूर्य के गलत प्रभावों को कम करने के लिये गाय माता के घी एवं बिना टूटे चावल से प्रतिदिन अग्निहोत्र सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय सूर्य के मंत्र सूर्याय स्वाहा सूर्याय इदम न मम के साथ करना अनिवार्य है. सूर्य का व्रत भी लोग रखते हैं.

वर्तमान में गाय के बदले में भैंस के दूध का चलन भारत में बहुत अधिक है. पूरे विश्व में भैंस का पालन तथा भैंस का दूध का उपयोग करना कोई भी पसंद नहीं करता है.

नकली दूध भारत में बहुत ही अधिक उपलब्ध है.

सोने का बर्तन न मिलने पर पीतल का बर्तन उपयोग किया जाता है. सूर्य के कमजोर पडने पर भैंस का दूध तथा दूध से तैयार वस्तुएं मानव को नहीं खानी पीनी चाहिये. गर्मी के दिनों में गर्मी की भयंकरता को पूरी तरह से दूर करता है. वर्षा ऋतु में वायु के जलमय होकर सील जाने से कुछ लोगों को मन्दाग्नि हो जाती है. सूर्य के प्रकाश न मिलने से पेट में जठार अग्नि कमजोर पड जाती है.

9 माइक्रोग्राम तक का जहर मनुष्य को मारने के लिये काफी है. फफुंद का जहर चारे में रोकना वर्तमान में संभव नहीं है. गांवों के भारतीय गोवंश के दूध में जहर नहीं होता है.

चंद्रमा

चंद्रमा सात्विक, स्त्री स्वभाव, वैश्य जाति का ग्रह है. सूर्य एवं गुरु चंद्र के मित्र ग्रह हैं. चंद्रमा की उत्पत्ति धरती से हुई है इस कारण चंद्रमा धरती का उपग्रह है तथा धरती की परिक्रमा करता है. धरती से चंद्रमा की दूरी एकावन हजार पांच सौ छियासठ योजन है. चंद्रमा का वर्ण गौर है. चंद्रमा 16 कलाओं से युक्त है. चंद्रमा की गति सबसे तेज है. एक राशि में चंद्रमा मात्र 2 दिन 1 घडी ही रहता है. चंद्रमा का संबंध 27 नक्षत्रों से है.

चंद्रमा यदि बारहवे भाव में है तो अशुभ है. गुप्त आक्रमणों के कारण व्यक्ति अंदर से कमजोर रहता है. कामचोर होने के कारण जीवन में आगे नहीं बढ़ पाता है. अपने स्थान से पलायन कर दूर भागता है.

एक बार के अग्निहोत्र करने पर मन एकाग्र हो जाता है. गोवंश के अपराध के कारण श्रापित है. गोवंश की सेवा से वंचित रहता है. गोवंश का प्रायश्चित करना अनिवार्य है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण संचित कर्म समाप्त हो सकते हैं.

धन के अभाव में जीवन में गोदान नहीं कर पाता है. गोदान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करने पर परिवर्तन निश्चित है.

जीवन भर बहुत ही परेशान रहता है. जीवन भर सुख एवं शांति के लिए भटकता रहता है. बुराई के कारण मुंह से गंदे वाक्य बोलता है. दूसरों की निंदा करने के कारण मार खाता है. उत्तेजित होकर अपना ही बुरा करता रहता है.

जीवन में बरबादी के अलावा कुछ नहीं मिलता है. मुसीबत के समय पूरी तरह से टूट जाता है. समझौता कर अपनी छवि खराब करता है.

बुरे लोगों का सामना बहुत ही कठिनता के साथ मजबूरी में करना पड़ता है. मन हमेशा विचलित रहता है. मन के गंदे होने के कारण विचार सात्विक नहीं होते हैं. एकाग्रता के अभाव में जीवन का लक्ष्य नहीं होता है.

गाय माता का दूध शहरों के चारे के कारण ही बहुत अधिक जहरीला हो गया है.

चंद्रमा यदि ग्यारहवे भाव में है तो शुभ है. बहुत ही अधिक भावुक तथा संवदेनशील हे. आंखें बहुत ही सुंदर तथा चमकदार होती हैं. चेहरे पर चांदी की चमक रहती है. विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता है.

सुनहरे अवसरों को पहचानकर प्रगति करता है. मिलनसार स्वभाव तथा उदारता के कारण दूसरों का ह्रदय जीत लेता है. समय के अनुसार कार्य योजना तैयार करता है. पूर्व में ही आभास होने के कारण सावधान रहता है.

गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है. दान करने के कारण आयु में वृद्धि होती है. गोवंश की जीवन भर सेवा करता है इसलिए उनके आर्शीवाद से स्त्री पुत्र से आनन्द प्राप्त करता है.

देवी सहायता प्राप्त कर लोगों का कल्याण करने के कारण मान सन्मान प्राप्त करने पर अनेक प्रकार के चमत्कार होते हैं. मानव स्वर्णक्षार यानी कैरोटिन से बहुत अधिक लाभान्वित होता है.

चंद्रमा यदि दसवे भाव में है तो शुभ है. उदारता के साथ में धन खर्च करता है. जरुरतमंद की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहता है. मुसीबत के समय में संगठित होकर सामना करता है.

गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित रहता है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण अपना जीवन सार्थक करता है. गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है. दान करने के कारण किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता है.

वाणी में सरस्वती रहती हे इसलिए गोवंश संवर्धन किसानी दूध उत्पादन दवाओं विज्ञान आदि कार्य करने पर बहुत अधिक यश किर्ती सम्मान धन सम्पत्ति देता है.

वेद का वाक्य है कि गाय विश्व की माता है. वेद के अनुसार गाय माता में सूर्य की समस्त उर्जा विद्यमान है. गोग्रास की परम्परा प्राचीन समय से रही है.

चंद्रमा यदि नवमें भाव में है तो शुभ है. पूर्व जन्म में किये गये पवित्र कार्यों के कारण दैवी आर्शीवाद मिलता है. गोवंश के लिए सदैव ही तन, मन एवं धन से तत्पर रहता है. गोवंश का आर्शीवाद व्यक्ति को हर कार्य में सफल बनाता है.

गोदान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करने के कारण उच्च पद तथा तेजस्वी प्रतिभा का धनी रहता है. दैवी सहयोग मिलने के कारण बाधाएं आसानी से पार कर लेता है.

विदेश यात्रा करता है. अपार दान करने के कारण कीर्ति प्राप्त करता है. कार्य करने में आनन्द अच्छा भाग्य रहने के कारण धन एवं दीर्घायु प्राप्त करता है.

चंद्रमा यदि आठवे भाव में है तो अशुभ है. मन से बहुत ही कठोर होता है. वाणी में कर्कशता रहती है. कभी किसी की मदद नहीं करता है. गोवंश को बासी एवं अपना झूठा खिलाता है. कंजूस होता है इसलिए दान नहीं देता है. धन संचय करने के लिए सदैव सावधान रहता है. एकांतप्रेमी होता है तथा उदास रहता है.

दूसरों की उपेक्षा करने के कारण दुःखी रहता है. अहंकारी होता है इसलिए क्रोध करता है. गोवंश के लिए अपराध करने के कारण बहुत ही अधिक दुःखी रहता है. गोवंश के श्राप के कारण पतन होता है. पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के कारण पारिवारिक सम्पत्ति प्राप्त होती है. बचपन में पानी से घात रहती है. अनेक रोग होते हैं तथा कम आयु में मरता है. वेदिककाल में भैंस का महत्व नगण्य था. पहली रोटी गाय को हर घर से दी जाती थी.

चंद्रमा यदि सातवे भाव में है तो शुभ है. दूसरों के मन की बात बहुत ही आसानी से समझ लेता है. मनोविज्ञान का बहुत ही अच्छा ज्ञान होता है. सरकार से मदद प्राप्त करता है. विपरीत सेक्स से समर्थन प्राप्त करता है.

वाणी में मोहक प्रभाव स्प-ट झलकता है. वाणी में सरस्वती विराजमान रहती है. अपनी हर मनोकामना की पूर्ति करने के लिए गुप्त विद्याओं का सहारा लेता है. देवी सहायता के बल पर लोगों का कल्याण करता है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण जीवन सार्थक होता है. गोवंश की सेवा जीवन भर करता है. गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए तन, मन, धन से समर्पित रहता है.

कामवासना बहुत ही अधिक रहती है तथा पत्नी के कहने के अनुसार ही कार्य करता है. विदेश गमन कर फायदा प्राप्त करता है. यात्रा करने में बहुत ही आनन्द आता है. व्यक्ति को सुंदर शरीर एवं सुंदर पत्नी प्राप्त होती है. भारत में मानव वर्तमान में गोसेवा से बहुत दूर हो गया है.

चंद्रमा यदि पांचवे भाव में है तो शुभ है. पूर्व जन्म में गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित रहने के कारण गोवंश का आर्शीवाद मिलता है. गोवंश के लिए जीवन भर लगाव बना रहता है.

गोवंश की रक्षा करने के लिए मन पवित्र होता है एवं सौजन्यशील एवं सहानुभूतियुक्त स्वभाव रहता है. सरकार से मदद प्राप्त कर संगठित स्तर पर प्रयत्न करने के कारण अपार सफलता के योग हैं. रत्न समद्धि आनन्द प्राप्त होता है. सटटे की प्रवति रहती है. कीर्तिवान एवं गुणवान संतान की प्राप्ति होती है. सूर्योदय से 2 घंटे बाद ही धारोष्ण दूध भरपेट अवश्य पीना चाहिये.

चंद्रमा यदि चौथे भाव में हो तो शुभ है. गोवंश की सेवा करने के कारण गोधन भरपूर रहता है. दिव्य एवं अलौकिक शक्तियां भरपूर रहती हैं.

ह्रदय की कोमलता बनी रहती है. वाहन माता मकान वैभव उत्तम आनन्द की प्राप्ति होती है. विद्या अध्ययन करने तथा यश की प्राप्ति होती है. कामवासना की अधिकता के कारण ही अनेक प्रणय संबंधों का आनन्द बना रहता है. सूर्योदय से 2 घंटे बाद धारोष्ण दूध पीने पर पथ्य, दीपन, हल्का है.

चंद्रमा यदि तीसरे भाव में हो तो अशुभ है. गोवंश के अपराध करने के कारण मानव को भयंकर श्राप मिलता है. व्यक्ति बहुत सारी यात्राएं करता है. यात्राओं के कारण ही धन सम्पत्ति सामान्य रहती है. साहस कविता साहित्य के प्रति आक-र्ण बना रहता है. मन के कारण ही भाग्य एवं कार्यो में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है. भोग में हमेशा ही रत रहता है. भाई बहिन का सहयोग रहता है. गाय माता का धारोष्ण दूध बहुत ही हल्का है इसलिये रक्त में तुरन्त ही मिलकर बहुत ही आसानी से पच जाता है.

चंद्रमा यदि धन भाव में हो तो शुभ है. महाकाल का आर्शीवाद प्राप्त कर बहुत ही सफल बनता है. गोवंश के लिए विशे-ा लगाव रहता है. गोवंश का दान तथा गोधन को बढ़ावा देता है. व्यक्ति कामी होता है. अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करने कोरी तरंगों में व्यस्त रहता है.

व्यक्ति सभी के साथ में न रहकर अपनी पहचान बनाने का प्रयत्न करता है. परिवार में सभी का सहयोग प्राप्त होने से आनंद में रहता है. कवि यानी बहुत ही संवेदन स्वभाव के कारण भावुक स्वभाव का रहता है.

मधुरवाणी के कारण अपनी आय में चंद्रमा के समान बढोत्तरी करता है. शरद ऋतु में गाय माता का धारोष्ण दूध शरीर को गरम रखता है और पुष्ट करता है.

चंद्रमा यदि मीन लग्न में रहता है तो पांचवे भाव का स्वामी है. गाय माता का धारोष्ण दूध अमृत के समान दीपन है.

चंद्रमा यदि कुंभ लग्न में रहता है तो 6ठवे भाव का स्वामी है. गाय माता का धारोष्ण दूध हर ऋतु में गुणकारी है.

चंद्रमा यदि मकर लग्न में रहता है तो सातवे भाव का स्वामी है. श्यामा गाय माता के दूध में विशेष औषधि गुण मौजूद हैं.

चंद्रमा यदि धनु लग्न में रहता है तो आठवे भाव का स्वामी है. धारोष्ण दूध मानव के देह की कमजोरी को तुरन्त ही दूर करता है.

चंद्रमा यदि वृश्चिक लग्न में रहता है तो भाग्य भाव का स्वामी है. गाय माता का धारोष्ण दूध शीतल है.

चंद्रमा यदि तुला लग्न में रहता है तो कर्म भाव का स्वामी है. श्यामा, कपिला गाय माता को ही मानव को प्राथमिकता देनी अनिवार्य है.

चंद्रमा यदि कन्या लग्न में रहता है तो बहुत ही अधिक शुभ है. आधार मजबूत रहता है तथा समाज के हर व्यक्ति का सहयोग मिलता है. सरकार का प्रिय बनता है. कीर्ति देकर धन उन्नति करवाता है. केरल में वैचूर जाति की गाय माता के धारोष्ण दूध में बहुत ही अधिक औषधि गुण हैं.

चंद्रमा यदि सिंह लग्न में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के लिए मन बहुत ही कठोर रहता है. बारहवे भाव का स्वामी है. अमरकंटक, उतरांचल में स्वयं चरकर जडी बूटी खाने वाली गाय माता का धारोष्ण दूध सर्वश्रेष्ठ है.

चंद्रमा यदि कर्क लग्न में रहता है तो बहुत ही शुभ है. मन के रचनात्मक विचारों के कारण कम समय में प्रगति करवाता है. बहुत ही कम आयु में विश्व में अपनी प्रतिभा के कारण प्रसिद्धि प्राप्त करता है. गोवंश के कार्य करने पर महाकाल का आर्शीवाद मिलता है.

ब्रहमांड में गाय माता ही सबसे पवित्र है इसलिये गाय माता में 33 करोड देवता विद्यमान हैं.

चंद्रमा यदि मिथुन लग्न में रहता है तो धन भाव का स्वामी है. गाय माता हमारी संस्कृति का मूल केंद्र है.

चंद्रमा यदि वृ-ा लग्न में रहता है तो व्यक्ति अपने स्वभाव तथा व्यवहार से आकर्-ात करता है. चंद्रमा के कारण सुंदरता अनुभव में आती है. दो पत्नी या दो स्त्री का योग रहता है. मन बहुत ही अस्थिर रहता है. स्वभाव से शांत रहने के कारण भाग्य बार बार परिवर्तित होता रहता है. गाय माता ही हमारे सभी दुःख दूर कर सकती है.

मे-ा लग्न में चंद्रमा है तो चंद्रमा चतुर्थ भाव का स्वामी है. चंद्रमा मन का कारक है अत व्यक्ति विचारों को तरंगी तथा अस्थिर बनाता है. भ्रमण करना बहुत ही अधिक पसंद है. स्वस्थ प्रकति आदर्शवादी निर्भयता दीर्घायु रहता है. दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, गोमूत्र, गोबर में भी सूर्य की उर्जा मौजूद है.

चंद्रमा की महादशा दस साल की है. चंद्रमा कर्क राशि के स्वामी हैं. चंद्रमा का सीधा संबंध जल से है. पूर्णिमा के दिन चंद्रमा को प्रसन्न करने चाहिए. चंद्रमा का पुत्र बुध है. चंद्रमा का सीधा संबंध सांस से है. चंद्रमा को महर्-ि अत्रि एवं अनुसुया के पुत्र बताया गया है. चंद्रमा का सीधा प्रभाव मन पर होता है.

वेदों के अनुसार चंद्रमा गोवंश के बायें आंख में मौजूद है. गोवंश के पूजन करने से चंद्रमा प्रसन्न रहता है. गोवंश के पूजन को हमेशा वेदमंत्रों के साथ में करना चाहिए. गोवंश के पूजन करने के लिए अपने निवास में गोवंश का होना अनिवार्य है. गोवंश श्वेत रंग का हो तो सर्वोत्तम है. गोवंश को सफेद वस्तुएं भरपेट अवश्य ही खिलानी चाहए. चावल की मेवों से युक्त खीर खिलानी चाहिए. खीर से चंद्र के खराब प्रभाव पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं.

वैदिक चिकित्सा विज्ञान

आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान के अनुसार चंद्रमा धरती का उपग्रह है तथा चंद्रमा धरती की परिक्रमा करता है. वैदिक चिकित्सा विज्ञान तालचक्र के अनुसार होती है.

वैदिक चिकित्सा विज्ञान में अग्निहोत्र को महत्व दिया गया है. अग्निहोत्र करने के लिए सूर्योदय तथा सूर्यास्त का समय लिया गया है.

दसपूर्णमास यज्ञ

स्वर्गलोक की प्राप्ति के लिए अमावस्या तथा पूर्णिमा के दिन दर्शपूर्णमास यज्ञ भारत में बहुत ही लंबे समय से किये जाते हैं.

चतुर्मास्य यज्ञ

फाल्गुनी, आ-ाढ़ी और कार्तिकी पौर्णमासियों को जो यज्ञ किये जाते हैं वे चातुर्मास्य कहलाते हैं.

भारत में चातुर्मास्य भी लंबे समय से चंद्रमा के तीव्र प्रभाव को कम करने के लिए किए जाते हैं.

महामृत्युंजय यज्ञ

अमावस्या तथा पूर्णिमा के दिन महामृत्युंजय यज्ञ कम से कम 2 घंटे आवश्यकता पड़ने पर 4 घंटे एवं तीव्र प्रभाव को कम करने के लिए 6 घंटे का किया जाता है. 12 से 24 घंटे का महामृत्युंजय यज्ञ भी किया जाता है.

तालचक्र के अनुसार चंद्रमा पक्ष यानी पंद्रह दिनों तक अपनी कलाओं में निरन्तर वृद्धि तथा फिर पंद्रह दिनों तक कलाओं में कमी करता है. कलाओं की अधिकतम वृद्धि के दिन पूर्णिमा तथा कलाओं में सबसे अधिक कमी के दिन अमावस्या रहती है. अमावस्या तथा पूर्णिमा के दिन मानव बहुत अधिक संवेदनशील रहता है.

चंद्रमा को हमेशा ही भारतीय ज्योति-ा में सबसे अधिक महत्व दिया गया है. चंद्रमा की गति नौ ग्रहों में सबसे तीव्र होती है.

भारतीय ज्योति-ा के अनुसार हमेशा ही चंद्रमा के प्रभाव को दूर करने के लिए खिरनी की जड़ धारण करनी चाहिए. पलास से चंद्रमा के कारण उत्पन्न रोग दूर हो जाते हैं. चंद्रमा 27 नक्षत्रों में गोचर में गति करता है. चंद्रमा जिस समय गोचर में जिस नक्षत्र में रहता है उस नक्षत्र की जड़ी तथा वनस्पति अवश्य ही धारण करनी चाहिए.

अश्वनी

अश्वनी नक्षत्र में चार चरणों में चंद्रमा गति करता है. अश्वनी देवता का प्रतीक अश्वनी नक्षत्र है. सूर्य के पुत्र अश्वनी कुमार देवताओं के वैद्य के रुप में प्रसिद्ध हैं. अश्वनी कुमारों में जड़ीबूटियों से उपचार करने की जानकारी है. सूर्य से अश्वनी कुमारों को यह ज्ञान मिला हे.

अश्वनी नक्षत्र में चंद्रमा रहने पर व्यक्ति में जड़ीबूटियों का बहुत ही अच्छा ज्ञान रहता है. अश्व के समान ताकत बनी रहती है. अश्व की ताकत के कारण ही वायु की गति से कार्य पूरा करता है.

अश्वनी नक्षत्र के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए कुचला वक्ष को लिया जाता है कुचला न मिलने पर बांस की जड़ लेना चाहिए. अश्वनी नक्षत्र का स्वामी मंगल स्वपराक्रम तथा शौर्य देता है तथा पति केतु त्याग तथा उदारता देता है.

प्रथम चरण में चंद्रमा होने पर व्यक्ति गोवंश के लिए उपयोगी नहीं है. संपूर्ण रुप से स्वस्थ नेत्र लाल आगे की ओर दांत मोटे छोटे आकार के नाखून सिर या चेहरे पर मसा घाव तिल होता है.

व्यक्ति का स्वभाव दूसरों की पत्नी में रसिक है. छोटी आयु में मां पिता की मौत होने के कारण व्यक्ति अस्थिर मन का है. निर्भयी दूसरों की प्रगति से बहुत अधिक परेशान वस्त्र गहनों का शौकीन अच्छे परिवार में उत्पन्न सेना यंत्र उद्योग रसोई से संबंधित कार्य कतलखाने में नौकरी या व्यापार करता है. पंचगव्य पान करने पर भी परिणाम अनुकूल मिलते हैं.

अश्वनी नक्षत्र के दूसरे चरण में व्यक्ति को ढोर डोक्टर किसानी सेना पुलिस तांबे की धातु का कार्य करने बोयलर रेल का कार्य करवाता है. औरतों के समान स्वभाव बनाता है तथा वि-ायी सदगुणी विदवान यशस्वी बनाता है.

तीसरे चरण में व्यक्ति को गोवंश के लिए उपयोगी बनाता है. वैभवी, विदवान, होशियार, आनंदी, कवि, आगे पीछे करने में तत्पर, क्रोधी, हिम्मतवान स्वभाव का बनाता है. कोर्ट कचहरी कारागार भूमि से संबंधित कार्य मिस्त्री स्टील उद्योग में प्रबंधक विदेश संबंधित कार्य करता है.

चौथे चरण में व्यक्ति को माइन्स या भूमि संबंधी कार्य टाइपिस्ट कम्प्यूटर स्टेनोग्राफर मिस्त्री बाबू मेकेनिक दलाल बनाता है. स्वभाव से इत्र सुगंध एवं सौंदर्य प्रसाधनों का शौकिन स्थिर मन का शत्रु पर हावी रहता है.

भरणी

भरणी के 4 चरणों में चंद्रमा गति करता है. प्रथम चरण में व्यक्ति भूरे केश ठोस कद आक-ार्क व्यक्तित्व चेहरे पर घाव का निशान या चिन्ह रहता है. गोवंश के लिए समर्पित रहता है. अपने मन की करने में होशियार आनंदी गतिशील व्यसनी गरम गरम पीने का शौकिन कम से कम में काम करने में होशियार रोमांटिक स्वभाव का है.

संगीत का रसिक एवं संगीत के उपकरणों का व्यापार मेटरनिटी चिकित्सक प्रदर्शन एवं मेलों में लगने वाले सामानों का व्यापार विज्ञापन का कार्य दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से संबंधित व्यापार करता है.

भरणी नक्षत्र के दूसरे चरण में व्यक्ति लोभी स्वभाव का होता है. चिकित्सक, चांदी का कारोबार, सीने स्टूडियो, प्रसूतिगृह, अनाज, किराना आदि का कारोबार कर बहुत धन कमाता है. गोवंश के लिए अपार दान करता है. गोवंश के लिए विशे-ा लगाव रहने के कारण ही सदैव ही उसके शरीर पर हाथ फेरकर बहुत अधिक प्यार रहता है. गोवंश के लिए

रक्षा करने के लिए विजयी रहता है. महत्वकांक्षी रहने के कारण उल्लेखनीय प्रगति करता है. देखने में स्वस्थ एवं मजबूत, देह का चेहरे पर निशान, आक-ार्क होता है.

भरणी नक्षत्र के तीसरे चरण में व्यक्ति के दांत सामने की ओर निकले रहते हैं. व्यक्ति को हमेशा ही सरदी का कोठा होता है. सुदृढ बनावट देह की होती है. स्वभाव से रंगीला तथा सौंदर्य प्रसाधनों का शौकीन होता है. गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित रहता है. जीवन में धन की कमी नहीं रहती है. न्यायधीश, अधिवक्ता, आयकर, विक्रयकर, सम्पत्ति, खेती, खाद, कपड़े का अच्छा कारोबार करता है. वैद्य के कार्य में विशे-ा सफलता मिलती है. चिकित्सक के रुप में विशे-ा प्रसिद्धि मिलती है.

भरणी नक्षत्र के चौथे चरण में व्यक्ति क्रोधी, द्वे-ाी, अस्थिर, दृ-िटदो-ा, अभिमानी, खतरनाक होता है. सेक्स से संबंधित कारोबार, प्रसूति कार्य, लेखक, ग्रंथ कर्ता पानी के जहाज का कार्य करता है.

भरणी यम देवता का प्रतीक है. भरणी यानी भरना अर्थात एकत्र करना है. आंवला व फालसा भरणी के लिए उपयोगी है. आंवले का हमारे जीवन में बहुत ही अधिक महत्व दिया गया है. आवला नवमी के दिन हम आंवलें की पूजा करते हैं.

आंवले में विटामिन सी सबसे अधिक होता है. आंवले में अन्य महत्वपूर्ण रसायन होते हैं जो हमें मधुमेह से बचाते हैं. सूर्य के प्रभाव के लिए सूर्य की रंग चिकित्सा गोवंश के पंचगव्य की मदद से करनी चाहिए.

कृतिका

कृतिका के प्रथम चरण में चंद्रमा मे-ा राशि में गति करता है. मंगल के कारण ही व्यक्ति लाल वर्ण, मजबूत कद, स्वस्थ होता है. व्यक्ति का चेहरा चमकने के कारण हमेशा ही प्रभावित करता है. चेहरे पर चिन्ह होता है. धन की कमी नहीं रहती है. गोवंश के लिए हमेशा मदद रुप रहता है. अभिमानी, बुद्धिशाली, हिम्मतवान, सदैव कार्यरत, बहादुर, सत्ता का चाहक, आगे बढ़ने की इच्छा, कर्तव्य परायण, अनुशासन में रहकर कार्य करता है. सेना के स्वभाव वाला ऐसा व्यक्ति सेना में सर्जिकल, रसायन, पुलिस, जुए से संबंधित कार्य करता है.

3 चरण व-ाभ राशि में चंद्रमा गति करता है. ऐसे व्यक्तियों को धन की कमी नहीं होती है. गोवंश के लिए सदैव ही मदद करता है. कृतिका के दूसरे चरण में व्यक्ति स्वभाव से मानवता वाला, समाज में मिलने वाले, शत्रु विजयी, स्वार्थी, जुगारवृति वाले होते हैं. शरीर से स्वस्थ, लाल वर्ण, लाल आंखें, ललाट आगे की ओर, दांत खराब होते हैं.

कृतिका के तीसरे चरण में चंद्रमा रहने पर व्यक्ति अप्रमाणिक, बुद्धिशाली, होशियार, धीमी ग्रहण शक्ति वाला, कमनसीब, गंदी आदतों वाला होता है. ऐसा व्यक्ति गोवंश के लिए उचित नहीं है. लाल रंग का तथा स्वस्थ शरीर वाला होता है. दलाल, दवा, उन, हेरड्रेसर, नकसी कार्य, कारीगरी का कार्य करता है.

कृतिका के चौथे चरण में चंद्रमा रहने पर व्यक्ति धनी तथा दानी होता है. मानवता वाला, धार्मिक तथा बुद्धिशाली होता है. ऐसा व्यक्ति गोवंश के लिए हर तरह से अनुकूल रहता है.

कृतिका का अर्थ काटना है. कृतिका अग्नि का प्रतीक है तथा गूलर की लकड़ी का उपयोग करना लाभदायी है गूलर की पूजा की जाती है. गूलर हमारे दैनिक जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है.

रोहिणी

रोहिणी नक्षत्र ब्रहम देवता का सूचक है तथा रोहिणी यानी धीरे धीरे प्रगति करना है. राशि स्वामी शुक्र का दूसरों को मोहित करने का गुण तथा स्नेह प्रधान गुण तथा नक्षत्र स्वामी चंद्र के आनंदी, सुंदर तथा शांत स्वभाव के कारण व्यक्ति को गोवंश के लिए उपयोगी बनाता है. रोहिणी नक्षत्र के खराब प्रभाव को रोकने के लिए जामुन की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए. तुलसी का उपयोग भी किया जाता है.

मृगशिरा

यानी हरिन के मुंह के समान स्फूर्तिला तथा हलनचलनशील है. राशि स्वामी बुध एवं शुक्र के लिए बुध का अति व्यवहारिक एवं उत्तेजनापूर्ण स्फुर्तिकारक तत्व तथा शुक्र का कौशल्य तथा वात्सल्य, नक्षत्र स्वामी मंगल का उत्साह तथा जल्दबाजी का गुण महत्वपूर्ण है. मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए खैर की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है.

आर्द्रा

आर्द्रा यानी पिगलना है. राशि स्वामी बुध का समय के अनुरुप बुद्धि का उपयोग करना तथा नक्षत्र स्वामी राहू का नाटकीय पराक्रम कर फल प्राप्ति करना अदभुत है. ऐसा व्यक्ति गोवंश के लिए उपयोगी है. आर्द्रा नक्षत्र रुद्र देवता का प्रतीक है इस नक्षत्र के

प्रभाव को कम करने के लिए शीशम एवं बहेड़ा की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए.

पुनर्वसु

पुनर्वसु का अर्थ फिर से बसना है. राशि पति बुध एवं चंद्र जिसमें बुध की स्मरणशक्ति, तर्कशक्ति, चंद्र की कल्पनाशक्ति, नक्षत्रपति गुरु की बौद्धिकशक्ति अदभुत है. पुनर्वसु अदिति देवता का सूचक है तथा पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से बचने के लिए बांस की जड़ उपयोग की जाती है.

पु-य

का अर्थ पु-ट करना है. पु-य गुरु यानी बृहस्पति का सूचक है तथा पीपल की जड़ का उपयोग करना चाहिए. पीपल हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है. पीपल का पूर्ण विकसित पेड़ 1712 किलोग्राम ओक्सीजन 1 घंटे में देता है.

आश्ले-ाा

आश्ले-ाा का अर्थ कोई भी अपेक्षा बिना कार्य पूरा करना है. नक्षत्र सूर्य देवता का प्रतीक है तथा नक्षत्र के प्रभाव को कम करने के लिए नागकेशर का उपयोग करना चाहिए.

मघा

मघा का अर्थ सभी प्रकार के धन धान्य के भरे कोठार हैं. मघा नक्षत्र पितर देवता का प्रतीक है तथा मघा नक्षत्र के प्रभाव को कम करने के लिए बरगद की जड़ का उपयोग करना चाहिए. बरगद भी हमारे लिए वंदनीय है तथा बरगद की जड़ के नीचे की मिटटी बहुत ही उपजाउ होती है.

पूर्वा फाल्गुनी

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र भग देवता का प्रतीक हैं तथा पलास की लकड़ी तथा जड़ का उपयोग करना चाहिए.

उत्तरा फाल्गुनी

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र अमर्या देवता का प्रतीक है तथा कुप्रभाव को कम करने के लिए पाकड़ की जड़ का उपयोग किया जाता है

हस्त नक्षत्र

हस्त नक्षत्र चिरजीव युवा अवस्था का प्रतीक है.

हस्त नक्षत्र सविता देवी का प्रतीक है जिसका प्रभाव कम करने के लिए रीठा की जड़ तथा लकड़ी का उपयोग किया जाता है.

चित्रा

ऐसा चित्र जो नयन के सामने आये तो व्यक्ति देखता रह जाये. राशि पति बुध की अप्रितम बुद्धिमता तथा स्मरणशक्ति नक्षत्रपति मंगल की ह्रदयपूर्वक कर्म कर फल प्राप्त करने की लालसा रहती है. चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में चंद्रमा रहने पर तुला राशि के स्वामी शुक्र के कारण गोवंश के उत्थान करने के लिए प्रचार प्रसार करने के लिए बहुत ही उपयोगी है. लेखक, ग्रंथकर्ता, प्रकाशक, वार्ताकार, कंप्यूटर, तथा प्रेस से संबंधित कार्य करता है. श्यामवर्ण कोमल चोरस मुंह तथा स्वस्थ शरीर तथा स्वभाव से आनंदी, शांतिचाहक, समतोल, असाधरण प्रतिभा के धनी होते हैं.

चित्रा नक्षत्र त्व-टा देवता का प्रतीक है तथा बेल की लकड़ी तथा जड़ का उपयोग करना चाहिए.

स्वाती

स्वाती यानी अति सुंदर – राशि स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला तथा शक्तिकारक तत्व. नक्षत्र पति राहू के कौटिल्य के कारण ही नाटकीय शक्ति उत्तम रहती है. स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण में चंद्रमा रहने पर व्यक्ति अपने प्रयत्नों से परिणामों को अति सुंदर बनाता है. परोपकारी, हिमतवान, विदवान, होशियार, वाकपटु, समयवर्ती होता है. गोवंश के लिए ऐसा व्यक्ति उपयोगी है. धन की कमी नहीं रहती है.

स्वाती नक्षत्र वरुण देव का प्रतीक है तथा नक्षत्र के कुप्रभाव को कम करने के लिए अर्जुन की लकड़ी का उपयोग करना चाहिए.

विशाखा

विशाखा नक्षत्र इन्द्राग्नि देव का प्रतीक है तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए कटाई का उपयोग होता है.

अनुराधा

अनुराधा नक्षत्र मित्र देव का प्रतीक है तथा अनुराधा नक्षत्र के प्रभाव को कम करने के लिए मौलश्री की छाल तथा जड़ का प्रयोग करना चाहिए.

ज्ये-ठा

ज्ये-ठा नक्षत्र इन्द्र देवता का प्रतीक है तथा चीड़ या देवदारु की लकड़ी का उपयोग करते हैं.

मूल

मूल नक्षत्र नित्रर्तति देवता का प्रतीक है तथा इसके कुप्रभाव से बचने के लिए साल की लकड़ी तथा जड़ का उपयोग करना चाहिए.

पूर्वा-ाढ़ा

पूर्वा-ाढा नक्षत्र जल देवता का प्रतीक है तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए जलवेतस यानी वनमूली ओर अशोक का उपयोग किया जाता है.

उत्तरा-ाढ़ा

उत्तरा-ाढा नक्षत्र विश्वेदेव का प्रतीक है तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए कटहल का उपयोग करना चाहिए.

श्रवण

श्रवण नक्षत्र वि-णु देवता का प्रतीक है तथा मदार के पौधे का उपयोग करना चाहिए.

घनि-ठा

घनि-ठा नक्षत्र को वसुदेव का प्रतीक माना गया है तथा शतभि-क, पूर्वा भाद्रपद, इस नक्षत्र के खराब प्रभाव को कम करने के लिए शमी यानी छोकर यानी खेजड़ी के उपयोग करने की सलाह दी गयी है.

शतभि-क

शतभि-क नक्षत्र वरुण देव का सूचक है तथा इस नक्षत्र के खराब प्रभाव को कम करने के लिए कदम्ब का प्रयोग करना चाहिए.

पूर्वा भाद्रपद

पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र अजैकपद देवता का सूचक है तथा इस नक्षत्र का खराब प्रभाव कम करने के लिए आम के वृक्ष का उपयोग करना चाहिए.

उत्तरा भाद्रपद

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र आर्हिबुर्धय देवता का सूचक है तथा इस नक्षत्र के खराब प्रभाव को कम करने के लिए नीम का प्रयोग किया जाता है.

रेवती

रेवती नक्षत्र जीवन में छोटी छोटी मुश्किल में मुरझाये हुए फूल जैसा. राशि पति गुरु के दया तथा उदार गुण. नक्षत्र पति बुध के व्यवहारिक समय के अनुकूल बनकर काम करने की आदत. पू-ा देव का प्रतीक हैं तथा इसके खराब प्रभाव को कम करने के लिए महुआ की लकड़ी का उपयोग करने की सलाह दी गयी है.

चंद्रमा यदि रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में रहने पर व्यक्ति गंभीर, उंचे कद, आक-ार्क, आशावादी स्वभाव, सदा उत्साही, विशाल मन, पढ़ने में होशियार, चंचल मन का कानून तथा साहित्य का शौकिन रहता है. ज्योति-ा, पत्रकार, गणितज्ञ, अकाउन्टस, सिविल इंजीनियर होता है.

रेवती नक्षत्र के दूसरे चरण में चंद्रमा रहने पर व्यक्ति गोवंश के लिए मदद करने वाला होता है. गोरा, आनंदी, हसमुख, उंचा, मजबूत कद का, सामाजिक, बड़े दिल वाला, अधिक मित्रोंवाला, सुधारक है. कारोबार में संगीत के साधनों, रसायनों, मन से पूरी तरह से पवित्र रहने के कारण ही कल्पनाशील तथा ईश्वर की ज्योति को जानने वाला होता है.

चंद्रमा के गोचर में कमजोर होने पर मानव मन पर तीव्र प्रभाव के कारण ही निद्रा रोग, आलसपन, कफ, अतिसार यानी संग्रहणी, पिटक अथवा कारबंकिल, टाढीया बुखार, सींग वाले जीवों से खतरा, मंदाग्नि, अरुचि उत्पन्न होना यानी भूख न लगना, महिलाओं की व्यथा, कामला, खून की खराबी, पानी से भय, मन का थक जाना, बालग्रह, दूर्गा, किन्नर, यमराज, सर्प, यक्षिणी से भय रहता है बीमारियो से बचने के लिए पंचगव्य का सेवन करते रहना चाहिए. नवग्रह धूप का हवन करना चाहिए. मन पर नियंत्रण रासायनिक खाद एवं कीटनाशक से उत्पन्न अनाज के लम्बे समय तक सेवन करने पर समाप्त हो जाता है इसलिये गाय माता के गोबर से उत्पन्न अनाज का सेवन करना चाहिये.

वर्तमान समय में विकसित देश जैविक अनाज को मंहगे मूल्य पर आयात कर रहे हैं. वर्तमान समय में मानव चंद्रमा के प्रभाव को कम करने के लिये बहुत सारे रत्नों का उपयोग चांदी में बहुत अधिक करता है लेकिन रत्नों का अनुकूल प्रभाव नहीं मिलने के कारण मानव रत्नों से पूरी तरह से निराश हो गया है. चंद्रमा का यंत्र भी उपयोग किया गया है. तांबा या चांदी का यंत्र उपयोग किया गया है.

मानव की जन्मकुंडली में चंद्रमां का स्थान, बल, गोचर में चंद्रमा की स्थिति, चंद्रमा की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यातंरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा आदि का गहराई से विचार करने पर चंद्रमा के मानव पर खराब प्रभाव के बारे में सूक्ष्म विचार करना संभव है. चंद्रमा के पृथ्वी के बहुत ही निकट रहने के बाद भी गाय माता पर चंद्रमा की शक्तिशाली तरंगे समान प्रभाव डालती है.

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार सोमवार के दिन हमेशा ही सफेद रंग की गाय माता का धारोष्ण दूध चांदी के बर्तन में तुरन्त ही पीना चाहिये. भारत में चांदी के बर्तन में ही दूध पीने की परम्परा हजारों वर्षों से है. मंदिरों में भी हम अपने भगवान को चांदी के बर्तनों में ही दूध धराते हैं. चांदी के बर्तन में दुहा गया धारोष्ण दूध पित्त को पूरी तरह

से शांत करता है. पित्त प्रकृति के व्यक्ति को चांदी के बर्तन में संपूर्ण जीवन में दूध पीना बहुत ही अनिवार्य है. पित्त चढ जाने पर पित्त प्रकृति का व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन पूरी तरह से खो बैठता है.

चांदी को सुपाच्य माना गया है. चांदी का बर्तन न मिलने पर मिटटी के बर्तन में दही जमा कर नियमित सेवन करने से बहुत अधिक लाभ मिलता है. मानव पर चंद्रमा अपनी तरंगों का बहुत ही विशेष प्रभाव पूर्णिमा और अमावस्या में देता है. मानव शरीर में मौजूद जल पर चंद्रमा का प्रभाव बहुत ही तीव्र रहता है. समुद्र में ज्वार और भाटा भी पूर्णिमा और अमावस्या के दिन ही आता है. पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिन हमेशा चंद्रमा के तीव्र प्रभाव के कारण ही आत्महत्या या हत्या की मनोवृत्ति भी मानव में पायी गयी है. मानव को श्रावणी पूर्णिमा के दिन पंचगव्य स्नान एवं पान करने का विधान है. मानव को भैंस, वर्णसंकर जानवर का दूध कभी नहीं पीना चाहिये. भैंस के दूध से बनी वस्तुएं हमेशा के लिये त्यागनी अनिवार्य है.

मंगल

मंगल ग्रह 9 ग्रहों का सेनापति है. मंगल का अंक 9 है. मंगल ग्रह को अशुभ माना गया है. मंगल ग्रह पुरुष एवं क्षत्रिय ग्रह, मजबूत, क्रूर, लडाई करने का शौकिन ग्रह है भारतीय ज्योतिष में प्राकृतिक रुप से मंगल तमोगुणी तथा पाप ग्रह है. 80 दिनों तक मंगल वक्री रहता है. 2 से 3 दिनों तक स्थिर रहता है. मंगल सामवेद का अधिपति है. मंगल के कारण ही मानव के अंदर कुछ करने की भावना है.

मंगल मे-ा एवं वृश्चिक राशि के स्वामी हैं. स्वग्रही मंगल मानव को बहुत ही महत्वपूर्ण बनाता है. मकर राशि में मंगल उच्च का होता है. मकर राशि में मंगल मानव को ताकतवर बनाकर बहुत ही अच्छे परिणाम देता है. 28 व-र्ा में भाग्य का उदय मंगल के कारण होता है.

मंगल प्रथम भाव में रहने पर शुभ है. पूर्व जन्म में बहुत सारे अच्छे कार्य करने के कारण इस जन्म में भी अच्छे कार्य करने का अवसर मिलता है. मानव जन्म में बहुत ही कम समय में चरम सीमा तक प्रगति करता है.

गोवंश के आर्शीवाद के कारण गोवंश रक्षा करने के लिए सदैव ही तत्पर रहता है. अपना तन, मन, धन लगाकर व्यक्ति गोवंश संवर्धन कार्य के लिए लालायित रहता है. गोदान करने के लिए सदैव आगे रहता है.

आवेग अधिक रहने के कारण कामी होता है. स्वभाव से स्वतंत्र होता है. झगडा करने में सदैव ही तत्पर रहता है. गरम स्वभाव का रहता है. शरीर पर घाव अवश्य ही रहते हैं. झक्की तथा हिम्मतवान होता है. बहुत ही शीघ्र क्रोध करता है.

व्यक्ति अपनी उपर उठने की भावना के कारण सदैव ही प्रगति करता है. मन को सूर्य के उदय एवं अस्त के समय में नियंत्रित करने के लिए इस संवेदनशील समय पर हवन करने की परम्परा हमारे यहां पर बहुत ही प्राचीन समय से है.

मंगल धन भाव में रहने पर अशुभ है. नंदी के विकास करने के लिए विशे-ा प्रयत्न करना आवश्यक है. नंदी के माध्यम से धन मिलना संभव है. गोवंश के अपराध करने के कारण गोवंश का श्राप मिलता है. धन प्राप्त करने निश्चय कर किसानी से फायदा है. पैतक सम्पत्ति प्राप्त करता है. नेत्र बंद कर सटटा करता है.

वाणी तीव्र रहने के कारण ही व्यक्ति का स्वभाव झगडा करने का रहता है. दांत का दर्द रहता है. दाहिने नेत्र में भी परेशानी रहती है. कमाने की योग्यता रहने के बाद भी उडाउ एवं व्यय करने की मानसिकता के कारण धन की कमी हमेशा रहती है.

मन बहुत ही दु-ट रहता है. दु-ट मन के कारण ही सदैव दूसरों को परेशान करता है. स्प-ट वक्ता होने के कारण ही परिवार में नहीं बनती है. परिस्थितियां व्यक्ति को धन बहुत अधिक व्यय करवाती है. अग्निहोत्र सूर्योदय और सूर्यास्त के समय हर घर में वेदिक मंत्रों के साथ किया जाता था.

मंगल तीसरे भाव में रहने के कारण ही अशुभ है. नंदी से खतरा बना रहता है. गोवंश के लिए विशे-ा लगाव रहता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए अपनी जान दाव पर लगा देता है. गोवंश के अपराध करने के कारण गोवंश का श्राप बरबाद कर सकता है.

तीसरे भाव का कारक मंगल है. स्वभाव से विनयी सुशील स्नेह करने वाला तथा ताकतवर धनवान रहता है. अवरोध एवं दुर्घटना का भय रहता है. कान के बहरेपन के कारण परेशानी है. यात्रा में परेशानी रहती है.

भाई बहिन से ई-र्या करने तथा उनके नुकसान करने के कारण भाई बहिन का कम सहयोग रहता है. गेंहू उत्तम प्रकार का लेकर उसको दूध या पानी में अच्छा तरह से भिगोकर गोवंश को खिलाना चाहिए.

चौथे भाव में मंगल अशुभ है. नंदी के लिए विशे-ा प्रयत्न करने की आवश्यकता है. कठोर मन को नरम बनाना आवश्यक है. गोवंश के प्रति विरोध बना रहता है. गोवंश के अपराध करने के कारण व्यक्ति को गोवंश का श्राप बरबाद कर सकता है.

पिता के साथ में तकरार करता है. मित्रों के साथ में व्यवहार अच्छा नहीं है. अपनी बची हुई आयु में सम्पत्ति धन की प्राप्ति करता है. वाहन सम्पत्ति मकान भूमि आदि में परेशानी बनी रहती है. माता तथा पत्नी का सहयोग नहीं प्राप्त होता है. सरकारी कार्य में बहुत अधिक प्रगति होती है. गहरी नीति के कारण व्यक्ति बहुत ही हिम्मतवान एवं अंधसाहसिक होता है. माता के साथ सदैव ही विचारों में भिन्नता रहने के कारण विवाद होता है. गेंहूं 1 किलो से लेकर 5 किलो तक गोवंश को खिलाना चाहिए.

पांचवे भाव में मंगल अशुभ है. नंदी की सेवा करने पर परिवर्तन करना संभव है. गोवंश से वैर तथा गोवंश के अपराध करने के कारण पतन निश्चित है. संतानों की ओर वैर भावना रहती है. सटटे शर्त लोटरी में नुकसान होता है. व्यक्ति को क्रूर मन एवं

दु-ट स्वभाव का बनाता है. साहसिक मन के कारण स्वयं ही परेशानियां आमंत्रित करता है. पेट के रोग होते हैं. मानसिक रुप से परेशान रहता है.

कामवासना में बहुत अधिक रुचि रहती है. अपना स्वास्थय अधिक काम आवेग के कारण ही बिगाड देता है. गेहूं का दलिया गाय के घी में बनाकर गोवंश को खिलाना चाहिए.

छठवे भाव में मंगल अशुभ है. नंदी के प्रति वैर भावना त्यागना आवश्यक है. गोवंश के द्वारा मारने की संभावना रहती है. अतिशय विलासी होता है. छाती तथा गर्दन के रोग होते हैं. बुरे नौकरों से नुकसान होता है. भाग्यवान एवं किर्तीवान होता है. गेहूं, गुड़, घी, लाल फल, गोवंश को अवश्य ही भरपेट खिलाना चाहिए.

सातवे भाव का मंगल अशुभ है. गोवंश के अपराध करने के कारण ही गोवंश का श्राप मिलता है. गोवंश के मारने पर मृत्यु हो सकती है. गोवंश के प्रायश्चित करने की आवश्यकता है. गोवंश के दान करने पर ही मुक्ति मिलनी संभव है. मंगली होता है.

स्वभाव झगडा करने का रहता है. भागीदारी में परेशानी रहती है. शरीर से भी परेशान रहता है. दुर्बलता के कारण मानसिकता उग्र रहती है. शत्रु बहुत ही अधिक होते हैं. दो पत्नी से वैवाहिक संबंध होते हैं. पत्नी से बहुत ही अधिक परेशानी उत्पन्न करता है.

वैवाहिक संबंध में वियोग संबंध विच्छेद करवाता है. पत्नी की मौत हो सकती है. नौकरी करने का योग देता है. कोर्ट कचहरी के कार्य में बदनामी देता है. गेहूं के दलिए को बनाते समय उसमें मेवा जरुर डालना चाहिए. आपका समाधान निश्चित रुप से गोवंश को दलिया खिलाने पर होता है.

आठवे भाव में यदि मंगल है तो अशुभ है. नंदी की सेवा करनी अनिवार्य है. नंदी के आर्शीवाद से अकाल मृत्यु टल सकती है. नंदी पर महाकाल की सवारी है. महाकाल के प्रसन्न होने पर संचित कर्म समाप्त हो सकते हैं.

गोचर भूमि पर अवैध कब्जों को हटाने के लिए संगठित प्रयत्न करने की आवश्यकता है. गोवंश का अपराध करने के कारण गोवंश का भयंकर श्राप मिलता है.

गोवंश के नाम पर धन खाने पर गोवंश के द्वारा व्यक्ति को मारने की पूरी संभावना बनी रहती है.

गोवंश की रक्षा करने के कारण कसाई के द्वारा हत्या की जा सकती है. अंहकार तथा पांखड के कारण उडाउ होता है. भागीदारी या साथी की मौत होती है. व्यक्ति मंगली है.

अग्नि से भय तथा दुर्घटना की संभावना रहती है. नेत्र की पीडा पानी से घात शस्त्र से भय अचानक मौत का योग है.

गोवंश के अंदर सूर्य की ताकत मौजूद है. लाल गाय को खिलाने पर फल तुरन्त ही मिलता है. लाल गाय में सूर्य के अंदर की सभी ताकत मौजूद हैं.

नवमें भाव में यदि मंगल है तो बहुत ही अधिक अशुभ है. गोवंश के लिए कठोर मन रखता है. गोवंश के चारे का पैसा खाता है तो पूरी तरह से बरबाद होता है. गोवंश के गोचर की भूमि हड़पने का गंदा कार्य करने के कारण बरबाद होता है. गोवंश के मारने के कारण मर सकता है.

नास्तिक असत्य वचनयुक्त ई-र्यावान अभिमानी धनवान होता है. माता पिता के साथ में विरोध एवं संघर्ा बना रहता है. भाग्यहीन बनता है. बचपन में पिता को घात करता है. अनेक शत्रु बने रहते हैं.

गोग्रास वैदिक काल में हर घर में नियमित रुप से वेद मंत्रों के साथ में बहुत ही प्रेम से गोवंश को भरपेट अवश्य ही खिलाया जाता था.

दसवे भाव में यदि मंगल है तो व्यक्ति के लिये बहुत ही अच्छा है. नंदी के विकास करने के कारण महाकाल का विशे-ा आर्शीवाद मिलता है. नंदी के विकास करने के लिए सरकारी सहायता मिलती है. गोवंश की जीवन भर तन, मन, धन से समर्पित होकर सेवा करता है. गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है.

जीवन भर अग्निहोत्र करता है. दैवी सहायता मिलने के कारण ही हर मनोकामना की पूर्ति होती है. गोवंश की रक्षा तथा गोचर भूमि का अवैध कब्जा दूर करना उत्साह के साथ करता है. कसाई पर विजय प्राप्त करता है.

महान कर्तव्य करने में तत्पर रहता है. अपना अभिप्राय तुरन्त बताने आगे रहता है. ताकतवर बहादुर व्यापार में साहसिक है. हर तरह का आनन्द प्राप्त होता है.

भूमि से उत्पन्न पदार्थ से बहुत ही लाभ प्राप्त होता है. व्यक्ति साहसिक तथा प्रतापी होता है. विद्युत पुलिस सेना धातु अग्नि भूस्तर विद्या से कमाई होता है. अज्ञानता के कारण मानव के द्वारा वर्तमान में

गोवंश को झूठा तथा बचा हुआ बासी खाना खिलाया जाता है.

ग्यारहवे भाव में यदि मंगल है तो अशुभ है. गोवंश के अपराध करने के कारण व्यक्ति का पतन निश्चित है. गोवंश का श्राप बहुत ही भयंकर लगता है. प्रायश्चित करने के लिए गोवंश का दान करना चाहिए. नंदी की सेवा कर महाकाल को प्रसन्न करना चाहिए. महाकाल प्रसन्न होकर विशे-ा परिवर्तन करते हैं.

पिता से विचारों में भिन्नता रहने पर नहीं बनती है. व्यक्ति युवा होने पर अति कामी होता है. धूर्त एवं घातक मित्रों से परेशान रहता है.

धन अवश्य ही प्राप्त करता है. गोवंश के पंचगव्य कल्प करने से मानव के देह के अंदर असाधारण उर्जा का संचार होता है.

बारहवे भाव में यदि मंगल है तो मंगली होने के कारण बहुत ही अधिक अशुभ है. गोवंश के प्रति बहुत ही कठोर मन रहता है. गोवंश के प्रति अपराध करने के कारण गोवंश के भयंकर श्राप के कारण पतन होता है. गोवंश के द्वारा मारने पर मौत हो सकती है.

गुप्त शत्रुओं के कारण ही पतन होता है. बिना विचार किये साहस करने पर हानि निश्चित है. अयोग्य वस्तुएं करने के कारण बंधन योग है.

उदार स्वभाव के कारण ही एक बार धनहीन होना पडता है. व्यक्ति के नेत्र में कमी रहती है. व्यक्ति को अविवाहित रहना पडता है. विवाह यदि होता है तो पत्नी की मौत हो सकती है अथवा संबंध टूट सकता है.

जीवन में बीमारी के प्रभाव को कम करने के लिए दूध, छाछ, पंचगव्य का कल्प अवश्य ही करना चाहिए.

कुंभ लग्न में मंगल तीसरे तथा कर्मस्थान का मालिक बनता है. मानव वेदिक काल में गाय माता के कारण ही बहुत अधिक सुखी और संपन्न था.

मीन लग्न में मंगल धनस्थान तथा भाग्यभुवन का मालिक बनता है. मानव वेदिक काल में गाय माता के कारण ही बहुत अधिक सुखी और संपन्न था.

धनु लग्न में मंगल पंचम त्रिकोण एवं व्ययस्थान का मालिक बनता है. वेदिक काल में कामधेनु, सुरभि, कपिला गायें थी. वेदिक काल में भारत में हर घर में गाय थी. हर घर में गाय माता का पूजन वेदिक मंत्रों के साथ किया जाता था.

तुला लग्न में मंगल परिवारस्थान तथा सप्तम भाव का मालिक बनता है. गोग्रास समाप्त होने के कारण गाय माता मल खाती है. जानबूझकर मानव भारत में बासी, झूठी, खराब रोटी गाय को देता है. गाय माता मजबूरन भारत की सडक पर गंदगी और प्लास्टिक खाती है. भारत में मानव गाय माता को जानवर समझ रहा है.

कन्या लग्न में मंगल तीसरे तथा आठवे का मालिक बनता है. भाई से व्यक्ति को फायदा होता है. व्यक्ति की मौत दुर्घटना से होती है. गाय माता जन्म से मृत्यु तक परिवार में हमारे साथ रहती है.

सिंह लग्न में मंगल चौथे तथा भाग्य का मालिक बनता है.कर्क लग्न में मंगल पंचम तथा कर्मस्थान का मालिक बनता है.

मिथुन लग्न में मंगल शत्रु एवं 11 वे का मालिक बनता है. गाय माता का महत्व वर्तमान में भारत में कम हो गया है. गाय माता का दूध जो अमृत के तुल्य है मानव पसंद नहीं करता है. मानव को भारत में वर्णसंकर जानवरों और भैंस का दूध बहुत अधिक पसंद है. गाय माता की उपेक्षा के कारण भारत में मानव बहुत ही अधिक दुःखी है.

मे-ा लग्न में मंगल स्वग्रही होने के कारण मानव को साहसिक उग्रस्वभाव अंधे साहस करवाकर कामी बनाता है. मानव के चेहरे पर घाव फोडे आदि होते हैं. स्वभाव से बहुत ही कठोर होते हैं. नेत्र सिर मुंह पर मंगल अशुभ है. विवाह में परेशानी आती है. मानव को साधु के समान रहने पर उत्तम रहता है. गाय माता का अपमान मानव जानबूझकर कर रहा है. गोहत्या भारत में दिनदहाडे की जा रही है. गाय माता के सर्वनाश के कारण ही मानव का सर्वनाश निश्चित है.

मंगल के प्रभाव को संतुलित करने के लिए लाल रंग के गोवंश का पूजन मंगलवार के दिन विधिवत करना चाहिए. मंगल 4 थी दि-ट से माता को परेशानी वाहन संपत्ति भूमि मकान में परेशानी बनी रहती है. मंगल की 8 वी दि-ट आयु में बढोत्तरी करता है.

मंगल के कारण मानव की रुचि विद्युत रसायन अग्नि शस्त्र विद्या सिरामिक्स दौड में रहती है. मंगल गति का कारक है.

मंगल प्रथम चतुर्थ सप्तम अ-टम एवं बारवे भाव में रहने पर मानव मंगली है. मंगली का विवाह देर से होता है. मंगली विवाह देर से होने के कारण बेचेन रहता है. मंगली का विवाह संबंध अति उत्साह

या भावुकता के कारण टूट सकता है. मंगल के प्रभाव को कम करने के लिए लाल रंग के गोवंश को लाल रंग के गुड़ को खिलाना चाहिए. आठवा मंगल मानव के शरीर में चीरफाड या दुर्घटना करवाता है.

आठवे मंगल के कारण मानव की अचानक मौत होना भी संभव है. गेंहूं का दलिया मेवे वाला गाय के घी में बनाकर भरपेट खिलाना चाहिए. आठवे एवं बारवे भाव का मंगल मानव के स्वभाव को बहुत अधिक तमोगुणी बनाता है. क्रोध के कारण बहुत अधिक हिंसक होता है तथा मानसिक संतुलन बिगाड कर हत्या आदि अशुभ कार्य करता है. मसूर की दाल गोवंश को खिलानी चाहिए. लाल फल भी गोवंश को खिलाना चाहिए.

कर्क राशि में मंगल नीच का होता है. नीच का मंगल मानव से नीच कर्म करवाता है. गोवंश की हत्या में मदद करता है. गोवंश के मांस बेचने तथा गोवंश के चारे की भूमि हड़पना आदि कार्य करता है.

वर्तमान में मंगल के खराब प्रभाव को कम करने के लिये उपवास, व्रत, मंगल यंत्र का पूजन, लाल वस्तुओं का दान, जप, लाल रंग के रत्नों को पहनने की प्राचीन परम्परा भारत में है लेकिन वर्तमान समय में गोवंश के रक्त के भूमि पर बहने के कारण ही मंगल के खराब प्रभाव में अनुकूलता नहीं मिलने के कारण ही मंगलवार को मंगल ग्रह के तीव्र प्रभाव को कम करने के लिये लाल रंग की गाय माता का दूध तांबे के बर्तन में पीना चाहिये.

मंगल ग्रह पृथ्वी का पुत्र है. धरती से मंगल 1286619 योजन दूर है. इतना दूर रहने के बाद भी मंगल बहुत अधिक घातक प्रभाव मानव पर छोडता है.

भूमि पर वर्तमान में मंगल के कारण ही तामसिकता चरम सीमा पर है. गोवंश हत्या में भी निरन्तर बढोतरी हुई है. मानव की आपस में एक दूसरे का सभी कुछ छीनने की भावना के कारण आक्रमण करने में तत्पर रहने के कारण युद्ध की अपार संभावना रहती है. मानव मानव के रक्त के प्यासे हैं. चारों ओर अमंगल के कारण ही अशांति है.

अस्थिरता भय आतंक अविश्वास ई-र्या तनाव का ही वातावरण बन गया है. प्रेम एवं विश्वास का पूरी तरह से अभाव है. मंगल के कारण ही वर्तमान में मांसाहार, नशीली वस्तुओं का सेवन करना, भैंस, वर्णसंकर जानवरों के दूध तथा दूध से बनी वस्तुओं का सेवन करना भारत में बहुत अधिक है.

भारतीय ज्योतिष के अनुसार आने वाले समय में गोचर में मंगल के कारण भूमि पर क्या घटना घटेगी कहना संभव है.

ज्योति-ा विज्ञान में रोगी के बारे में समझने के लिए तीन बिंदुओं लग्न, सूर्य तथा चंद्र का अध्ययन करने पर पूरी तरह से स्प-ट हो जाता है.

मंगल ग्रह के गोचर में कमजोर हो जाने पर तीव्र प्रभाव के कारण ही मानव में अधिक प्यास लगना, पित्त या वायु का प्रकोप, पित्त ज्वर, अग्नि, विष, शस्त्र से भय, कोढ का रोग, नेत्र रोग, पेट में एपेन्डीसाइटीज, मिर्गी, मज्जा रोग, खुजली, चर्म रोग, शरीर के अगों का टूटना, चोरों से भय, भाई, मित्र तथा पुत्रों से कलह, शत्रुओं से युद्ध, राक्षस, गंधर्व से भय रहने के कारण शरीर के उपरी भाग में बीमारियां होती हैं. गोवंश के माध्यम से आदिभौतिक, आदिदैविक तथा आध्यात्मिक परिवर्तन करना संभव है.

मंगल ग्रह लाल रंग की तरंगे हमेशा छोड़ता है. तरंगों का प्रभाव सीधे रक्त पर पडता है. वात पित्त कफ के असंतुलन के कारण ही मानव में हमेशा तीव्र उत्तेजना बनी रहती है. उत्तेजना के कारण मानव अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है तथा अपने पैर पर स्वयं कुल्हाडी मार बैठता है. गोग्रास में लापसी, हलवा, लडडू या गुड अवश्य होना चाहिये.

एक राशि में मंगल ढेड माह तक रहता है. मंगल के कारण मानव बहुत अधिक आक्रामक होता है. मंगल ग्रह की जन्मकुंडली में स्थिति, मंगल की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यांतरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा योगिनीदशा देखकर मंगल का मानव पर खराब प्रभाव सूक्ष्म रुप से देखना संभव है मंगल की महादशा 7 साल की होती है. मंगल की महादशा के कारण मानव पर विशे-ा प्रभाव ध्यान में आता है. 100 प्रतिशत परिणाम

कालपुरुष के विभिन्न अंगों को नियंत्रित और निर्देशित करने वाली राशियों, ग्रहों आदि की स्थितियों के आधार पर विशोंत्तरी दशा का अध्ययन कर महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकल सकता है.

पंचगव्य एवं महापंचगव्य महो-ाधियां ही उपयोग में लानी चाहिए. हवन हर दिन अवश्य ही करना चाहिए. हवन करने से मन पवित्र रहता है.

मंगल ग्रह का मानव से बहुत गहरा संबंध है. मंगल ग्रह से जो लाल रंग की तरंगे निरन्तर निकलती रहती हैं वे मानव के रक्त पर बहुत ही तीव्र घातक प्रभाव डालती हैं. रक्त में उपस्थित हीमोग्लोबिन का कारक मंगल है.

लाल सिंधी, गीर का दूध मंगल के घातक प्रभाव को कम करने के लिये बहुत ही उत्तम है. तांबे के बर्तन न मिलने पर तांबे का सिक्का दूध में डूबा देना चाहिये. मिटटी के बर्तन का उपयोग किया जा सकता है. तांबे के बर्तन में दुहा गया धारोष्ण दूध बादी को दूर करता है. लाल रंग की गाय माता के दूध में मिठास बहुत ही अधिक होती है. लाल गाय माता के दूध में गर्भ धारण शक्ति और कफ नाशक गुण विशेष रुप से होते हैं. लाल रंग की गाय माता का दूध कल्प 180 दिनों तक बांझ महिला को करवाने पर बच्चा निश्चित रुप से होता है.

बुध

बुध ग्रह भारतीय ज्योतिष के अनुसार नपुंसक ग्रह माना गया है. बुध ग्रह वैश्य, राजसी स्वभाव का है. बुध का अंक पांच है. बुध ग्रह बैंकिंग, व्यापार, बुद्धि के कार्यो यादशक्ति मानसिक शक्ति प्रेरणाशक्ति से संबंधित है. बुध निरन्तर हरे रंग की तरंगे मानव पर छोडता रहता है.

मे-ा लग्न में बुध पराक्रम तथा शत्रु भाव का मालिक बनता है. मे-ा लग्न में बुध बौद्धिक प्रतिभा विदवता उच्च विद्या गणित व्याकरण सामुद्रिक आदि देता है.

छठी इंद्रिय पूरी तरह से जाग्रत होने के कारण पूर्व आभास होने के कारण सावधान रहता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए सदैव ही तन, मन, धन से तत्पर रहता है.

मानवता के लिए ऐसा व्यक्ति आदर्श होता है. बुध के कारण ही व्यक्ति जीवन भर अग्निहोत्र करता है.

बुध व्यक्ति का विवाहिक बंधन सुधारता है. बुध व्यक्ति का स्वभाव आनंदी बनाता है.

बुध स्मरणशक्ति को सक्रिय बनाने के कारण व्यक्ति को विनोदी तथा कुशाग्र बनाता है.

बुध के कारण ही व्यक्ति गोवंश के संवर्धन करने के लिए पूरी तरह से समर्पित रहता है. गरुड पुराण के अनुसार गाय माता ही हमें वैतरणी पार कर सकती है.

वृ-ा लग्न में बुध धनेश तथा पंचम त्रिकोण का मालिक बनता है. बौद्धिक प्रतिभा के कारण ही सभी को बहुत ही अधिक प्रिय होता है. सरकार तथा उच्च स्तर के लोगों से कार्य करवाना जानता है.

गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है. विवाहिक संबंध मध्यम रहता है. अपनी बुद्धि के कारण बहुत ही प्रगति करता है.

वेद के अनुसार गाय माता हमें मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती है.

मिथुन लग्न में बुध जन्म लग्न तथा चतुर्थ भाव का मालिक बनता है.

कर्क लग्न में बुध अशुभ भाव का मालिक बनता है. गाय माता गोलोक से मानव के कल्याण करने के लिये आयी है.

सिंह लग्न में बुध धन तथा 11 वे भाव का मालिक बनता है. कामधेनु हमारी सभी मनोकामनायें पूरी करती है.

कन्या लग्न का स्वामी बुध कर्मस्थान का मालिक बनता है. बुध उच्च का होने के कारण व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है. अपनी बुद्धि के माध्यम से अच्छा संचालन करता है.

प्रतिभा का धनी व्यक्ति अपनी स्त्री से हमेशा परेशान रहता है. गाय माता हमारे घर में सुख शांति और संपन्नता ला सकती है.

तुला लग्न में बुध भाग्य तथा व्ययस्थान का स्वामी बनता है. कांसे के बर्तन में दुहा गया धारोष्ण दूध रक्तपित्त को मिटाता है.

वृश्चिक लग्न में बुध आठवे तथा 11 वे भाव का स्वामी बनता है. गाय माता का दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, गोमूत्र, पंचगव्य पूरी तरह से सात्विक है.

धनु लग्न में बुध सातवे तथा कर्म भाव का स्वामी बनता है. बुद्धि के भ्रम, मन के भ्रम, जहर, दिमाग के असंतुलन को पूरी तरह से दूर करने के लिये पंचगव्य का सेवन प्रतिदिन करना अनिवार्य है.

मकर लग्न में बुध 6 वे तथा भाग्य भाव का स्वामी बनता है. बुधवार के दिन बुध ग्रह के खराब प्रभाव को समाप्त करने के लिये तरुणी गाय माता का धारोष्ण दूध मिटटी के बर्तन में पीना चाहिये.

कुंभ लग्न में बुध पंचम तथा आठमें भाव का स्वामी बनता है. बुधवार के दिन गोवंश का विधिवत पूजन करना चाहिए.

मीन लग्न में बुध चतुर्थ तथा सप्तम भाव का स्वामी बनता है. बुधवार के दिन हरी वस्तुएं मूंग हरा साग हरी घांस आदि गोवंश को अवश्य ही खिलाना चाहिए.

बुध धन भाव में रहने पर शुभ है. नंदी के विकास करने के लिए सरकारी सहायता मिलती है. महाकाल का आर्शीवाद व्यक्ति को मालामाल करता है.

व्यक्ति बहुत ही आदर्शवादी रहता है. गोवंश के प्रचार प्रसार करने के लिए कामधेनु साहित्य, सीडी, वेबसाइट आदि से धन मिलता है. साहित्य कला से सम्पन्नता बनी रहती है. वाणी में मधुरता के कारण दूसरे के ह्रदय को अपनी ओर आकर्-ित करता है. भा-ाण व्यापार से धन कमाता है.

बुध के खराब प्रभाव को नियंत्रित करने के लिये वर्तमान में भारत में व्रत, दान, जप, पूजन, हरे रंग के रत्नों का प्रयोग किया जाता है लेकिन बुध के खराब प्रभाव को रोकने में अनुकूल प्रभाव नहीं मिलने के कारण ही मानव को गाय माता के पूजन, व्रत, सेवा करने से ठोस लाभ मिल सकता है.

बुध यदि तीसरे भाव में रहता है तो शुभ है. नंदी के विकास करने के लिए सरकार को मार्गदर्शन करने पर धन मिलता है. कामधेनु के सम्मान जैसे अनेकों अच्छे कार्य कर बहुत सारे व्यक्तियों का शुभ करता है. अधिक समय भटकता हुआ समय व्यतीत करता है. मानसिक रुप से अशांत रहता है.

बुद्धि बहुत ही पैनी रहती है. कार्य हाथ में आया तो उसे पूरा करता है. हमें ऐलोपेथी में व्यर्थ धन गंवाने के बदले में सिर के संबंध में समस्या उत्पन्न होने पर उसका निदान करने के लिए हमें प्रतिदिन गोवंश का वेदमंत्रों के साथ में संपूर्ण पूजन अवश्य ही करना चाहिए.

बुध यदि चौथे भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के लिए मन बहुत ही कठोर रहता हे. गोवंश का भयंकर श्राप मिलता है. नंदी के विकास करने के लिए सरकारी सहयोग लेना चाहिए.

गोवंश के विकास करने के लिए परिवार तथा मित्रों का सहयोग बहुत ही कम प्राप्त होता है. ज्ञानी तथा विदवान होते हैं. संगीत नाच एवं अन्य कलाओं का शौकिन रहता है. आगे बढकर चुनौतियों को स्वीकार करता है.

बुध यदि पांचवे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. बहुत ही कम समय में चरम सीमा तक प्रगति करता है. संगठन के बल पर हर कार्य में प्रगति करता है. नंदी के संपूर्ण विकास करने पर महाकाल की कृपा बरसने लगती है. गोवंश का आर्शीवाद सदैव मिलता है.

पूर्व जन्म में गोवंश के आर्शीवाद के कारण मंत्र शास्त्र का ज्ञाता रहता है. विद्या का अभ्यास करने में होशियार बुद्धिमान विदवान यशस्वी रहता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए सफलता मिलती है. अच्छी संतान का सौभाग्य प्राप्त करता है. सेक्स संबंध में सदैव ही व्यस्त रहता है. मंत्री अथवा बडी कंपनी का मार्गदर्शक बनता है.

बुध यदि सातवे भाव में है तो अशुभ है. बुध के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए व्यक्ति को अग्निहोत्र 1 समय अवश्य ही करना चाहिए.

बुध के सातवे भाव में रहने पर मन अस्थिर रहने के कारण कोर्ट के दावे में परेशानी रहती है.

कामधेनु प्रमेहारी के सेवन करने पर सेक्स की कमजोरी दूर होती है. बुध के सातवे भाव में रहने के कारण व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ सेक्स संबंध में अधुरा रहता है. बुध व्यक्ति को नपुंसक बनाता है.

पत्नी धनी बुद्धिवान अधिक पढी हुई तथा अच्छे परिवार की रहती है.

बुध यदि आठवे भाव में है तो अशुभ है. बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए अग्निहोत्र कम से कम 1 साल तक करना आवश्यक है. 21 बुधवार मूंग का सेवन करना अनिवार्य है.

आठवा बुध व्यक्ति को कायरता का अवगुण विकसित कर पूरी तरह से डरपोक बना देता है. बुध नपुंसक ग्रह है. भैंस के दूध से बने पदार्थ सेवन नहीं करना है.

आठवा बुध बचपन में बीमारी देता है. कामधेनु बालपालरस का सेवन बीमारी दूर होने तक करना आवश्यक है. पूर्व जन्म के संचित कर्म इस जन्म में मानव को परेशान करते हैं.

व्यक्ति को गोवंश की सेवा तथा गोवंश के दान करने के कारण ही दीर्घायु बनाता है.

बुध यदि नवमें भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. पूर्व जन्म में मानव के द्वारा बहुत अधिक दान तथा परोपकार करने के कारण इस जन्म में मदद मिलती हे. सुनहरे अवसर मिलने के कारण प्रगति होती है. विश्व में कामधेनु के सम्मान करने के लिए अवसर मिलते हैं. गोवंश के संवर्धन करने के लिए तन, मन, धन से समर्पित रहता है.

व्यक्ति सदचरित्रवान ज्ञानी विदवान बनता है. आंतरिक प्रेरणाशक्ति से धन प्राप्त करता है. धन पत्नी पुत्र का सहयोग प्राप्त होता है.

गोवंश की निरन्तर सेवा करने के कारण ही उनका आर्शीवाद प्राप्त कर दीर्घायु रहता है तथा पिता भी दीर्घायु होते हैं.

बुध यदि दसवे भाव में रहता है तो बहुत ही अच्छा तथा शुभ है. व्यक्ति की यादशक्ति बहुत ही तीव्र होती है.

गोवंश की तन, मन एवं धन से बहुत ही समर्पित सेवा करने के कारण ही गोवंश के आर्शीवाद मिलने पर व्यक्ति सामुद्रिक विद्या पत्रकारिता भा-ण वाणी विलास प्रवचन विद्या मुद्रण पढाई अध्ययन आदि विविध व्यवसाय करता है तथा बहुत ही अच्छी आय प्राप्त करता है. सरकार स्वयं आर्थिक मदद करती है.

बुध यदि ग्यारहवे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. पूर्व जन्म में लोगों का कल्याण करता है. सुनहरे अवसर कम समय में उल्लेखनीय प्रगति करवाते हैं. ऐसा व्यक्ति गोवंश के संवर्धन करने के लिए सदैव ही तत्पर रहता है.

बुध व्यक्ति को गुणवान तथा बुद्धिमान बनाता है. व्यक्ति से सदैव ही पवित्र एवं मांगलिक कार्य करवाता है. गोवंश का दान करवाता है. अग्निहोत्र जीवन भर करवाता है.

व्यक्ति की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं. बुद्धियुक्त कार्य से सदैव ही प्राप्ति होती है.

बुध यदि बारहवे भाव में रहता है तो व्यक्ति को अशुभ प्रभाव देता है. बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गोवंश को बुधवार के दिन मूंग खिलाने चाहिए.

व्यक्ति दु-टचरित्रवान दयाहीन अस्वच्छ रहता है. माता पिता का तिरस्कार करता है. कुपो-ण के कारण रोग होते हैं.

बुध कन्या राशि में उच्च का होता है. बुध के मित्र ग्रह सूर्य शुक्र शनि हैं. गुरु राहू केतु सम ग्रह हैं. बुध की महादशा 17 साल की होती है. बुध की महादशा में बुद्धि का निरन्तर विकास होने के कारण ही वाणी में मधुरता आती है. व्यवहार में परिवर्तन होता है. मामा प्रिय मित्रों आदि से संबंध अच्छे होते हैं. धन सोना सुंदर वस्त्र विद्या प्राप्ति से मन में प्रसन्नता रहती है.

बुध हमेशा उसके साथ में बैठे ग्रह के अनुसार प्रभाव देता है. बुध मिथुन तथा कन्या राशि का स्वामी हैं. स्वग्रही बुद्ध हमेशा ही मानव को सही मार्ग पर पहुंचाता है. मानव का उद्धार होता है. बुद्धि के सभी महत्वपूर्ण कार्य से बहुत ही अच्छा धन देता है. बुध 1 माह तक एक राशि में रहता है.

जन्मकुंडली में बुद्ध ग्रह की स्थिति, बल, गोचर में बुध की स्थिति, बुद्ध की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यांतरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा आदि का सूक्ष्म विचार कर बुद्ध ग्रह के मानव पर खराब प्रभाव का सही अध्ययन करना संभव है.

मीन राशि में बुध नीच का होता है. व्यक्ति की बुद्धि बिगड़ने के कारण गोवंश के सर्वनाश करने के लिए तत्पर रहता है. कसाई की मदद करता है. कतलखाने चलाने के लिए पहल करता है. गोचर की भूमि हड़प कर धनवान बनता है.

चंद्र एवं मंगल ग्रह बुध के दुश्मन ग्रह हैं. बुद्धि बिगडने से वाणी में भी कडवापन आता है. व्यवहार में स्वार्थ रहने से बहुत नुकसान होता है.

कामधेनु गोग्रास के वेदमंत्रों के साथ में नियमित गोग्रास खिलाने पर मानव की हर मनोकामना की पूर्ति करती है. मिटटी के बर्तन में दुहा गया दूध कामशक्तिवर्धक, धातु को बढाने वाला, वायु तथा कफ को दूर करने वाला, बुद्धि को असाधारण तरह से बढाने वाला है.

12 राशियां, 9 ग्रह, 27 नक्षत्र

मानव 9 ग्रहों के तीव्र प्रभाव के कारण ही जीवन में निरन्तर बीमार पडता है.

बुध ग्रह के गोचर में कमजोर होने पर तीव्र प्रभाव के कारण ही मन में भ्रम, बुद्धि के भ्रम के कारण अपशब्द बोलना, नेत्ररोग, गले के रोग, नाक में रोग, वात, पित्त तथा कफ के त्रिदोष के कारण बुखार, जहर के कारण बीमारी, चर्म रोग, कामला, खुजली, आग में गिरने का भय, अतिश्रम के काम से भय, गंधर्व से उत्पन्न रोग प्रमुख हैं. पूर्वकाल में एक सुयोग्य चिकित्सक के लिये ज्योतिष विषय का ज्ञाता होना अनिवार्य था.

मांसाहार, नशीली वस्तुओं का सेवन करना, भैंस, वर्णसंकर हिंसक एवं तामसिक जानवरों का दूध बुद्धि को मंद करता है.

पंचगव्य तथा महापंचगव्य महो-धियां ही उपयोग में लानी चाहिए. हवन हर दिन नियमित करना चाहिए.

गुरु

गुरु ग्रह ब्राहमण जाति, सात्विक स्वभाव, पुरुष ग्रह है. गुरु का अंक 3 है. गुरु ग्रह सत्युग का माना गया है.

दूसरे भाव में यदि गुरु है तो शुभ है. नंदी के लिए समर्पित रहने के कारण महाकाल की अदभुत कृपा बरसती है. पूर्व आभास होने के कारण सदैव ही सावधान रहता है. अदभुत स्मरणशक्ति बनी रहती है.

दिव्य मानव लोगों के लिए आदर्श बनता है. लोग उसके कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं. अपनी आवश्यकताओं में निरन्तर कमी करता है.

जीवन भर समर्पित होकर गोवंश की सेवा करता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए पूरा सहयोग देता है. गोवंश का दान अग्निहोत्री वेदपाठी ब्राहमणों को करता है. गोवंश तथा ब्राहमणों के आर्शीवाद के कारण परम तेजस्वी, सक्रिय तथा सर्वत्र विजयी रहता है.

गुरु दूसरे भाव का कारक है. व्यक्ति बुद्धिवान होता है. ज्योतिष विद्या में रुचि होने के कारण भवि-य का ज्ञानी होता है. संतो-ी होता है तथा सदैव ही आनन्द में रहता है. नेत्र चमकदार एवं प्रभावशाली होते हैं.

गोवंश के कार्य कर मान सम्मान प्रति-ठा परिवार का सहयोग प्राप्त करता है. उत्तम पत्नी प्राप्त होती है. धन की कमी रहती है.

गुरु यदि तीसरे भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के प्रति कठोर भावना रहती है. गोवंश का चारा हड़पना, गोचर की भूमि पर अवैध कब्जा करना, गोवंश को अपना झूठा तथा बासी खिलाना आदि गंदे कार्य कर गोवंश के अपराध करने के कारण गोवंश का श्राप मिलता है. गोवंश के प्रायश्चित करने के लिए गोवंश का दान करना है.

धन की कमी हमेशा ही रहती है. मित्रों तथा रिश्तेदारों का सहयोग नहीं प्राप्त होता है. संतानों के प्रति अभाव रहता है. आशावादी तत्वज्ञानी आध्यात्मिक अपनी रीतभात अशि-ट सौजन्यरहित होता है.

गुरु यदि चौथे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. नंदी के विकास करने के लिए धन, संपत्ति मिलती है. विश्व में अपनी प्रतिभा के बल पर अनेको पुरुस्कार प्राप्त करता हे.

परिवार का नेतृत्व करता है. संगठित होकर समाज के लिए उदाहरण बनता है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण प्रगति करता है. गोवंश की सेवा करने के कारण व्यक्ति धनवान अच्छा वक्ता यशस्वी अपना मकान वाहन रहता है.

माता के साथ में बहुत ही आनन्द के साथ में रहता है. पत्नी पुत्र का आनन्द रहता है. हर तरह का आनन्द प्राप्त करता है. आध्यात्मिक प्रगति करता है.

गुरु यदि पांचवे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. समाज के लिए ऐसा व्यक्ति हमेशा अच्छा नेतृत्व प्रदान करता है. पूर्व जन्म में महाकाल की असीम कृपा से अच्छे कार्यों के कारण ही गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित रहता है.

गोवंश के विकास करने के लिए सरकार से तथा विश्व से हर प्रकार की मदद प्राप्त करता है.

पांचवे भाव का कारक गुरु है. उत्तम विद्या बुद्धि तर्कशास्त्र मन्त्रशास्त्र कानून का ज्ञान का आनन्द प्राप्त करता है. सरकार का मार्गदर्शक बनता है. धन वैभव का आनन्द प्राप्त करता है. संतान की कमी रहती है तथा संतान की परेशानी बनी रहती है.

गुरु यदि सातवे भाव में रहता हे तो बहुत ही शुभ है. असाधारण प्रतिभा तथा तेजस्वी व्यक्तित्व के बल पर विश्व में अपना विशे-ा स्थान बनाता है.

गोमाता की सेवा करने के कारण बहुत ही ठाठ बाठ आनन्द के साथ में रहता है. गोदान करने के कारण समाज में श्रद्धा का पात्र रहता है.

विदेश से फायदा होता है. भागीदारी में कमी रहती है. स्वास्थय अच्छा रहता है. वैवाहिक संबंध निश्चित नहीं है. देर या शीघ्र वैवाहिक संबंध हो सकता है. यश बहुत ही अधिक प्राप्त करता है. अन्तरा-ट्रीय कीर्ति प्राप्त करता है.

गुरु यदि आठवे भाव में रहता है तो शुभ है. समाज के लिए ऐसा व्यक्ति अपने कर्मों से प्रभावित करता है. समाज को सदैव दिशा देता है.

गोवंश के ब्राहमणों को दान करने के कारण व्यक्ति दीर्घायु रहता है. टीबी के कारण मौत का भय रहता है. कफ का रोग होता है. योग का अभ्यास करता है.

गोवंश के आर्शीवाद के कारण अचानक धन प्राप्ति पैतक सम्पत्ति प्राप्त होती है. पंचगव्य एवं महापंचगव्य महो-धियों का ही सेवन बीमारियों से बचने के लिए नियमित करना चाहिए.

गुरु यदि नवमें भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए जीवन में संगठित प्रयत्न करता है. सरकार से हर प्रकार की सहायता मिलती है.

नवमें भाव का कारक गुरु है. व्यक्ति भाग्यवान किर्तीवान विदवान होता है. युवा अवस्था में भाग्य का उदय होता है. पद एवं अधिकार प्राप्त करता है. बहुत अधिक धन प्राप्त करता है. अपने कार्य में व्यस्त रहता है.

गुरु यदि दसमें भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. नंदी के विकास करने के लिए सरकारी सहायता मिलती है. गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित रहता है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण प्रगति करता है. व्यक्ति किर्ती यश प्राप्त करता है. पढाई अध्ययन न्याय सराफा से अपनी आय प्राप्त करता है. नीति के साथ में व्यापार करता है.

गुरु यदि ग्यारहवे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. उदारता के साथ मदद करने के लिए सदैव ही तत्पर रहता है. देवहंडा मिलता है. नंदी के विकास करने के कारण महाकाल का आर्शीवाद मिलता है.

समाज के लिए ऐसा व्यक्ति आदर्श होता है. उसके कार्यों से लोगों को प्रेरणा मिलती है. उसके नेतृत्व में लोग संगठित होकर गौरव के साथ में कार्य करते हैं.

गोवंश के संवर्धन करने के कारण उनके आर्शीवाद प्राप्त होने पर देवत्व के गुण विकसित होते हैं. गोवंश के दान करने के कारण जीवन सार्थक होता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए व्यक्ति तत्पर रहता है. जरुरत पड़ने पर अपने प्राणों की बाजी लगा देता है.

दैवी मदद मिलने के कारण असाधारण प्रगति करता है. ग्यारहवे भाव का कारक गुरु है. गुणवान तथा विद्यावान व्यक्ति को उत्तम सम्पत्ति एवं अच्छी संतान प्राप्त होती है. कर्म के कारण किर्ती प्राप्त करता है. व्यक्ति दीर्घायु होता है.

गुरु यदि बारहवे भाव में रहता है तो बहुत ही अशुभ है. समाज के लिए ऐसा व्यक्ति बहुत ही अधिक धातक है.

मगरमच्छ के आंसू बहाकर लोगों की सहानुभूति बटोरता है. वाणी में मिठास, व्यवहार में दिखावा, भ्रम झूठ तथा माया उत्पन्न करता है.

गोवंश के पतन का मुख्य कारक बनता है. अपने स्वार्थ के लिए सदैव ही दूसरों का धन हड़पने के लिए तत्पर रहता है.

ऐसे व्यक्ति का विरोध करना आवश्यक है. धरती पर ऐसा व्यक्ति बोझ है. मन से बहुत ही अधिक कठोर होता है.

बहुत ही कंजूस होता है. जीवन में कभी किसी की मदद करना पसंद नहीं करता है.

असंस्कृत कामचोर भ्र-ट रिश्वत ग्रहण करने में होशियार नीच कर्म करता है. अनेक के साथ में शत्रुता करता है. बडे व्यय करने आवश्यक है. धर्म का विचार परिवर्तित होते हैं.

गुरु मे-ा लग्न में 9 वे भाव तथा 12 वे भाव का स्वामी बनता है. 12 वा भाव व्यय तथा नुकसान कारक है.

9 वा भाव भाग्य तप धर्म अच्छे कार्य का है. मंगल के घर में गुरु उमदा भाग्य देता है. उमदा भाग्य के कारण ही गोवंश की संस्थाओं को गोवंश के संवर्धन करने सरकारी मदद प्राप्त करवाता है. गुरु अच्छे कार्य करने दिव्यात्मा को दीर्घायु प्रदान करता है.

गुरु की पांचवी दृ-ट पुत्र स्थान पर अधिक संतानों का योग बनाती है. अधिक संताने पिता को गोवंश के पवित्र कार्य में हर प्रकार से भरपूर सहयोग करती है. पूर्व योनि में किये गये पुण्यों के कारण ही व्यक्ति को देवत्व रुपी गोवंश की भक्ति करने प्रेरित करता है.

गुरु की 9 वी दृ-ट गुरु को स्वग्रही बनाकर व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है. गोवंश संवर्धन करने बहुत ही अधिक मदद भी चारों ओर से प्राप्त होती है. धनी व्यक्तियों से गोवंश संवर्धन करने धन की व-ार्ा होती है. गुरु व्यक्ति को बहुत ही अधिक परोपकारी तथा धार्मिक बनाता है तथा व्यक्ति गोसेवा कार्य में चरम सीमा तक पहुंचता है.

वृ-ा लग्न में गुरु आठवे तथा 11 वे भाव का स्वामी बनता है.

आठवा भाव आयु का कारक है. गुरु के कारण ही गोवंश के संवर्धन आदि अच्छे कार्य करने व्यक्ति की आयु में निरन्तर बढोत्तरी होती है.

11 वा भाव व्यक्ति को मित्रों से फायदा होने से आय में बढोत्तरी होती है.

मिथुन लग्न में गुरु को केंद्राधिपति का दो-ा है.

कर्क लग्न में गुरु 6 वे तथा भाग्य भाव का स्वामी बनता है.

सिंह लग्न में गुरु पंचम तथा आठवे भाव का स्वामी है.

कन्या लग्न में गुरु 4 था तथा सातवे भाव का स्वामी है.

सातवा भाव व्यक्ति को भावुकता के कारण बहुत अच्छे कार्य करने प्रेरित करता है.

4 था भाव व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्व का है.

कन्या लग्न में गुरु क्रांतिकारी परिवर्तन करने गोपा-टमी पर्व पर विश्व गो कार्यक्रम गोकथा कामधेनु महोत्सव आदि भव्य कार्यक्रम बार बार करवाकर व्यक्ति को उसके उत्साह में बढोत्तरी करने सरकार से अपार सम्मान तथा किर्ती देता है.

तुला लग्न में गुरु तीसरे तथा 6 ठे भाव का स्वामी है.

6 ठवा भाव व्यक्ति के जीवन में निर्णायक भूमिका निभाता है. 6 ठवा भाव मौसा रोग शत्रु परेशानी कोर्ट कचहरी बाधा से संबंधित है.

तीसरा भाव भाई बहिन कान स्वर वस्त्र अच्छे भू-ाण पराक्रम का है.

वृश्चिक लग्न में गुरु 2 रे तथा पांचवे भाव का स्वामी है.

दूसरा भाव मुंह आहार धन वाणी परिवार दाहिने नेत्र का है.

पांचवा भाव देवता की भक्ति प्यार संबंध बुद्धि विद्या पुत्र सटटा पितर भवि-य का ज्ञान कर पूर्व योनि में किया गया पुण्य स्मरणशक्ति यात्रा धार्मिकता प्रकाशन कविता गर्भ प्रसूति के बारे में बताता है.

धनु लग्न में गुरु लग्नेश तथा 4 थे का स्वामी बनता है.

मकर लग्न में गुरु व्यय भाव का स्वामी बनता है.

कुंभ लग्न में गुरु धन तथा 11 वे भाव का स्वामी है.

मीन लग्न में गुरु लग्न तथा कर्म भाव का स्वामी है. गुरुवार के दिन गुरु ग्रह के खराब प्रभाव को पूरी तरह से समाप्त करने के लिये हमेशा ही सोने के बर्तन में पीले रंग की गाय माता का धारोष्ण दूध पीना चाहिये.

गुरु 1 व-र्ा 1 माह तक 1 राशि में रहता है. गुरु के कारण ही मानव में उदारता रहती है. गोवंश संवर्धन करने के हेतु ही दान करता है. गुरु प्रधान व्यक्ति सात्विक परिवर्तन करने हमेशा ही तैयार रहते हैं. गुरु धर्म का कारक है. गुरु के कारण यज्ञ कर मानव गोवंश संवर्धन आदि सभी धार्मिक कार्य सम्पन्न करता है. गुरु विद्या का कारक है. उच्च डिग्री गुरु के कारण प्राप्त होती है. गुरु हमेशा ही सकारात्मक सोच देता है. गुरु मानव को देवत्व की ओर प्रेरित करता है.

गुरु ग्रह के बारे में विस्तार से विचार करने के लिये जन्मकुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति, गुरु की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यांतरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा आदि पर सूक्ष्म गणना करने की आवश्यकता है. धनु एवं मीन राशि में गुरु स्वग्रही है. गुरु की उच्च राशि कर्क तथा नीच राशि मकर है. गुरु 28 से 30 व-र्ा का युवान है. गुरु पवित्र एवं शुभ ग्रह है. गुरु हमेशा ही अपने स्थान से पांचवी सातवी तथा नवमी अच्छी द-टि से प्रभावित करता है. वर्तमान समय में गुरु का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है.

गुरु की महादशा 16 साल की होती है. गुरु की महादशा सिर्फ एक बार ही उसकी संपूर्ण आयु में होती है. गुरु की महादशा में मानव को हमेशा बहुत सारे आनन्द प्राप्त होते हैं.

गुरु अग्नितत्व का कारक है.

गुरु को बहुत सारे नामों से पहचाना गया है. प्रशान्त इन्द्रमंत्री सूरि ब्रहस्पति सुरगुरु वाकपति मंत्री अंगिरासुनु सूरेय देवपूजय देवेजय त्रिदेवेश जीव आदि गुरु के नाम हैं.

गुरु नितंब पिताशय यकत कान नसें जांघे आदि पर अपना प्रभाव छोडता है. गोग्रास में संपूर्ण भोजन गरम गरम बनाकर थाली में परोसकर प्रतिदिन मानव को अपने हाथ से बहुत ही प्रेम से भारतीय गोवंश को सर्वप्रथम खिलाना चाहिये.

गुरु ग्रह के गोचर में कमजोर होने के कारण मानव के अंदर त्वचा के रोग जलोदर यकत के रोग वात रोग पाचन रोग हर्निया गर्दन के रोग कफ पेट में गुमडा, रसोली, आंतों में बुखार, मूर्छा, कान के रोग, देवस्थान के कारण कोर्ट की समस्या, ब्राहमण के श्राप से कष्ट, खजाना, ट्रस्ट या बैंक के कारण अदालत की परेशानी, अपने गुरु, बडों, मां, पिता के साथ अभद्र व्यवहार करने के कारण मानसिक परेशानी, यक्ष, किन्नर, देवता, सर्प के कारण परेशानी उत्पन्न होती है.

गुरु के साथ गोवंश का बहुत ही गहरा संबंध है. गुरु ग्रह के प्रभाव को संतुलित रखने के लिए गोवंश का पूजन वेदमंत्रों के साथ में करना चाहिए. गुरुवार के दिन पीले चावल, चने की दाल की वस्तुएं गोवंश को खिलानी चाहिए. गुरु धनु तथा मीन राशि के स्वामी हैं. गुरु देवत्व में वृद्धि करते हैं. गुरु के कारण देवी लक्ष्मी प्राप्त होती है. गुरु के कारण असुरत्व से लड़ने में मदद मिलती है. गुरु के कारण बुद्धि का विकास होता है.

गुरुवार के दिन गोमाता का दूध पीकर उपवास करना आवश्यक है.

अग्निहोत्र एवं हवन अवश्य ही करना चाहिए. गुरु निरन्तर पीले रंग की तरंगे मानव पर छोडता है. वर्तमान समय में गुरु के खराब प्रभाव को रोकने के लिये भारत में गुरु का व्रत, पीली वस्तुओं का दान करना, जप करना, पूजा करना, पीले रंग के रत्नों को धारण करने का चलन है लेकिन रत्नों को धारण करने पर अनुकूल परिणाम नहीं मिलने से मानव को गाय माता के दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, गोमूत्र, पंचगव्य के सेवन पर ध्यान देना चाहिये.

हवन हर दिन अवश्य ही करना चाहिए.

वर्णसंकर जानवर एवं भैंस हिंसक एवं तामसिक होने के कारण ही उनका दूध, दूध से बनी सभी वस्तुओं का सेवन पूरी तरह से बंद करना अनिवार्य है. पीले रंग की गाय माता न मिलने पर दूसरे रंग की गाय माता का दूध प्रयोग करें. सोने का बर्तन न मिलने पर सोने का सिक्का या सोने का तार या सोने की पालिश कर टुकडा दूध में डूबा देना चाहिये.

शुक्र

शुक्र ग्रह ब्राहमण जाति, राजस स्वभाव, लक्ष्मी का प्रतीक, स्त्री लक्षण वाला है. शुक्र का अंक 6 है. धरती से शुक्र की दूरी 424028 योजन है. इतना दूर होने के बाद भी मानव पर बहुत ही तीव्र प्रभाव पडता है. बुध शनि एवं राहू शुक्र के मित्र ग्रह हैं.

शुक्र की महादशा 20 साल की होती है. बचपन में यदि शुक्र की महादशा प्रारम्भ होती है तो मनोरंजन करने नये नये साधन प्राप्त होते हैं. किशोर आयु में शुक्र की महादशा में मानव को सुंदर स्त्री धन प्राप्त होता है. 40 के बाद में महादशा में अच्छा स्वास्थय प्राप्त होने पर भौतिक आनन्द प्राप्त होता है. यह महादशा मानव जीवन में एक बार ही संभव है.

शुक्र धन एवं संपत्ति के साथ साथ औ-ाधियों, मंत्रों, रसों, के स्वामी हैं. योग के आचार्य हैं तथा मृत संजीवनी विद्या के जानकार हैं. लोकों के लिए अनुकूल ग्रह हैं. लोक ओर परलोक की सम्पत्ति के स्वामी होने के कारण प्रसन्न होने पर मालामाल कर देता है.

वर्तमान समय में भौतिकता यानी धन एवं सम्पत्ति के साथ में भोग विलास यानी काम वासना की पूर्ति करने में शुक्र सबसे महत्वपूर्ण ग्रह बन गया है. वर्तमान समय में बढते हुए शुक्र के प्रभाव के कारण ही मानव के द्वारा तप, त्याग और आध्यात्म के बदले भौतिकवाद, भोगविलास, मनोरंजन, विपरीत सेक्स से गलत संबंध पर भारत में बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है.

मे-ा लग्न में शुक्र मे-ा लग्न के स्वामी मंगल का मित्र नहीं समान गुण के है. वैवाहिक संबंध में शुक्र की दि-ट स्वग्रही होने के कारण बहुत ही अच्छी है. व्यक्ति आनंदित एवं शौकिन स्वभाव का होता है. वैभव विलास का उपभोग करता है. बहुत ही सुंदर देह प्राप्त करता है. कफ प्रकति का है तथा सौंदर्य की चाहना करता है. चेहरा प्रकाशवान एवं कांतिवान रहता है. कामधेनु सेवा कर व्यक्ति दिव्य सहायता प्राप्त करता है.

वृ-ा लग्न में शुक्र स्वामी है. स्वग्रही होने के कारण ही व्यक्ति का सुंदर देह तथा प्रकाशवान एवं कांतिवान चेहरा एवं नेत्र रहते है. बहुत ही आसानी से मनमोहक वाणी एवं व्यवहार के कारण विपरीत सेक्स के सभी व्यक्तियों को मोहित करता है. स्वभाव बहुत ही वैभव एवं भौतिकता के विचार से उत्तम है. वैवाहिक संबंध में व्यक्ति पूर्ण आनन्द प्राप्त करता है.

मिथुन लग्न में शुक्र दवादश तथा त्रिकोण का स्वामी बनता है.

कर्क लग्न में शुक्र चंद्र का शत्रु है.

सिंह लग्न में शुक्र तीसरे तथा एकादश भाव का स्वामी है. सूर्य शुक्र का शत्रु है.

कन्या लग्न में शुक्र धन भाव तथा भाग्य भाव का स्वामी है. भोग एवं भौतिकता शुक्र बहुत ही देर से व्यक्ति को देता है. कन्या राशि में शुक्र नीच का होता है.

तुला लग्न में शुक्र लग्न का स्वामी है. तुला लग्न में होने पर स्वग्रही कहा गया है. स्वग्रही शुक्र बहुत ही अच्छा है.

वृश्चिक लग्न में शुक्र सातवे तथा व्यय भाव का स्वामी है. वृश्चिक लग्न का स्वामी मंगल शुक्र का मित्र नहीं है.

धनु लग्न में शुक्र शत्रु भाव एवं 11 वे भाव का स्वामी है.धनु लग्न के स्वामी गुरु का शत्रु है. गोमाता का दान करने पर भी ग्रह बाधा पूरी तरह से दूर हो जाती है.

मकर लग्न में शुक्र पंचम तथा कर्म भाव का स्वामी है. शुक्र मकर लग्न के स्वामी शनि के मित्र हैं. गोवंश को चावल की खीर, सुगंधित पदार्थ को अवश्य ही खिलाना चाहिए.

कुंभ लग्न में शुक्र चतुर्थ तथा भाग्य भाव के स्वामी हैं. कुंभ लग्न के स्वामी शनि के मित्र हैं. अपने निवास में गोवंश को रखना आवश्यक है.

मीन लग्न में शुक्र तीसरे तथा आठवे भाव का स्वामी है. मीन राशि में शुक्र उच्च्व का होता है. गोवंश सफेद रंग के पूजन करने के लिए वैदिक मंत्रों के साथ में करने आवश्यक है.

शुक्र यदि दूसरे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. पूर्व जन्म में बहुत ही अधिक दान करता है. पूर्व जन्म के अच्छे कार्य व्यक्ति को संस्कारवान बनाते हैं. ऐसा व्यक्ति जीवन भर कामधेनु की बहुत ही लगन के साथ में सेवा करता है.

बहुत ही कम समय में चरम सीमा तक प्रगति करता हे. आध्यात्मिक रहने के कारण निरन्तर उत्थान होता है. अपनी आवश्यकताएं कम करता है. यौवन का उपयोग लोगों के भले के लिए करता है.

कामधेनु के आर्शीवाद के कारण ही व्यक्ति अपनी मधुर वाणी सुंदर नेत्रों सुंदर चेहरा मनमोहक व्यवहार के कारण ही व्यक्ति आनंदित वैवाहिक संबंध व्यतीत करता है तथा धन से हर प्रकार के भौतिक आनन्द को प्राप्त करता है.

अपने जीवन में गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को करता है. बहुत अधिक धन सम्पत्ति स्वादि-ट मीठा वस्त्र गहने प्राप्त करता है.

शुक्र यदि तीसरे भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के भयंकर श्राप के कारण ही व्यक्ति का जीवन बरबाद होता है. नाच गाने गीत संगीत का शौक रहता है. शक्ति तथा वीर्यहीन होने के कारण बीमार रहने के कारण ही वैवाहिक संबंध परेशानी भरा रहता है तथा पत्नी से दबकर रहना पडता है.

वर्तमान समय में जप, पूजन, दान, सफेद रत्नों को धारण कर शुक्र के गलत प्रभाव को कम करने के प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन रत्नों से सफलता नहीं मिलने के कारण ही मानव गाय माता के चमत्कार से प्रभावित होकर गोसेवा में लग गया है.

शुक्र यदि चौथे भाव में रहता है तो शुभ है. कामधेनु की सेवा कर बहुत ही सुखी रहता है. अपार दान कर ब्राहमणों को आनन्दित करता है.

माता के साथ अच्छा निभाता है. संगीत नाच विविध कलाओं के साथ में आनन्द में रहता है. यश मान सम्मान किर्ती सुंदर भोग के साधन प्राप्त कर पूर्ण आनन्द वैभव के साथ अपनी हर इच्छा की पूर्ति करता है. व्यक्ति को उसकी पत्नी से दबकर रहना पडता है.

शुक्र यदि पांचवे भाव में रहता है तो शुभ है. पूर्व जन्म का संचित कर्म मदद करता है. परोपकार की भावना के साथ में कामधेनु की साधना कर दिव्य एवं अलौकिक क्षमताएं प्राप्त करता है. जीवन में अभाव नहीं रहता है.

व्यक्ति बहुत ही शौकिन तबीयत का होता है तथा शत्रु पर हावी रहता है तथा धर्मात्मा होता है. काव्य में व्यक्ति निपुर्ण होता है. सरकार का प्रिय बनता है. वाहन का आनन्द प्राप्त होता है. कन्या संतति अधिक होती हैं. सुंदर संतानें होती हैं.

शुक्र यदि सातवे भाव में रहता है तो बहुत ही शुभ है. गोवंश के आर्शीवाद से बहुत अधिक उर्जावान होता है. ऐसा व्यक्ति गोवंश के लिए बहुत ही अधिक समर्पित रहता है. नंदी के संपूर्ण विकास करने के लिए सदैव सक्रिय रहता है.

सातवे भाव का कारक शुक्र है. व्यक्ति अपनी सुंदर समझदार विवेकी आज्ञाकारी सेक्सी पत्नी के साथ में वैवाहिक संबंध चरम आनन्द के साथ में व्यतीत करता है. कामवासना के अति आवेग के कारण विपरीत सेक्स की स्त्री से अनैतिक संबंध बांधता है.

शुक्र यदि आठवे भाव में रहता है तो शुभ है. पूर्व जन्म में भी अच्छे कर्म करता है. कामधेनु की सेवा कर अपनी अंतिम आयु आनन्द के साथ में व्यतीत करता है. ससुर के घर से व्यक्ति को अपार सहयोग प्राप्त होता है. बहत्तर व-र्ा की आयु के बाद में मरता है.

शुक्र यदि नवमें भाव में रहता है तो शुभ है. अपने पूर्व जन्म में बहुत उत्तम गोवंश का दान करता है. वर्तमान जीवन में अच्छे संस्कारों के कारण बहुत ही दान कर भगवान कृ-ण का आर्शीवाद प्राप्त करता है.

गोवंश के लिए समर्पित रहकर व्यक्ति विद्यावान तथा कीर्तिवान बनता है. उत्तम संतान की प्राप्त होती है. हर प्रकार का भौतिक आनन्द प्राप्त करता है. सरकार से बडे फायदे प्राप्त कर धनवान बनता है तथा व्यक्ति यात्रा करने का बहुत ही शौकिन होता है.

शुक्र यदि दसवे भाव में रहता है तो शुभ है. कामधेनु की साधना कर अपने सभी मनोरथ पूरे करता है. दैवी सहायता से अलौकिक सिद्धियां प्राप्त करता है. ब्राहमणों को अदभुत दान करता है. जीवन भर मानवता के उत्थान करने के लिए तत्पर रहता है. कीर्ति मान एवं सम्मान यश मकान धन सम्पत्ति वस्त्र गहने भोग शौक की सभी सामग्री प्राप्त करता है.

शुक्र यदि ग्यारहवे भाव में रहता है तो शुभ है. गोवंश के लिए विशे-ा लगाव रहने के कारण सदैव ही सक्रिय रुप से कामधेनु महोत्सव मनाने के लिए भव्य तैयारियां करता है. उच्च पद पर मौजूद लोगों के साथ में मिलकर दिव्य वातावरण में उच्च साधना से आध्यात्मिक प्रगति करता है.

अपार धन एवं सम्पत्ति रहने के कारण ही मित्रता बहुत अधिक होती है. सुंदर वस्तुओं को संग्रह करता है.

काम वासना के तीव्र आवेग के कारण विपरीत सेक्स से मित्रता करता है तथा व्यक्ति अपने रंगीन एवं आनन्दी स्वभाव के कारण दूसरों की पत्नियों के साथ में रोमांस करता है.

शुक्र यदि बारहवे भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के भयंकर श्राप के कारण व्यक्ति बचपन में रोगी होता है. युवा अवस्था में व्यक्ति कामी होता है. प्रणय भोग मनोरंजन आनन्द भौतिकता सुविधाओं एवं रोमांस पर बहुत ही अधिक व्यय करता है.

शुक्र धन एवं सम्पत्ति देता है. पत्नी स्थान पर तुला तथा वृ-ा राशि में शुक्र होने पर सुंदर एवं अच्छी पत्नी प्राप्त होने पर वैवाहिक जीवन में बहुत ही अच्छा परिणाम प्राप्त होता है.

एक राशि में 30 दिनों तक शुक्र भ्रमण करता है. पच्चीस व-र्ा में भाग्योदय शुक्र के माध्यम से होता है. शुक्र के द्वारा सफेद रंग की तरंगे निरन्तर मानव पर छोडी जाती हैं.

शुक्र के गोचर में कमजोर होने पर मानव को कामुक, क्रोधी, हिंसक, मानसिक रुप से पूरी तरह से असंतुलित बना देता है जिसके कारण मानव में रक्त की कमी के कारण पांडु रोग, कफ या वायु के दोष के कारण नेत्ररोग, मूत्ररोग, मधुप्रमेह, जन्नेद्रिय रोग, प्रोस्टेट ग्रंथि के रोग, वीर्य की कमी, वीर्य का पतलापन, संभोग में कमजोरी, संभोग की अधिकता के कारण कमजोरी, नपुंसकता जैसी बीमारियां बहुत अधिक हो रही है. हमारे वेदों में भी गोवंश को सबसे अधिक महत्व दिया गया है. कामधेनु की सच्चे मन से निरन्तर सेवा करने पर मानव को मालामाल कर देती है.

इस ग्रह को प्रसन्न करने के लिए नंदी का दान अवश्य ही करना चाहिए. गोपूजन करने पर ग्रह की शांति होती है. गाय के दही, घी का दान अवश्य ही योग्य ब्राहमण को करना चाहिए.

कलियुग में लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये भारत में वर्तमान में बहुत सारे लोगों के द्वारा शुक्रवार को व्रत रखा जाता है. गाय को महालक्ष्मी कहा गया है. गाय माता के गोबर में आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ प्रकार के ऐश्वर्यों के साथ निवास करती है.

इन बीमारियों को पूरी तरह से दूर करने के लिये गाय माता का दूध, दही, छाछ, पंचगव्य का नियमित सेवन करना चाहिये. शुक्रवार को आपको सफेद रंग की गाय माता का धारोष्ण दूध चीनी मिटटी के बर्तन में पीना चाहिये. हवन हर दिन नियमित करना चाहिए. हवन करने पर वातावरण पूरी तरह से पवित्र होता है तथा मन भी एकाग्र हो जाता है.

शनि

शनि ग्रह शुद्र जाति, तामसिक स्वभाव, यम का भाई, लंगडा कर धीमे धीमे चलने वाला, विराट पुरु-ा के रोम छिद्रों में निवास करने वाला तथा वक्री देखता है. काली गो के दूध, घी तथा काली गो का दान करने से शनि हमेशा प्रसन्न रहता है.

शनि को क्रूर ग्रह माना गया है. काले रंग की गोमाता को काले तिल, उड़द, काले चने, तिल का तेल, काले गुड़ से वस्तुएं तैयार कर खिलाना चाहिए.

पाप ग्रह शनि शिशिर ऋतु का स्वामी है. दूध, दही, गोबर के रस, गोमूत्र, घी से तैयार पंचगव्य एवं महापंचगव्य दवाओं का उपयोग ही करना चाहिए.

शनि न्याय का देवता है इसलिए मानव को उसके संचित कर्म के अनुसार ही उसका फल देता है.

कुंडली में अपने से 3, 7, 10 वे स्थान को शनि देखता है.

सूर्य के पुत्र होने के कारण ही हमेशा भगवान श्री कृ-ण का ध्यान करता रहता है.

शनि मे-ा राशि में नीच का होता है. मे-ा लग्न में शनि कर्मस्थान तथा लाभस्थान का स्वामी है. मे-ा लग्न में नीलम धारण करना अच्छा नहीं है. मे-ा लग्न में शनि नीच का होता है. मानव का स्वभाव अपनी स्वतंत्र सोच नहीं होने के कारण ही दूसरों का अनुकरण करने का होता है. आत्मविश्वास प्रबल होता है. मानव बहुत ही शांत धीर गंभीर होता है. प्रगति धीमी होती है. अपनी आदत के कारण ही हाथ में आये अवसर को गवा देता है.

वृ-ा लग्न में शनि अशुभ है. भाग्य तथा कर्मस्थान का स्वामी है. व्यक्ति का रंग श्याम रहता है तथा समय से पूर्व बुढापा आता है एवं पराक्रम में कमी आती है. भाई बहिन के सहयोग में कमी रहती है. भागीदारी में परेशानी विवाह में परेशानी मेहनत अधिक करवाकर फायदा देता है.

मिथुन लग्न में शनि अ-टम तथा भाग्य भाव का स्वामी है.

कर्क लग्न में शनि सातवे तथा आठवे भाव का स्वामी है.

सिंह लग्न में शनि 6ठवे तथा सप्तम भाव का स्वामी है.

कन्या लग्न में शनि पांचवे भाव तथा 6ठवे भाव का स्वामी है. व्यक्ति को निरन्तर परेशानी में फसा देता है. यांत्रिक कार्य में आगे बढाता है.

तुला लग्न में शनि 4 थे तथा पांचवे भाव का स्वामी है. तुला में शनि उच्च का होता है.

वृश्चिक लग्न में शनि 3सरे तथा 4थे भाव का स्वामी है.

धनु लग्न में शनि दूसरे स्थान का स्वामी है.

मकर लग्न में शनि लग्नेश तथा धनेश बनता है.

कुंभ लग्न में शनि लग्नेश तथा 12 वे भाव का स्वामी बनता है.

मीन लग्न में शनि लाभेश तथा व्ययेश बनता है.

शनि धन भाव में रहने पर अशुभ है. लोगों से धोखा खाकर दंड भोगना पड़ता है.

गोवंश के श्राप के कारण जीवन भर गलत आरोपों से घिरा रहने के कारण ही परेशान रहता है. भ्रम में जीवन भर रहता है. लक्ष्यहीन रहने के कारण समाज में हंसी का पात्र बनता है. गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए लगा रहकर प्रायश्चित करना संभव है.

देर से शनि धन देता है. शनि कसौटी करता है. व्यक्ति को अक्सर आयु के प्रारम्भ में धन की कमी के कारण बहुत ही अधिक परेशानी में रहना पडता है. अवसर चुकने पर नुकसान होता है. व्यक्ति की वाणी बहुत ही कर्कश होती है. परिवार का सहयोग नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहती है.

शनि यदि तीसरे भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश का अपराध करने के कारण ही गोवंश का श्राप बरबाद करता है.

रिश्तेदारों का सहयोग नहीं देता है. बहुत सारी यात्राएं करवाता है. भाइयों का सहयोग कम रहता है. शून्य में से छोटी पदवी में से बडी पदवी प्राप्त करता है. अनेक संघ-ीं के बाद में बहुत परेशानियों के पश्चात धनवान बनता है तथा चरम सीमा पर पहुंचता है.

शनि यदि चौथे भाव में रहता है तो शनि प्रधान व्यक्ति है. शनि पूरी तरह से अशुभ है. गोवंश के साथ में अपराध करने के कारण श्राप मिलता है तथा जीवन बरबाद होता है.

नया वाहन प्राप्त होने पर तुरन्त ही पुराना होता है. सम्पत्ति प्राप्त होने पर उसमें विवाद बना रहता है. परिवार तथा रिश्तेदारों से मधुर संबंध नहीं बन पाते हैं. व्यक्ति ह्रदय का कपटी होता है. माता के साथ में विचार मतभेद होने के कारण प्रेम नहीं प्राप्त कर पाता है तथा सदैव ही मां के साथ में झगडा करता है.

कामचोर होने के कारण परेशान एवं मानसिक रुप से चतुर है. आनन्द का सदैव ही अभाव रहता है.

शनि यदि पांचवे भाव में रहता है तो बहुत ही अशुभ है. कामधेनु के अपराध के कारण जीवन बरबाद होता है. संतान बहुत कम देता है. संतान यदि है तो संतान चिंता का योग है. दु-ट मन के कारण अस्थिर भाग्य पुत्र से परेशानी सांसारिक आनन्द का अभाव रहता है.

शनि यदि सातवे भाव में रहता है तो व्यक्ति शनि प्रधान है. शनि व्यक्ति के लिए पूरी तरह से अशुभ है. गोवंश का अपराध करने के कारण जीवन का पतन होता है.

वैवाहिक संबंध में शनि अच्छा नहीं है. यदि विवाह होता है तो बहुत ही देर से होता है. प्रथम विवाह टूट सकता है.

पति तथा पत्नी की आयु में बहुत ही अधिक अंतर होता है. पति पत्नी श्याम वर्ण एवं कुरुप होते हैं. बहुत अधिक भागीदारी होती है.

शनि यदि आठवे भाव में रहता है तो शनि अशुभ है. आठवे भाव का कारक शनि है. व्यक्ति गोवंश की सेवा करने के कारण उनका आर्शीवाद प्राप्त कर दीर्घायु रहता है परन्तु निरन्तर व्याधियों के कारण बहुत ही दीर्घ बीमारियां बनी रहती है.

वातरोग का भय है. चोरी का आरोप इतना अधिक घातक होता है कि गहरे सदमें के कारण व्यक्ति की मौत तक हो सकती है.

शनि यदि नवमें भाव में रहता है तो अशुभ है. गोवंश के साथ में अपराध करने के कारण श्राप ग्रहण कर अपने जीवन को बरबाद करता है. गोवंश के अपराध का प्रायश्चित करना अनिवार्य है.

व्यक्ति दंभी धर्म तथा भाग्य रहित होता है. अनेक संघर्ा के बाद उन्नति होती है. पिता के साथ शत्रुता रहती है.

शनि यदि दसवे भाव में रहता है तो अनेक उतार चढाव आते हैं. गोवंश के साथ में भयंकर अपराध करने के कारण श्रापित जीवन व्यतीत करता है.

मानव को दिमाग के संपूर्ण संतुलन रखने के लिये गोसेवा अवश्य करनी चाहिये.

शनि यदि ग्यारहवे भाव में रहता है तो अशुभ रहता है. गोवंश के साथ अपराध करने के कारण जीवन नरक के समान हो जाता है. शत्रुओं से सतत भयभीत रहता है. कामवासना में डूबा रहता है. अति वि-यी होने से वाणी में कर्कशता होती है.

अप्रमाणिकता से व्यक्ति धन प्राप्त करता है. लोहे के बर्तन में दुहा गया धारोष्ण दूध त्रिदोषनाशक होता है.

शनि यदि बारहवे भाव में रहता है तो अशुभ है. बारहवे भाव का स्वामी शनि है. कामधेनु के अपराध करने के कारण नरक के समान यातनाएं भोगनी पड़ती हैं. अति गरीब के समान समय व्यतीत करता है. दु-टबुद्धि रहने के कारण रोगी शरीर का सदैव परेशान रहता है.

श्यामा गाय माता के रक्त में विशेष प्रकार की असाधारण उर्जा है जिसके कारण नौ ग्रहों की तरंगों का समान प्रभाव गाय माता पर पडता है.

शनि मकर तथा कुंभ राशि के स्वामी हैं. आदिकाल से ज्योति-ा के द्वारा ग्रह एवं नक्षत्रों के समाधान करने के लिए गोवंश के गोग्रास के बारे में हमेशा ही बताया जाता है.

शनि की महादशा 19 साल की होती है. शनि की महादशा में बहुत सारे क-ट प्राप्त होते हैं. गोवंश हमारी संस्कृति का मूल केंद्र है. गोवंश का सम्मान ही विश्व में हमारी पहचान है. गोवंश से मानव के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हुआ है. गोवंश गोलोक से मानव का जीवन सार्थक करने के लिए पृथ्वी पर आया है.

शनि ग्रह के गोचर में कमजोर होने के कारण कैंसर दिमाग में रक्त का गाढा होना सिर के केश गिरना दांत गिरना हडडी टूटना कोढ वाहन बाधा वात तथा कफ द्वारा रोग पैरों में दर्द, पैर लंगडा कर चलना, ज्यादा श्रम के कारण उत्पन्न थकान, चित भ्रांति, कमर के भाग में रोग, शरीर में जलन उत्पन्न होना, नौकरों से पीडा, पत्नी अथवा पुत्र विषयक विपति, स्वयं के शरीर के किसी भाग में चोट लगनी अथवा घायल होना, मानसिक चिंता, पेड अथवा पत्थर से चोट लगना, आपति, पिशाच वगैरह से पीडा होना प्रमुख है.

वर्तमान समय में शनि के घातक प्रभाव से बचने के लिये शनि के रत्न धारण करने, हनुमान जी को तेल चढाने, व्रत रखने, लोहे के दान करने, जप करने आदि उपायों का प्रचलन भारत में बहुत ही अधिक है लेकिन सही लाभ नहीं मिलने के कारण मानव गाय माता के व्रत, पूजन, सेवा से संपूर्ण निदान प्राप्त करता है.

बंधनकारक मन का गंदा गुप्तता का कारक शनि है. शनि के कारण ही प्राकतिक विपदाएं बाढ भूकंप अकाल मानव निर्मित हडताल हथियार आदि है.

साडे साती

शनि किस चरण में है यह विचार करना बहुत ही आवश्यक है. लोहा तांबा चांदी सोना में बैठकर शनि वैसा आश्चर्यकारक प्रभाव देता है. चंद्रमा के गोचर में भ्रमण करते समय शनि यदि बारह प्रथम या दूसरे भाव में आता है तो उस समय को साढे साती कहते हैं.

शनि की साढे साती जीवन में तीन बार हर मानव के जीवन में आती है. प्रथम साडे साती बचपन में दूसरी युवा अवस्था में तथा तीसरी बुढापे में आती है.

प्रथम साडे साती में अध्ययन तथा मां तथा पिता को प्रभावित करती है.

दूसरी साडे साती में परिवार आर्थिक स्थिति तथा कार्य पद्धति को प्रभावित करती है.

तीसरी साडे साती में व्यक्ति स्वास्थय के कारण परेशान रहता है. मानव जीवन की अंतिम साढे साती में मानव मर भी जाता है.

100 दिनों तक मुंह पर शनि रहता है तथा बहुत ही अधिक नुकसान करता है. उसके बाद 400 दिनों तक शनि मानव को अच्छा कर देता है. उसके बाद 600 दिनों तक पैरों पर रहकर शनि भ्रमण करवाता है. उसके बाद पांच सौ दिनों तक पेट पर शनि का प्रभाव रहता है. इस समय हर कार्य सिद्ध होता है. उसके बाद 400 दिनों तक बायें कंधे पर शनि रहता है. इस समय हानि होती है. इसके बाद 300 दिनों तक सिर पर रहता है.

काली गो के दूध, दही, गोबर का रस, मूत्र, घी से तैयार पंचगव्य एवं उसमें 24 जड़ीबूटियां डालने पर तैयार महापंचगव्य के उपयोग करने से शनि के तीव्र प्रभाव से मुक्ति मिलती है.

शनि की ढइया यानी ढाई साल की अवधि में भी मानव बहुत सारे उपाय करता है लेकिन मानव को इन उपायों से इच्छित लाभ नहीं मिलता है.

शनि ग्रह को भैंसे पर बैठाया गया है इसलिये भैंस का दूध या भैंस के दूध से बनी वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिये. गोचर में शनि ग्रह के कमजोर पडने पर मानव अपने जीवन में लम्बे समय तक बहुत ही परेशानी अनुभव करता है. मानव अपनी प्रगति में भी शनि ग्रह के कारण ही धीमा पड जाता है.

श्रावणी पूर्णिमा के दिन पंचगव्य स्नान एवं पंचगव्य पान करने का विधान है. शनि मानव पर प्रसन्न होने पर मालामाल कर देता है.

रोगों को पूरी तरह से ठीक करने में मदद मिलती है. हवन हर दिन वैदिक मंत्र के साथ में करना आवश्यक है. हवन करने पर मन पूरी तरह से एकाग्र हो जाता है. वातावरण भी पवित्र रहता है. शनि ग्रह मानव को जीवन में सबसे अधिक परेशान करता है.

मानव को अपने जीवन में गति प्राप्त करने के लिये वेद के वाक्य के अनुसार जो गतिशील है, जो गति से उत्पन्न है, जो परिवर्तनशील है वह गो है को पूरी तरह से ध्यान में रखकर ही कार्य करना अनिवार्य है.

वैज्ञानिक अनुसंधानों के द्वारा ज्ञात हुआ है कि शनि की गाढी बैंगनी रंग की घातक तरंगे गाय माता के रोम छिद्रों पर गाय माता की त्वचा की बनावट विशेष रहने के कारण ही विशेष प्रभाव नहीं डाल पाती हैं. गाढे बैंगनी रंग की तरंगे मानव के दिमाग के अंदर रक्त कोशिकाओं में असंतुलन उत्पन्न करती हैं. शनिवार के दिन श्यामा गाय माता का दूध लोहे के बर्तन में पीना चाहिये.

राहू

भारतीय ज्योतिष के अनुसार राहू पाप ग्रह है. राहू छाया ग्रह है. राहू को मायावी ग्रह कहा गया है. राहू तामसी स्वभाव वाला है. राहू को बाधाकारक एवं दुर्घटना उत्पन्न करने वाला माना गया है.

राहू का अस्तित्व ब्रहमांड में नहीं है. राहू मानव को गरीब में से अमीर बना देता है. अमीर को गरीब बना देता है.

राहू मिथुन कन्या धनु तथा मीन राशि में उत्तम परिणाम देता है. सूर्य तथा चंद्र राहू के शत्रु रहने के कारण सिंह तथा कर्क राशि राहू की शत्रु राशि हैं. मकर तथा तुला राशि राहू की मित्र राशि हैं. राहू यदि किसी राशि में रहता है तो हमेशा राशि के स्वामी के स्वभाव के अनुसार परिणाम देता है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार राहू ग्रह के कारण ही सूर्य एवं चंद्र के बीच में धरती के आने पर अमावस्या के दिन सूर्य ग्रहण तथा पूर्णिमा के दिन चंद्र ग्रहण आता है.

राहू बहुत ही निर्भय वाणी में होशियार तेजस्वी श्याम रंग परनिंदा में रुचि लेने वाला विचार एवं आचरण में अंतर रहता है. राहू उच्च का वृ-ा राशि में तथा नीच का वृश्चिक राशि में होता है.

राहू मे-ा लग्न में रहने पर राहू का रत्न धारण नहीं करना चाहिये. गोवंश से बहुत ही अधिक लगाव रहता है. गोग्रास के लिए सक्रिय रहता है. नंदी के विकास करने के लिए सरकार से मदद प्राप्त करता है. गोचर की भूमि पर से अवैध कब्जे समाप्त करता है.

मानव पुरानी विचारधारा का होता है. दांत का रोग सिर का रोग अवश्य ही होता है. बहुत अधिक भा-ाण करने में होशियार दु-टबुद्धि विवाह के बाद में परेशानी रहती है. ज्योतिष शास्त्र में 12 राशियो, 9 ग्रहों में 27 नक्षत्रों के विभिन्न चरणों में जन्में मानव पर 9 ग्रहों और 27 नक्षत्रों का हमेशा अलग अलग प्रभाव पडता है.

राहू यदि दूसरे पांचमे आठवे बारवे भाव में हो तो पितरु दो-ा रहता है. राहू की ग्रह शांति के लिए गोवंश का पूजन वेद मंत्रों के साथ में करना चाहिए.

राहू मंगल के साथ में व्यस्नी बनाता है. मानव को तामसिक भोजन से बचना अनिवार्य है.

राहू बुध के साथ में व्यक्ति की उन्नति गोवंश के अपार दान तथा गोवंश की सेवा करवाकर करवाता है.

गुरु के साथ में राहू के धातक प्रभाव को रोकने के लिए मानव को गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमण को करना चाहिए. 1 दिन का अग्निहोत्र करने पर अच्छे परिणाम मिलने निश्चित हैं. गुरु के साथ में राहू परिश्रम एवं हार देता है.

सूर्य के साथ में राहू के अशुभ परिणाम को रोकने के लिए नियमित दान करना चाहिए. गोवंश का दान वर्तमान में सर्वश्रे-ठ है.

सूर्य के साथ राहू आत्मविश्वास का अभाव उत्पन्न करता है.

राहू शुक्र के साथ में कुटनीति सरकार के साथ में गहरा संबंध बनाता है.

राहू शनि के साथ में गोचर में भयंकर दुर्घटना योग रहता है.

चंद्र एवं राहू ह-ल के साथ चाणक्य बुद्धि देते हैं. चाणक्य बुद्धि के कारण आत्मविश्वास बहुत ही प्रबल रहता है. पत्थर में से पैसा बहुत ही आराम से पैदा कर सकते हैं.

चंद्र राहू की युति 80 प्रतिशत को सामुद्रिक विद्या की ओर आकर्-ित करती है. विवरिंग मांइड होता है.

राहू के मित्र ग्रह शुक्र एवं शनि हैं. मंगल एवं गुरु राहू के शत्रु हैं. राहू 1 राशि में 1 व-र्ा 6 माह रहता है.

प्रथम भाव में राहू रहने पर अशुभ है. गोवंश के अपराध करने के कारण गोवंश का श्राप मिलता है. गोवंश का प्रायश्चित करने के लिए गोवंश का दान करना चाहिए. अशुभ विचारों के कारण ही मानव को अंतर्मुखी अडियल स्वभाव स्थुल शरीर झूठा अभिमानी लोभी बेवकूफ बनाता है.

गोवंश की सेवा करने पर ही हमेशा मानव का समाधान हुआ है. गोवंश की नियमित कम से कम सात परिक्रमा करने पर परिवर्तन होता है.

दूसरे भाव में राहू अशुभ है. मन से बहुत ही कठोर होता है. मन से बहुत ही अधिक कंजूस होता हॅ. गोवंश के अपराध करने के कारण ही पितरुदो-ा उत्पन्न करता है.

गोवंश के दान तथा गोवंश की सेवा करने के कारण ही सरकार की मदद से बहुत ही अधिक धन प्राप्त करता है.

दू-ित अन्न खाने के कारण तथा तामसिक भोजन करने के कारण मानव का मन असंतुलित बनता है.

कर्कश वाणी के कारण धन की हानि परिवार एवं पत्नी से परेशानी बनी रहती है.

राहू मानव को भ्रमित करता है. सात्विक कार्यों से दूर कर मानव को झूठा सटटेबाज झगडा करने के कारण चिडचिडा बनाता है.

भारतीय ज्योतिष के अनुसार मानव यदि गाय माता के साथ सेवा करने के लिये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से जुडता है तो मानव को ग्रहों और नक्षत्रों का प्रभाव अनुकूल मिलने लगता है.

तीसरे भाव में राहू शुभ है. कम समय में चरम सीमा तक प्रगति करता है. बहुत ही गरीबी से अमीर बनाता है. विश्व में अपने प्रभाव से गोवंश का विकास करने के लिए अनुसंधान करता है.

व्यक्ति के कार्य एवं विचारों की टीका टिप्पणी करवाता है. भाई के सहयोग करने अशुभ है. मानव अपने जीवन में गोवंश की रक्षा करता है.

तीसरे भाव में राहू रहने पर मानव को भाई बहिनों से फायदा देता है. पराक्रम भाव में मानव का स्वास्थय अच्छा रहता है. पराक्रम कर धन ऐश्वर्य यश प्राप्त करता है.

पराक्रमी तथा प्रतियोगिताओं में सदैव ही आगे रहता है. मानव अपने जीवन में अनेको धार्मिक कार्य करता है. मानव गोवंश का दान करता है. मिथ्या अभिमान के कारण अहंकारी बनता है.

गोग्रास

गोवंश के कारण ही मानव को नंदराज, वृ-ाभानुवर जैसे सम्मान समाज में दिया गया है. गोवंश को धन के रुप में भी स्वीकार किया गया है. गोदान को ही हमेशा महत्व दिया गया है. गोवंश मानव से सदैव ही प्रेम की अपेक्षा रखता है.

चौथे भाव में राहू अशुभ है. गोवंश का प्रायश्चित आवश्यक है. गोवंश के भयंकर अपराध करने के कारण परिवार में मौत होती है.

मानव को विश्वासघात तथा कपट के कारण राहू कारागार के दर्शन करवाता है.

व्यक्ति हमेशा चरित्रहीन तथा मंदबुद्धि साबित होता है. पत्नी से मतभेद बना रहता है. मानव का उसकी माता से वैचारिक मतभेद होता है. मकान भी डेडएंड एवं कोने में भूमि प्राप्त होती है.

पांचवे भाव में राहू अशुभ है. पांचवा भाव पूर्व जन्म का है. पूर्व जन्म में गोवंश के साथ अपराध करने के कारण इस जन्म में परिणाम भोगना आवश्यक है.

राहू के कारण ही व्यक्ति बहुत ही डरपोक एवं गरीब रहता है.

मित्रों की सदैव ही कमी बनी रहती है.

अग्निहोत्र के नियमित अभ्यास करने पर चमत्कार लगने लगता है. पेट में बहुत सारे रोगों के कारण पीडा रहती है.

एक समय के अग्निहोत्र करने पर मानव को दैवी सहयोग मिलने लगता है. राहू के कारण मानव को विद्या प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है.

गूढ विद्या प्राप्त होती है.

प्रथम संतति में परेशानी पितरदो-ा निर्णय करने में परेशानी पढने में बाधा आती है.

सातवे भाव में राहू अशुभ है. राहू के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मानव को अग्निहोत्र 1 साल तक करना चाहिए तथा गोवंश का दान अवश्य ही करना चाहिए. दान से संचित कर्म बदलते हैं.

राहू के कारण ही दो पत्नी का योग बनता है. विवाह में देर होती है.

राहू गोवंश के श्राप के कारण मानव को स्त्री कर्कश एवं दु-ट चरित्र की देता है.

ऐसी पत्नी के कारण व्यक्ति में मधुमेह की बीमारी के कारण मानसिक अशांति बनी रहती है.

व्यक्ति स्त्री के असहयोग के कारण बहुत सारे अनैतिक संबंध स्थापित करता है.

कपटी अडियल भागीदारी से दूर रहना चाहिए.

आठवे भाव में राहू अशुभ है. राहू के अशुभ रहने पर भी जाने तथा अनजाने में गोवंश की सेवा तथा गोवंश के दान करने के कारण ही व्यक्ति दीर्घायु रहता है.

राहू के धातक प्रभावों को समाप्त करने के लिए कम से कम 1 साल तक अग्निहोत्र करना चाहिए. राहू के कारण ही पितरुदो-ा रहता है.

राहू के धातक प्रभाव को कम करने के लिए तुरन्त ही प्रयत्न करने की आवश्यकता है. 1 समय का अग्निहोत्र करने पर मानव के संचित कर्म न-ट होते हैं.

दान करने से प्रायश्चित होता है तथा परिवर्तन की संभावना है. गोवंश के श्राप के कारण वि-ादंश से मौत का भय रहता है.

नीच कर्म में व्यस्त रहने के कारण गुप्त रोग होते हैं.

जटिल एवं प्राण घातक बीमारी के कारण परेशानी बनी रहती है.

मानव को स्वभाव से तिकडमी एवं कपटी बनाता है. संकुचित दिमाग के कारण पेट के अनेक रोग होते हैं.

9 वे भाव में राहू अशुभ है. गोवंश के साथ में अपराध करने के कारण श्राप जीवन भर भोगना पड़ता है.

मानव की नीच कर्म में रुचि रहती है. शत्रु से डरने के कारण चुगली करने में आगे रहता है. पिता का सहयोग नहीं प्राप्त होता है.

धन समद्धि प्राप्त होती है. विदेश एवं दूर की यात्रा करता है. सदैव ही विचित्र व्यवहार करता है. राहू व्यक्ति को नास्तिक मितव्ययी सिराफिरा बनाता है.

10 वे भाव में राहू अशुभ है. परिवार में मौत होती है. मानव को दूसरों का धन हडपने में आगे करता है तथा बहुत ही कामी बनाता है.

बाधाओं तथा परेशानियों के कारण ही संघर्ा कर अपना मनोरथ पूरा करता है. विदेश से फायदा नेतागिरी कवि एक्टर संगीतकार चित्रकार बनाता है.

11 वे भाव में राहू शुभ है. पूर्व जन्म में गोवंश के अपार दान करने के कारण पुण्य अर्जित करता है. सरकार तथा समाज सदैव ही सहयोग करते हैं. असाधारण मानसिक क्षमताओं से सदैव ही दैवी सहयोग प्राप्त करता है. विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता है.

पूर्वाभास से सदैव सावधान रहता है. गोवंश के उत्थान करने के लिए अपना जीवन समर्पित करता है. गोवंश विरोधियों के साथ में जीतने के लिए दैवी सहायता मिलती है. गोवंश के आर्शीवाद के कारण ही जीवन सफल होता है. शुभ रहने पर विद्यावान एवं ज्ञानी होता है. बहुत अधिक धन प्राप्त करता है. युद्ध में हमेशा ही शत्रुओं पर हावी रहता है.

कान का रोग होता है. संतान की चिंता रहती है. विदेश में धन प्राप्त करता है. हमेशा मित्रों से नुकसान किसानी में फायदा परिवार में मतभेद रहता है.

गोवंश के अंदर से निकलने वाली सूक्ष्म तरंगें मानव के जीवन को पूरी तरह से बदलने में सक्षम है.

12 वे भाव में राहू अशुभ है. दिवालिया भागीदारी में तनातनी मारामारी झगडा होता है. अशुभ रहने पर कुरुप होने के कारण अंत में वैरागी बनता है.

राहू के कारण व्यक्ति शत्रुओं से अभय प्राप्त करता है. स्त्रीहीन धर्म तथा धनहीन होने के कारण परेशान रहता है.

राहू की महादशा 18 साल की होती है. राहू की महादशा में धर्म का नाश बुद्धि का नाश पत्नी एवं पुत्र से वियोग एवं हर प्रकार से नुकसान है. सात प्रकार के अनाज की खिचड़ी बनाकर गोवंश को खिलाना चाहिए. वर्तमान समय में पाप ग्रह राहू मानव को बहुत अधिक परेशान कर रहा है. उड़द एवं नारियल की वस्तुएं गोवंश को खिलानी चाहिए. तिल की मीठी वस्तुएं बनाकर गोवंश को खिलाने से राहू के तीव्र प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है.

राहू के गोचर में कमजोर पडने के कारण होने वाले संभावित रोग ह्रदय रोग, ह्रदय में जलन, कोढ, बुद्धि का विनाश, मति भ्रम, शरीर में जहर फैल जाने के कारण होने वाले रोग, पैरों में चोट के कारण पीडा, स्त्री एवं पुत्र को परेशानी, सर्प तथा पिशाच से पीडा हैं.

राहू की बाधा को दूर करने के लिए गोमाता का घी या गो दान ब्राहमण को अवश्य ही करना चाहिए.

राहू के गोचर में कमजोर होने पर सात्विकता में कमी आने के कारण ही मानव के जीवन में उत्पन्न होने वाली परेशानी को पूरी तरह से दूर करने के लिये मानव को मांसाहार, नशीली वस्तुओं को पूरी तरह से त्याग कर गोसेवा से जुडना अनिवार्य है.

वर्तमान समय में भारत में राहू संबंधी व्रत, दान, जप, पूजन, रत्न धारण कर राहू के द्वारा उत्पन्न परेशानी का अस्थायी समाधान करने का प्रयत्न किया जाता है लेकिन गोसेवा करने पर मानव को राहत स्थायी मिल जाती है. गोमूत्र से प्रतिदिन नहाना अनिवार्य है.

हवन हर दिन अवश्य ही करना चाहिए. पंचगव्य एवं महापंचगव्य दवाओं के प्रयोग करने पर बहुत ही लाभ होता है. पंचगव्य स्नान का भी विधान है.

हवन करने पर वातावरण पवित्र होता है एवं मन भी एकाग्र हो जाता है. राहू के खराब प्रभाव को रोकने के लिये मानव को हिंसक, तामसिक भैंस एवं वर्णसंकर जानवरो का दूधं, नकली दूध तथा दूध से बनी हुई वस्तुओं का त्याग पूरी तरह से करना अनिवार्य है.

केतु

केतु को राहू का आधा भाग माना गया है. केतु 1 राशि में 1 व-र्ा 6 माह तक रहता है. केतु वृश्चिक राशि में उच्च का होता है तथा वृ-ा राशि में नीच का होता है.

केतु मिथुन कन्या धनु तथा मीन राशि में उत्तम परिणाम देता है.

केतु की महादशा 7 साल की होती है. केतु की महादशा में मानव को प्रगति प्राप्त होती है. गोवंश में अदभुत उर्जा मौजूद है इसलिए ही गोवंश के प्रसन्न होने पर जो तरंगे उत्पन्न होती हैं वे मानव की महादशा, अंतरदशा, प्रत्यांतरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा बदल देती हैं.

केतु के देव गणपति हैं. केतु का रंग काला है. केतु छाया ग्रह है.

केतु के गोचर में कमजोर होने पर तीव्र प्रभाव के कारण ही ब्राहमणों और क्षत्रियों के साथ लडाई के कारण परेशानियां, शत्रुओं के कारण मानसिक कष्ट मुख्य बीमारी हैं.

धूमकेतु प्रधान है तथा केतु बहुत सारे हैं. केतु अपने स्थान पर बैठकर परिणाम कम करता है. केतु तीसरे 6ठे 11 वे भाव में अच्छा माना गया है.

मे-ा लग्न में केतु अशुभ है. अशुभ प्रभाव को रोकने के लिए सावधानी के साथ में सात्विक प्रयत्न अनिवार्य है. अग्निहोत्र के परिणाम बहुत ही अच्छे देखने मिले हैं.

मे-ा लग्न में रहने पर गंदे मित्रों के कारण बात बात में झूठ का सहारा रहता है. कोरे विचारों के कारण ही मानव में मानसिक अस्थिरता बनी रहती है. विवाह के बाद में बहुत अधिक परेशानी रहती है.

पूर्व के संचित कर्मों के अनुसार ही मानव 9 ग्रहों तथा 27 नक्षत्रों के निरन्तर परिवर्तनशील प्रभाव के कारण ही अपने जीवन में सदैव ही विचित्र गतिविधियां करता है.

प्रथम भाव में केतु अशुभ है. केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए अग्निहोत्र करना अनिवार्य हे. केतु बहुत ही सामान्य देह देता है. दुर्बलता के कारण ही मानव बहुत ही कमजोर रहता है. डरपोक मानव हमेशा बहुत ही होशियार रहता है.

दूसरे भाव में यदि मे-ा राशि हो तो केतु का प्रभाव अच्छा मिलता है. सरकार से गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही अधिक धन मिलता है. सरकार से विश्व में गोवंश के अनुसंधान करने के लिए हर प्रकार की सहायता मिलती है.

गोवंश के लिए समर्पण के कारण उनके आर्शीवाद के कारण ही भाई के सहयोग से धन का फायदा होता है.

दूसरे भाव में यदि वृ-ा राशि हो तो केतु का प्रभाव अनुकूल मिलता है. देवत्व विकसित होने के कारण उदारता के साथ में नंदी का दान करता है.

नयी नस्ल तेयार करने के लिए जमीन प्राप्त होती है. नंदीशाला खोलने के लिए 5 करोड़ तक की वित्तीय सहायता आईसीएआर से मिलती है. महाकाल का आर्शीवाद मिलता है.

सांड के संवर्धन करने के कारण ही मानव को हर प्रकार की अनुकूलता बनी रहती है. किसानी गहने सुविधाओं के साधनों से धन की प्राप्ति होती है.

दूसरे भाव में यदि मिथुन राशि हो तो व्यक्ति उदार होता है तथा गोवंश के कल्याण करने के लिए सदैव तत्पर रहता है. गोवंश के आश्रीवाद के कारण ही केतु का प्रभाव अनुकूल मिलता है. गोवंश के लिए धन खर्च करने पर व्यापार हिसाब किताब स्त्री से धन प्राप्त होता है.

दूसरे भाव में यदि कर्क राशि हो तो गोंवश को साफ पानी पिलाने के लिए व्यक्ति गोशालाओं में वाटर फिल्टर का दान करता है. मन से उदार तथा आनन्द से जीवन बिताने वाला होता है.

पानी की वस्तुओं रंग रसायन रेशमी वस्त्र से धन प्राप्त होता है.

दूसरे भाव में यदि सिंह राशि हो तो व्यक्ति प्रभावशाली तथा दूरदर्शी होता है. जीवन में बहुत ही अधिक प्रगति करता है. सरकार से गोवंश के विकास करने के लिए मदद प्राप्त करता है. जीवन में अनेक सुनहरे अवसर मिलते हैं. गोवंश की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर रहता है. सात्विक एवं दैवी कार्य कर स्वपराक्रम से आगे बढता है तथा धन कमाता है.

दूसरे भाव में यदि कन्या राशि हो तो व्यक्ति का आधार बहुत ही मजबूत होता है. हर क्षेत्र में सफलता मिलती है. चरम सीमा तक प्रगति करता है. विश्व में जयजयकार होती है. मधुर वाणी प्रभावशील होती है. व्यवहार कुशलता से सरकार से मदद प्राप्त करता है. गोवंश की सेवा करने के कारण ही रत्न सोने के व्यापार से धन कमाता है.

दूसरे भाव में यदि तुला राशि हो तो गोवंश के न्याय के लिए संगठित प्रयत्न करता है. बहु आयामी प्रतिभा का धनी मन से उदार तथा दानी होता है. गोवंश के दान करने के कारण प्रसिद्ध है. उच्च पद के लोगों से मधुर संबंध बनाता है.

कमजोर तथा अपंग गोवंश की रक्षा करने पर व्यापार वाणिज्य न्याय आदि से धन प्राप्ति होती है.

दूसरे भाव में यदि वृश्चिक राशि हो तो रचनात्मक गतिविधि कर लोगों को संगठित करता है. परिवार में प्रगाढ़ता तथा तालमेल बनाता है. जीवन में दैवी सहायता प्राप्त कर हर समस्या का समाधान बहुत ही आसानी से करता है.

1 साल के अंदर अग्निहोत्र करने पर गूढ विद्या पैतक सम्पत्ति प्रामाणिकता शस्त्र से धन प्राप्ति होती है.

दूसरे भाव में यदि धनु राशि हो तो अपने दृढ़ निश्चय के कारण ठोस परिणाम लाता है. जीवन में गति बनाये रखने के लिए सरकार से मदद प्राप्त करता है.

1 साल के अंदर अग्निहोत्र करने पर तथा गोवंश के पूजन तथा दान आदि धार्मिक क्रिया पिता न्याय से धन प्राप्ति होती है.

दूसरे भाव में यदि मकर राशि हो तो बहुत ही सक्रिय रहकर समाज में तालमेल बनाये रखता है. आधार बहुत ही मजबूत रहता है. गोवंश का दान ब्राहमणों को कर उनका आर्शीवाद प्राप्त करता है.

1 दिन का अग्निहोत्र करने पर राजनीति किसानी प्रपंच विदेश से धन प्राप्त होता है.

दूसरे भाव में यदि कुंभ राशि हो तो पूर्णता को प्राप्त करने के लिए संगठित होता है. समाज में आदर्श प्रस्तुत करता है. 1 सप्ताह का अग्निहोत्र करने पर व्यक्ति सुशील तथा सत्यवक्ताओं के साथ में मित्रता करता है.

दूसरे भाव में मीन राशि हो तो 1 माह का अग्निहोत्र करने पर नोकर चाकर तथा गंदे व्यक्तियों से मित्रता होती है.

दूसरे भाव में केतु बहुत ही अशुभ है. मन अपवित्र वस्तुओं के सेवन करने के कारण चंचल रहता है. मात्र 1 समय के अग्निहोत्र करने पर परिणाम अच्छे मिल रहे हैं. अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए दान अनिवार्य है. गोदान सर्वश्रे-ठ माना गया है.

केतु व्यक्ति को गंदा तथा विचित्र बनाता है. विश्वासघात कपट धूर्तता के कारण धननाश करता है. कर्कश एवं गंदी वाणी के कारण मुंह के रोग होते हैं तथा परिवार में अशांति बनी रहती है. पत्नी से वियोग या दूरी बनी रहती है. धन में कमी करता है.

धन में कमी के कारण ही अधिक धन प्राप्त करने मानव हमेशा दो नंबर का गैरकानूनी कार्य करता है. धन के अभाव के कारण मानव का स्वभाव बहुत ही कठोर तथा धन के व्यय करने में सावधान रहता है.

तीसरे भाव में केतु शुभ है. नंदी के विकास करने के कारण महाकाल का आर्शीवाद मिलता है. सरकार से गोवंश के विकास करने के लिए अपार धन मिलता है. केतु के कारण व्यक्ति गुणवान एवं धनवान बनता है. वैवाहिक जीवन बहुत ही आनन्द में व्यतीत होता है.

भाई बहिन की कमी रहती है. भाई रहने पर सहयोग प्राप्त नहीं होता है. माता की कमी रहती है तथा मां के रहने पर सहयोग नहीं प्राप्त होता है. अंधश्रद्धा के कारण साहस में कमी रहती है.

चौथे भाव में केतु अशुभ है. मन सदैव ही विचलित करता हे. गोवंश के लिए मन बहुत ही कठोर रहता है. केतु के अशुभ प्रभाव को रोकने के लिए अग्निहोत्र ही अंतिम उपाय है.

घर मकान वाहन के बारे में सदैव ही चिता उत्पन्न करता है. कोने का मकान देता है. नया मकान बहुत ही शीघ्र पुराना होता है. नया वाहन भी तुरन्त ही पुराना होता है. संपत्ति में असंतो-ा बना रहता है.

माता का सहयोग नहीं रहता है. माता की कमी परेशान करती है. बहुत अधिक परेशानियां रहती हैं. देश का त्याग करना पडता है. मानव अपने रोजगार, व्यापार, उद्योग, नौकरी, परिवार में प्रतिस्पर्धा का अनुभव भी ग्रहों के बदलते हए प्रभाव के कारण ही महसूस करता है.

केतु के गलत प्रभाव को रोकने के लिये मांसाहार, नशीली वस्तुओं का सेवन, भैंस, वर्णसंकर जानवर के दूध का त्याग पूरी तरह से करना अनिवार्य है.

पांचवे भाव में केतु अशुभ है. पूर्व जन्म में गोवंश के साथ में किये गये भयंकर अपराध का दंड मिलता है. मानव बरबादी की ओर जाता है. मानव की राक्षसी प्रवृति उभरकर निंदा तथा बुराई के लिए प्रोत्साहित करती है.

अग्निहोत्र करने पर केतु का अशुभ प्रभाव रोकना संभव है. अग्निहोत्र के परिणाम 1 साल में दिखते हैं.

केतु के अशुभ प्रभाव के कारण ही पेट का ओपरेशन करना पडता है. व्यक्ति बहुत ही दु-ट एवं क्रूर होता है. विद्या अध्ययन करने में परेशानी बनी रहती है. संतान प्राप्त करने में परेशानी रहती है. स्त्री को एक गर्भपात अवश्य ही करवाता है.

संतान की परेशानी स्वभाव को क्रोधी बना देती है. वेदों के अनुसार पहला स्थान गोवंश को ही दिया गया है. कामधेनु की उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से पहले हुई है. कामधेनु को महालक्ष्मी कहा जाता है.

6ठवा केतु मानव के लिए अशुभ है. बहुत ही कठोर मन गोवंश के अपराध करवाता है. गोवंश के विरोध करने के कारण मन को विचलित करता है. मन राक्षसी प्रवृति की ओर बढ़ता है.

अशुभ प्रभाव को रोकने के लिए कम से कम 15 दिनों तक अग्निहोत्र करना चाहिए. मौसा की ओर से नुकसान करवाता है. अपंगता एवं देह में परेशानी रहती है.

नवग्रह धूप का प्रयोग सुबह और संध्या के समय अवश्य ही नियमित करना चाहिए.

सातवा केतु अशुभ प्रभाव देता है. पूर्व जन्म के कारण ही मानव में राक्षसी वृति उत्पन्न होती है. लोगों की प्रगति सहन नहीं कर पाता है. अहंकार बहुत ही प्रबल रहता है.

मन में कठोरता के कारण वाणी में कटुता बनी रहती है. निंदा तथा बुराई करना आम बात बन जाती है.

अशुभ परिणामों को रोकने के लिए गोवंश का दान अग्निहोत्री ब्राहमणों को ही करना चाहिए. 1 साल तक अग्निहोत्र अवश्य ही करना चाहिए.

व्यक्ति के दवारा यात्रा में परेशानी एवं भय उत्पन्न करता है. अनैतिक संबंध स्थापित करने के कारण ही दाम्पत्य संबंध में मतभेद करवाता है. पत्नी से वियोग करवाता है. पत्नी मर सकती है. विवाह में बाधक होता है.

गोपा-टमी जैसे पावन पर्व पर वैदिक मंत्रों के साथ में गोपूजन कर मानव गोवंश का उपकार चुकाता है.

आठवा केतु बहुत ही अधिक अशुभ है. राक्षसी मनोवृति तथा तामसी आहार के कारण बहुत सारे परिवर्तन जीवन में होते हैं. 3 माह तक अग्निहोत्र करने पर केतु के अशुभ परिणाम को रोकने में सफलता मिलती है.

फोडे मसा हरस आदि बहुत सारे गुप्त रोग देता है. वाहन पर से गिरने का भय बना रहता है. व्यक्ति बहुत अधिक परेशान रहता है.

गोवंश के द्वारा उत्पन्न सुरक्षा कवच मानव जीवन के लिए वरदान साबित हो गया है.

9 वां केतु अशुभ है. मानव में असुरी आवेश बना रहता है. कसाई के साथ मित्रता बनी रहती है. मांस के निर्यात तथा गोवंश के विनाश में मदद कर अपना उत्थान करता है.

केतु के अशुभ परिणाम को रोकने के लिए अग्निहोत्र अवश्य ही करना चाहिए.

केतु हाथ में पीडा देता है. भाईयों का सहयोग कम करता है. भाग्योदय मलेच्छ यानी मुसलमान आदि गंदे एवं घटिया व्यक्तियों के सहयोग से करवाता है.

भाग्य को बहुत ही देर से सहयोग करता है. 48 व-र्ा के बाद भाग्योदय होता है.

दसवे भाव का केतु अशुभ है. गोवंश के लिए मन बहुत ही कठोर होता हे. गोवंश का अपराध करता है. गोवंश के मारने पर घायल हो सकता है. केतु के धातक प्रभाव को रोकने के लिए मानव को अग्निहोत्र अवश्य ही करना चाहिए.

केतु बहुत अधिक संघ-र्ा करवाता है. यात्रा प्रवास आदि बहुत सारे कर्म अधिक करवाता है एवं वाहन से परेशानी रहती है. पिता से सहयोग कम तथा नुकसान अधिक देता है.

वर्तमान समय में गोवंश को गोग्रास नहीं खिला पाने के बदले में धन के रुप में भी गोग्रास की रकम गोशाला में जमा करवानी अनिवार्य है.

11 वे भाव में केतु शुभ है. पूर्व जन्म के अच्छे कार्य तथा संचित संस्कार जीवन में उन्नति करने के अवसर देता हे. अनायास धन मिलता है. गोवंश का दान करता है तथा भगवान कृ-ण का विशे-ा प्यार मिलता है.

व्यक्ति को सभी प्रकार के मान एवं सम्मान यश किर्ती देकर नैतिक कार्यो को कर अपनी मनवांछित पूर्ति करने के कारण ही बहुत ही आनन्द देता है. रहस्यमयी व्यक्तित्व विनोदी प्रकति मित्रों से दगा देता है.

12 वा केतु शुभ है. गोवंश की सेवा करने के कारण महाकाल का आशीवाद प्राप्त करता है. गोवंश के दान करने के कारण ब्राहमणों से आर्शीवाद मिलता है.

सरकार से गोवंश के लिए अपार धन मिलता है. संगठित स्तर पर हर कार्य में बहुत अच्छी सफलता मिलती है. केतु व्यक्ति को उदार एवं त्यागी बनाता है. गोवंश के लिए उदारता के साथ में धन खर्च करता है. गोवंश की रक्षा करने के लिए सदैव तत्पर रहता हे.

पैरों एवं नेत्र की पीडा रहती है. गैर कानूनी एवं बहुत ही गंदे तरीके से धन कमाता है. धन का उपयोग भी अपने शत्रुओ पर हावी होने के विचार से

करता है. केतु व्यक्ति को पूरी तरह से धूनी बनाता है. घूमने फिरने का शौकिन बनाता है. केतु व्यक्ति को हमेशा ही मुक्ति देता है.

बुध के साथ में केतु रहने पर मानव कम सांसारिक बुद्धि के कारण ही अविचारी उडाउ तथा दूसरों पर आश्रित रहता है. बुध के साथ में केतु यदि पांचवे स्थान पर है तो पुत्र का अभाव बना रहता है. शिक्षा में भी बाधा आती है. धन की कमी के कारण ही जीवन साथी के साथ में अनबन रहती है. पारिवारिक जीवन बहुत ही अधिक परेशानियों से भरा होता है. संसार में ऐसे व्यक्ति को अपने कर्मों के कारण सदैव ही बहुत ही परेशानियां बनी रहती हैं.

गोवंश की मन से निरन्तर सेवा करने पर परिवर्तन निश्चित है. गो दुग्ध से कम बुद्धि तीव्र होती है. अविचारी मानव सोचने के साथ में अच्छा करने तत्पर होता है.

मीन राशि में केतु स्वग्रही होता है. गुरु के साथ में केतु आध्यात्मिकता देता है.

मिथुन राशि में केतु नीच का होता है. मानव का सत्यानाश करता है. वर्तमान समय में भारत में केतु के गलत प्रभाव को रोकने के लिये केतु संबंधी रत्नों को धारण करना, पूजा, दान, व्रत, जप आदि बहुत सारे उपायों को करने की परम्परा है.

केतु के मित्र ग्रह शुक्र एवं शनि हैं. शनि के साथ में केतु सत्य के अनुसंधान करने वैराग्य की ओर मोडता है. साधु बनकर अनैतिकता के साथ में रहता है. त्याग के कारण संसार से दूर होता है. 5 किलो जव गोवंश को खिलाकर उसके गोबर में से 1 किलो जव चुनकर रोटी बनाकर खाने पर 1 साल के अंदर मन में परिवर्तन होता है.

शुक्र के साथ केतु वीर्य की कमी के कारण कम संतान नपुंसकता वैरागी साधुत्व अपनाता है. वृ-ाभ यानी सांड की सेवा करने पर 1 साल में परिवर्तन देखने मिलता है.

गोवंश के पेट में जैसे जैसे गोग्रास जाता है वैसे वैसे मानव के मन में अपार सुख उत्पन्न होता है. मानव को केतु के गलत प्रभाव को पूरी तरह से समाप्त करने के लिये गोसेवा के पवित्र एवं महान कार्य में जुडना अनिवार्य है.

केतु केंद्र तथा त्रिकोण में अच्छा परिणाम देता है. धनु राशि में केतु उच्च का होता है. मानव को केतु बहुत ही अधिक मदद करता है. केतु मानव के लिए हितकारी है. केतु के कारण यश के शिखर पर मानव पहुंच जाता है.

मंगल केतु का शत्रु ग्रह है. साहस में कमी गुस्सा केंसर रोग त्वचा रोग रक्त रोग देता है. गोवंश के साथ में छेड़छाड या बासी अथवा झूठा खिलाने के कारण परेशानी उत्पन्न होती है.

केतु के गलत प्रभाव को रोकने के लिए गोमाता के घी का उपयोग अपने दैनिक जीवन में अवश्य ही करना चाहिए तथा अग्निहोत्र का प्रभाव 6 माह में दिखाई देने लगता है.

दान करने पर व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती हे इसलिए गो का दान ब्राहमण को अवश्य ही करना चाहिए.

सूर्य के साथ में केतु पिता से परेशानी पिता का सहयोग न प्राप्त होना पिता का ऋण चुकाना पिता के माध्यम से अचानक मदद प्राप्त करना है. इन कठिन परिस्थितियों में 1 साल तक नियम के साथ में अग्निहोत्र या हवन करने से भी केतु का प्रभाव कम होता है.

केतु का चंद्र के साथ में ग्रहणयोग बनता है. गोवंश के भयंकर अपराध करने के कारण गोवंश के श्राप के कारण मां के साथ वैचारिक मतभेद होता है. गोवंश का दान कर प्रायश्चित संभव है. सूर्य एवं चंद्र अधिशत्रु ग्रह हैं. अग्निहोत्र नियमित करने पर बहुत ही परिवर्तन देखने मिलता है.